Rahul's ✔
Topper's Voice

AS PER CBCS SYLLABUS

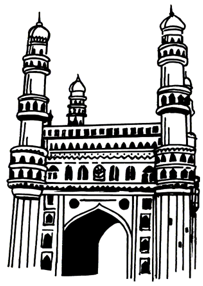

LATEST EDITION 2022

B.A, B.Sc, B.Com, B.B.A, B.S.W

हिंदी

II Year III Sem

- **Study Manual**
- **Solved Previous Question Papers**
- **Solved Model Papers**

Price `.119-00

- by -
Dr. Shivhar Biradar

Rahul Publications™
Hyderabad. Ph : 66550071, 9391018098

All disputes are subjects to Hyderabad Jurisdiction only

B.A, B.Sc, B.Com, B.B.A, B.S.W

हिंदी

II Year III Sem

Inspite of many efforts taken to present this book without errors, some errors might have crept in. Therefore we do not take any legal responsibility for such errors and omissions. However, if they are brought to our notice, they will be corrected in the next edition.

© *No part of this publications should be reporduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording and/or otherwise without the prior written permission of the publisher*

Price ` 119-00

Sole Distributors : ☎ : **66550071, Cell : 9391018098**

VASU BOOK CENTRE

Shop No. 3, Beside Gokul Chat, Koti, Hyderabad.

Maternity Hospital Opp. Lane, Narayan Naik Complex, Koti, Hyderabad.
Near Andhra Bank, Subway, Sultan Bazar, Koti, Hyderabad -195.

विषय सूची

क्र.स.	विषय			पृष्ठ
	Unit-I - काव्य निधि			
1.	कबीर के दोहे	-	**कबीरदास**	**1 - 9**
2.	तुलसीदास के दोहे	-	**तुलसीदास**	**10 - 17**
3.	नवयुवकों से	-	**मैथिलीशरण गुप्त**	**18 - 23**
4.	फूल और काँटा	-	**अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'**	**24 - 31**
5.	भारत	-	**जयशंकर प्रसाद**	**32 - 37**
6.	मेरा नया बचपन	-	**सुभद्रा कुमारी चौहान**	**38 - 47**
	Unit-II - हिन्दी साहित्य का इतिहास			
1.	आदिकाल - परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ			**48 - 62**
2.	भक्तिकाल - परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ			**63 - 109**
	रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय			**110 - 118**
	Unit-III - सामान्य निबन्ध			
1.	साहित्य और समाज			**119 - 120**
2.	विद्यार्थी और राजनीति			**121 - 122**
3.	विज्ञान वरदान है या अभिशाप			**123 - 123**
4.	आधुनिक शिक्षा और नारी			**124 - 125**
5.	शिक्षा पर भूमंडलीकरण का प्रभाव			**126 - 127**
6.	जीवन में स्वच्छता का महत्व			**128 - 128**
	अनुवाद			**129 - 138**

प्रश्न पत्र

- December - 2017 139 - 141
- November/December - 2018 142 - 145
- June/July - 2019 146 - 150
- November/December - 2019 151 - 153

नमूना प्रश्न पत्र

- नमूना प्रश्न पत्र - 1 154 - 156
- नमूना प्रश्न पत्र - 2 157 - 159
- नमूना प्रश्न पत्र - 3 160 - 162
- July - 2021 163 - 164

Unit - I: काव्य निधि

1. कबीर के दोहे

कवि परिचय -

कबीर हिंदी साहित्य के महान कवि माने जाते हैं। कबीर के जन्म के संबंध में अनेक मतभेद हैं। कुछ लोगों के अनुसार वे रामानन्द स्वामी के आशीर्वाद से काशी की एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे, जिसको भूल से रामानंद जी ने पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया था। ब्राह्मणी उस नवजात शिशु को लहरतारा तालाब के पास फेंक आयी थी। कुछ लोगों के अनुसार इनका जन्म सन् **1398** ई. में काशी में हुआ था।

कबीर के माता-पिता के विषय में एक राय निश्चित नहीं है कि कबीर ''नीमा और ''नीरु की वास्तविक संतान थे या नीमा और नीरु ने केवल इनका पालन-पोषण ही किया था। कहा जाता है कि नीरु जुलाहे को यह बच्चा लहरतारा तालाब पर पड़ा हुआ मिला, जिसे वह अपने घर ले आया और उसका पालन-पोषण किया। बाद में यही बालक कबीर कहलाया।

युवावस्था में स्वामी रामानन्द के प्रभाव से उन्हें हिंदू धर्म का ज्ञान हुआ। एक दिन कबीर गंगा घाट की सीढ़ियों पर गिर पड़े थे, रामानन्द जी उसी समय गंगा स्नान करने के लिए सीढ़ियाँ उतर रहे थे कि उनका पैर कबीर के शरीर पर पड़ गया। उनके मुख से तत्काल 'राम-राम' शब्द निकल पड़ा। उसी राम को कबीर ने दीक्षा-मन्त्र मान लिया और रामानन्द जी को अपना गुरु स्वीकार कर लिया। कबीर के ही शब्दों में 'हम कासी में प्रकट भये हैं, रामानन्द चेताये। कबीर ने हिंदू-मुसलमान का भेद मिटा कर हिंदू-भक्तों तथा मुसलमाना फकीरों का सत्संग किया और दोनों की अच्छी बातों को आत्मसात कर लिया। जनश्रति के अनुसार कबीर के पुत्र कमाल तथा पुत्री कमाली थे। इतने लोगों की परवरिश करने के लिए उन्हें अपने करघे पर काफी काम करना पड़ता था। साधु संतों का तो घर में जमावड़ा रहता ही था।

उन्होंने स्वयं ग्रंथ नहीं लिखे, मुख द्वारा बोले शब्दों को उनके शिष्यों ने लिख लिया। आप के समस्त विचारों में रामनाम की महिमा प्रतिध्वनित होती है। वे एक ही ईश्वर को मानते थे और कर्मकाण्ड के घोर विरोधी थे। अवतार, मूर्तिपूजा, रोज़ा, ईद, मसजिद, मंदिर आदि को वे नहीं मानते थे।

कबीर के नाम से मिले ग्रन्थों की संख्या-भिन्न -भिन्न लेखों के अनुसार भिन्न-भिन्न है। एच.एच. विल्सन के अनुसार कबीर के नाम पर आठ ग्रंथ हैं।

कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके तीन भाग है - रमैनी, सबद और साखी। यह पंजाबी, राजस्थानी, खड़ी बोली, अरबी, फारसी मराठी, ब्रजभाषा आदि कई भाषाओं के शब्दों का सम्मिश्रण हुआ है। उनकी काव्य भाषा को विद्वानों ने सधुक्कड़ी भाषा कहा है।

उनके समय में हिंदु जनता पर मुस्लिम आतंक का कहर छाया हुआ था। कबीर ने अपने पंथ को इस ढंग से सुनियोजित किया जिससे मुस्लिम मत की ओर झुकी हुई जनता सहज ही इनकी अनुयायी हो गयी। उन्होंने अपनी भाषा सरल और सुबोध रखी ताकि वह आम आदमी तक पहुँच सके। इससे सम्प्रदायों के परस्पर मिलन में सुविधा हुई। इनके पंथ मुसलमान-संस्कृति और गोभक्षण के विरोधी थे।

कबीर को शांतिमय जीवन प्रिय था और वे अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे। अपनी सरलता, साधु स्वभाव तथा संत प्रवृत्ति के कारण आज विदेशों में भी उनके गुणों का आदर हो रहा है।

कबीर का पूरा जीवन काशी में ही गुजरा, लेकिन बाद में न चाहते हुए भी उन्हें समय मगहर जाना पड़ा । कबीर मगहर जाकर दुःखी थे। अपने यात्रा क्रम में ही वे कालिंजर जिले के पिथौराबाद शहर में पहुँचे। वहाँ रामकृष्ण का छोटा सा मन्दिर था। वहाँ के संत भगवान गोस्वामी जिज्ञासु साधक थे। किंतु उनके तर्कों का अभी तक पूरी तरह समाधान नहीं हुआ था। संत कबीर से उनका विचार-विनिमय हुआ। कबीर ने समाज में फैले झूठे आडंबरों तथा अवतारवाद का खण्डन करते हुए ईश्वर के नाम स्मरण को महत्व दिया है।

मगहर में सन् 1518 ई.में 120 वर्ष की आयु में इनका देहांत हो गया। कबीरदास जी का व्यक्तित्व संत कवियों में अद्वित्य है। हिन्दी साहित्य के 1200 वर्षो के इतिहास में इनके जैसे व्यक्तित्व वाला कोई भी व्यक्ति इस धरती पर पैदा नहीं हुआ है। वे उच्चकोटि के साधक थे। आज के युग में उनके उपदेश, उनकी वाणी समस्त जनसाधक के लिए संजीवनी सिद्ध हुई है। उनका एक दोहा जो आज भी हमारे लिए प्रासंगिक है-

कबीरा खड़े बाजार में , माँगे सबकी खैर।
ना काहू से दोस्ती , ना काहू से बैर।।

भावार्थ सहित दोहे

1. **राम नाम के पटंतरैं, देबे कौ कछु नाहिं।**
   क्या लै गुर संतोखिए, हौंस रही मन माहिं।।

   शब्दार्थः- पंटतरै = बराबर, तुलना, देबे= दूसरा, कौ = कोई, कुछ = कुछ, नहीं = नहीं , लै = ले, गुर = गुरु, संतोशिए = संतोष, प्रसन्नता, हाँस = इच्छा

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है यह दोहा प्रसिद्ध कवि कबीरदास द्वारा रचित है। इसमें कवि राम नाम की तुलना के बारे में बता रहे हैं।

भावार्थः- कवि कहते हैं कि राम नाम की तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती। राम नाम के बराबर इस संसार में कोई दूसरी चीज़ ही नहीं हो सकती। गुरु के द्वारा ही हम भगवान तक पहुँच सकते हैं। अर्थात् गुरु ही हमें ईश्वर तक पहुँचाने का मार्ग दिखा सकते हैं। अगर हमें गुरु नहीं मिले तो परमात्मा से मिलने की इच्छा हमारे मन में ही रह जायेगी।

2. **गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ि काढै खोट।**
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहैं चोट।।

शब्दार्थः- शिष = शिष्य, कुंभ = मिट्टी का घड़ा, गढ़ि - गढ़ि = गढ़ -गढ़ कर

काढ़ै = निकलना, खोट = बुराई, अन्तर = अन्दर, सहार = सहारा, बहै = मारना

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है यह दोहा प्रसिद्ध कवि कबीरदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि ने कुम्हार और घड़े का उदाहरण देते हुए, गुरू और शिष्य के संबंधों के बारे में बताया है।

भावार्थः- संसारी जीवों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हुए शिरोमणि कबीरदास जी कहते हैं- गुरू कुम्हार है और शिष्य मिट्टी के कच्चे घड़े के समान है। जिस तरह कुम्हार घड़े को सुंदर बनाने के लिए अंदर हाथ डालकर बाहर से थाप मारता है ठीक उसी तरह शिष्य को कठोर अनुशासन में रखकर अंदर से प्रेम भावना रखते हुए शिष्य की बुराईयों को दूर करके संसार में सम्मान योग्य बनाता है।

3. **मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारम्बार।**
तरवर थैफल झड़ि पड़्या, बहुरि न लागै डार।।

शब्दार्थः- मनिषा = मनुष्य, दुर्लभ = कठिन, देह = शरीर, बारम्बार = दोवारा, तरवर = पेड़, झडि = झड़ना, पड़ना = गिराना, बहुरि = बहुत, लागै = लगना, डार = डाली

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है यह दोहा प्रसिद्ध कवि कबीरदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि मनुष्य के जन्म के बारे में बता रहे हैं कि इसी जन्म में राम नाम जप ले क्यों कि यह मनुष्य जन्म दोवारा नहीं मिलेगा।

भावार्थः- इस संसार में मनुष्य जन्म बड़ी मुश्किल से मिलता है। यह शरीर मनुष्य को दोवारा नहीं मिलता है। जिस प्रकार वृक्ष से फल झड़ जाए तो उसे दोवारा डाल पर नहीं लगाया जा सकता ठीक उसी प्रकार मनुष्य की मृत्यु हो जाने पर उसे फिर से जीवित नहीं किया जा सकता। अर्थात मनुष्य को इसी जन्म में रहकर अच्छे कर्म कर लेने चाहिए।

4. **हेरत हेरत हे सखी, रहा कबीर हिराइ।**
बूँद समांनी समुंद म, सो कत हेरी जाइ।।

शब्दार्थः- हेरत - हेरत = ढूँढकर, सखी = सहेली, हिराइ = हार जाना, समांनी = समा जाना, समुंद =समुद्र, कत = कैसे, हेरी = अलग

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है यह दोहा प्रसिद्ध कवि कबीरदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि कहते हैं कि ईश्वर के प्रति ऐसी लगन होनी चाहिए जैसे समुद्र में बूँद मिल जाने के बाद उसे फिर अलग नहीं किया जा सकता है।

भावार्थः- कबीर जी कहते हैं कि मैं स्वयं भगवान में खो चुका हूँ और समुद्र ने बूँद को आत्मसात कर लिया। अब उस बूँद को समुद्र से अलग कैसे किया जा सकता है। अर्थात ईश्वर में लग्न लगने के बाद उनसे अलग नहीं हो सकते।

5. **काल करे सो आज कर, आज करे सो अब**
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।

शब्दार्थः- काल = कल, करे = करना, पल = क्षण, प्रलय = भूंचाल आना, बहुरि =बचा हुआ, बहुत

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है यह दोहा प्रसिद्ध कवि कबीरदास द्वारा रचित है। कबीर ने कल का काम आज ही करने की सलाह दी है।

भावार्थः- कबीर जी कहते हैं कल करने वाला काम आज ही कल लेना चाहिए। अर्थात् हमें कोई भी काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। क्यों कि क्षण में कब क्या हो जाये कोई बता नहीं सकता। तो फिर तू बचा हुआ काम कब करेगा। अर्थात् अगले पल का कोई भरोसा नहीं। इसलिए आज का काम आज ही कर लेना चाहिए।

6. **सुख के संगी स्वारथी, दुख में रहते दूर।**

कहैं कबीर परमारथी, दुख सुख सदा हजुर।।

शब्दार्थः- संगी = मित्र, स्वारथी = स्वार्थी, परमारथी = हितकारी, हजूर = मेहरवाना

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है यह दोहा प्रसिद्ध कवि कबीरदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि ने सच्चे और झूठे मित्र के बीच का भेद बताया है।

भावार्थः- कबीर जी कहते हैं जो लोग सुख में साथ रहते हैं और दुःख में भाग जाते हैं, वे लोग स्वार्थी होते हैं। कबीर जी कहते हैं वही लोग हमारे हितैषी या परममित्र होते हैं जो सुख दुःख दोनों में हमारा साथ निभाते हैं। अर्थात् सुख में साथ देने वाले मित्र झूठे तथा फरेवी होते हैं। ऐसे मित्रों से हमें बचकर रहना चाहिए।

7. **सरवर तरवर संत जन, चौथा बरसे मेह।**

परमारथ के कारनें, चारों धारी देह।।

शब्दार्थः- सरवर = सरोवर, तरवर = वृक्ष, संतजन = सज्जन, मेह = मेघ, परमारथ =परोपकार, कारने = कारण, धारी = धारण करना, हेह = शरीर

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है यह दोहा प्रसिद्ध कवि कबीरदास द्वारा रचित है। इस दोहे मे कवि ने परोपकार की बात की है।

भावार्थः- सरोवर,पेड़, संतजन और चौथा मेघ का बरसना ये चारों परोपकार के लिए ही पैदा हुए हैं। अर्थात दूसरों की भलाई के लिए ही पैदा हुए हैं। इनकी परोपकारिता किसी की भी बराबरी नहीं कर सकती अर्थात् इन चारों ने दूसरों की भलाई करने के लिए ही जन्म लिया है।

8. **दुनिया कैसी बावरी, पाथर पूजन जाय।**

घर की चाकी कोई न पूजे, जेहि का पीसा खाय।।

शब्दार्थः- बावरी = पागल, पाथर = पत्थर, चाकी = चक्की, जेहि = जिसका, पूजे = पूजा करना खाय = खाए

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है यह दोहा प्रसिद्ध कवि कबीरदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि ने भगवान के स्थान के बारे में बताने का प्रयत्न किया है।

भावार्थः- कबीर जी कहते हैं कि यह दुनिया कितनी पागल है, पत्थरों की पूजा करती है। अर्थात् पूजा करने के लिए पत्थर को भगवान मानती है। घर की चक्की को कोई नहीं पूजता जिसका पीसा हुआ अनाज खाते हैं। अर्थात् लोग भगवान के दर्शन के लिए मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारे, चर्च जाते हैं। लेकिन अपने मन में कोई नहीं झांकता जहाँ भगवान विराजमान हैं।

9. जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस, फुनि रसना नहीं राम।
ते नर इस संसार में, उपजि षये बेकाम।।

शब्दार्थः- जिहि = जिस, घटि = मुख, प्रीति = प्यार, प्रेम = स्नेह, फुनि रसना = राम का जाप, नर = मनुष्य, उपजि = पैदा, षये = गये, बेकाम = बेकार

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है यह दोहा प्रसिद्ध कवि कबीरदास द्वारा रचित है । कबीर जी ने बताया जो मनुष्य राम का नाम नहीं लेते हैं। उनका जीवन बेकार होता है।

भावार्थः- कबीर जी कहते हैं कि जिस मुख में प्यार और प्रेम दोनों नहीं हैं। उस हृदय में राम का निवास नहीं हो सकता। वे मनुष्य इस संसार में निरर्थक ही पैदा हुए हैं। अर्थात् जो मनुष्य राम का नाम नहीं जपता उसका जन्म लेना ही बेकार है।

10. सीलवंत सबसों बड़ा, सब रत्नों की खान।
तीन लोक की संपदा, रही सील में आन।।

शब्दार्थः- सीलवंत = शांत, शीतलता, रत्न = हीरा संपदा = संपत्ति, सील = शीतलता

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है यह दोहा प्रसिद्ध कवि कबीरदास द्वारा रचित है। कवीर जी कहते हैं कि मनुष्य में सयंम और शीतलता होनी चाहिए।

भावार्थः- मानव जीवन में शांत और शीतलता सबसे बड़ा गुण होना चाहिए। क्यों कि यही सब रत्नों का खजाना है। अर्थात यह दुनिया के रत्नों से सबसे महंगा रत्न है। जिस मुष्य के जीवन में शीतलता और प्रेम है उसके पास तीनों लोकों की संपत्ति है।

कविता का सारांशः-

कबीर जी ने अपनी बाणी में मनुष्य जीवन के कुछ पहलुओं को उजागर करने का प्रयत्न किया है। उनके अनुसार राम नाम के बिना हमारा जीवन अधूरा है। क्यों कि भगवान प्राप्ति किसी गुरु के बिना नहीं हो सकती। हमारा जीवन एक घड़े के समान है। जिसे कुम्हारा रौंधकर एक अच्छा रूप देता है। उसी प्रकार गुरु भी हमें परमात्मा मिलन का मार्ग दर्शन करवाता है। मनुष्य जीवन कई जन्मों के बाद प्राप्त होता है। हमें इसे बेकार में गंवाना नहीं चाहिए। यह जीवन उस पानी की बूँद जैसा है जो एक बार समुद्र में मिल जाने के बाद व्यर्थ हो जाता है। हम इस जन्म को फिर से प्राप्त नहीं कर सकते। मनुष्य जीवन में रहते हुए हमें समय का ध्यान रखते हुए आज का काम आज ही समाप्त कर लेना चाहिए। कबीर जी ने कहा है कि हमें स्वार्थी मित्रों पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए। क्यों कि वे केवल सुख में ही हमारा साथ दे सकते हैं दुःख में नहीं। सरोवर, पेड़, सज्ञन पुरुष ही हमारे लिए हितकारी हैं। कबीर जी ने कहा है कि दुनिया कितनी पागल है। जो बाहर मंदिर , मसजिद , गरूद्वारे , चर्च में पूजा करने जाते हैं, लेकिन अपने अन्दर आत्मा को कोई भी साफ नहीं करता है। क्यों कि जिस मुख में राम नाम नहीं वह मनुष्य बेकार में ही संसार में पैदा हुआ है। जिस प्रकार शीतलता सभी मोतियों की खान और तीनों लोकों की संपत्ति है। उसी प्रकार मनुष्य जीवन भी शीतलता और प्रसन्नता से भरा होना चाहिए।

विशेषताः-

मनुष्य की एक बार मृत्यु हो जाने से पर दोवारा जीवन प्राप्त नहीं कर सकता। इस लिए मानव को अपने जीवन को सार्थक बना लेना चाहिए।

दीर्घ प्रश्नः-

1. **कबीरदास का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।**

उ. **जीवन-परिचय -** सन्त कबीरदास का जन्म सन् 1398 ई. के लगभग काशी के लहरतारा के पास माना जाता है। जुलाहा जाति के नीरु और नीमा दम्पति ने इनका लालन-पालन किया। बड़े होने पर कबीर ने भी जुलाहे के धन्धे को स्वीकार किया। बचपन से ही कबीर का मन भक्ति की ओर झुका हुआ था। बड़े होने पर आपने रामानन्द को अपना गुरु बनाया। कबीर ने विवाह भी किया। इनकी पत्नी का नाम लोई, पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। कबीर की मृत्यु सन् 1518 ई.में मगहर में हुई।

रचनाएँ - कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। उन्होंने स्वयं ही कहा है ---मसि कागद तो छुओ नहिं,कलम गह्यो नहिं हाथ। उनके शिष्यों ने उनकी रचनाओं का संकलन किया। कबीर की रचनाएँ,'बीजक' में संगृहित हैं। 'बीजक' के तीन भाग हैं -- साखी, सबद रमैनी।

भाषा-शैली - कबीर सन्त थे। स्थान-स्थान घूमकर वे सन्तों के सम्पर्क में आए, और भाषाओं का परिचय प्राप्त किया। इसी से इनकी भाषा में अवधि, ब्रजभाषा, खड़ीबोली, फारसी, अरबी, गुजराती, राजस्थानी, बंगाली आदि भाषाओं के शब्द पाए जाते हैं। भाषा पर कबीर का अधिकार है। उनकी शैली में सरलता है।

विचारधारा - कबीर,समाज-सुधारक थे, ये राम-रहीम को एक मानते थे। इनके काव्य में पाखंड, अन्धविश्वास, छूआछूत, ऊँच-नीच, कुरीतियाँ आदि सामाजिक बुराइयों का खंडन किया गया है। भक्ति के नाम पर ढोंग और दिखावों की निन्दा की गई है। ईश्वर-प्रेम, गुरु-महिमा वेदान्त, जीवमात्र के प्रति दया और प्रेम की भावनाएँ उनके काव्य के प्रमुख विषय हैं।

2. मनुष्य जन्म दुर्लभ है, देह ना बारम्बार। इन पंक्तियों से कवि का क्या आशय है?

उ. कवि के अनुसार मनुष्य जीवन बहुत ही पुण्य कर्मों और तपस्याओं से प्राप्त होता है। भगवान ने हमें यह जीवन दूसरों का कल्याण और भलाई करने के लिए दिया है। हमें दूसरों के प्रति हितकारी बनना चाहिए। हमेशा दूसरों की भलाई के बारे में ही सोचना चाहिए। क्यों कि अगर यह देह या शरीर नष्ट हो गया तो हमें दोबारा प्राप्त नहीं होगा। अतः हमें इस जीवन को निरर्थक नहीं जाने देना चाहिए, क्यों कि यह जीवन बहुत ही कठिनाईयों के बाद मिलता है।

3. कबीर ने स्वार्थी लोगों के बारे में क्या कहा है?

उ. कबीर ने स्वार्थी लोगों के बारे में कहा है कि ऐसे लोग सिरफसुख में ही साथ देते हैं और ऐसे लोग हमारी धन, संपत्ति के लालची होते हैं। जैसे ही हमारे ऊपर कोई आपदा या दुःख आता है तब यह लोग हमारा साथ छोड़कर भाग जाते हैं। इसलिए हमें स्वार्थी लोगों से हमेशा दूर रहना चाहिए। जो लोग धन संपत्ति के लालच में हमारा साथ देते हैं ऐसे लोगों से हमें बचकर रहना चाहिए। अर्थात हमें झूठे लोगों से हमेशा दूरी बनाए रखनी चाहिए।

4. कवि ने गुरु और कुम्हार का उदाहरण किस उदेश्य से दिया है?

उ. गुरु और कुम्हार दोनों ही एक सिक्के के पहलू हैं। जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी को रौंधता है। फिर उसे अन्दर से गढ कर अर्थात सहारा देकर एक आकार देता है और आग में तपाकर एक पक्का घड़ा बना देता है। उसी प्रकार एक सच्चा गुरु अपने शिष्य का हाथ और साथ कभी नहीं छोड़ता है। वह कुम्हार के समान ही उसे निखारता है और उसका हाथ पकड़ कर परमात्मा मिलन का रास्ता बताता है।

लघु प्रश्नः-

1. कबीरदास का जन्म कहाँ हुआ?

उ. कबीरदास का जन्म काशी में हुआ।

2. इनके माता-पिता क्म नाम क्या था?

उ. इनके माता-पिता क्म नाम नीरु तथा नीमा था।

3. रचना शैली की दृष्टि से इनकी वाणी कितने भागों में विभाजित है?

उ. रचना शैली की दृष्टि से इनकी वाणी तीन भागों में विभाजित है।

4. कबीर ने दुनिया को क्या कहा है?

उ. कबीर ने दुनिया को पागल कहा है?

5. आज का काम आज ही क्यों करना चाहिए?

उ. आज का काम आज ही कर लेना चाहिए। क्यों कि कल का कोई भरोसा नहीं कि कल हम रहे या न रहें।

6. कबीरदास की रचनाएँ लिखिए।

उ. साखी , सबद, रमैनी

7. कबीरदास ने किस चीज का खंडन किया?

उ. अवतार, मूर्तिपूजा, रोज़ा, ईद, मसजिद, मंदिर आदि को वे नहीं मानते थे। इसलिए इन सबका कबीरदास ने खंडन किया।

2. तुलसीदास के दोहे

कवि परिचय-

श्री रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में स्थित राजापुर नामक ग्राम में सरयू पारीण ब्राह्मण परिवार में संवत् **1554** की श्रवण शुक्ल सप्तमी के दिन हुआ था। तुलसी की पूजा के फलस्वरुप इनका नाम तुलसीदास रखा गया। गोस्वामी तुलसीदास जी को महर्षि वाल्मीकि का अवतार माना जाता है। उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी देवी था। ऐसा कहा जाता है कि जन्म लेते ही इनके मुख से रुदन के स्थान पर 'राम' शब्द का उच्चारण हुआ था। इनके जन्म लेते ही इनकी माता इस संसार से चल बसीं। दासी ने जिसका नाम चुनियाँ था बालक का पालन-पोषण बड़े प्यार से किया। साढ़े पाँच वर्ष की उम्र की में दासी चुनियाँ की भी मृत्यु हो गई और बालक अनाथ हो गया। कुछ समय बाद उनके पिता का भी देहांत हो गया।

उनका परिवार नष्ट हो चुका था। उन्होने अपने पिता तथा पूर्वजों का विधिपूर्वक श्राद्ध किया और गंगा घाट पर ही रह कर लोगों को रामकथा सुनाने लगे। संवत् **1583**.में रत्नावली नामक एक सुंदरी एव विदुषी कन्या से उनका विवाह हो गया। रामबोला को अपनी पत्नी से अत्यंत प्रेम था। एक बार जब रत्नावली को उसका भाई मायके ले गया तो वे वियोग न सह पाये और पीछे - पीछे अपने ससुराल तक चले गये।

इससे उनकी पत्नी को बहुत शर्म महसूस हूई। पर उसने लोक-लज्जा के भय से जब उन्हें चुपचाप वापस जाने को कहा तो वे उससे उसी समय पर चलने का आग्रह करने लगे। उनकी इस अप्रत्याशित जिद से खीझकर रत्नावली ने एक दोहे के माध्यम से जो शिक्षा उन्हें दी उसने ही तुलसीराम को महान तुलसीदास बना दिया। उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं-

तुलसीदास की मुख्य रचनाएँ

रामचरितमानस, रामललानहछु, वैराग्य-संदीपनी, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल, जानकी-मंगल, रामाज्ञाप्रश्न, दोहावली, कवितावली, गीतावली, श्रीकृष्ण-गीतावली, विनय-पत्रिका, सतसई,छंदावली रामायण, कुंडलिया रामायण, राम शलाका, संकट मोचन,करखा रामायण, रोला रामायण, झूलना, छप्पा रामायण, कवित्त रामायण, कलिधर्माधर्म निरुपण, हनुमान चालीसा।

उन्होंने अपना महाकाव्य 'रामचरित मानस' लिखा और 'संत तुलसीदास' के नाम से प्रसिद्धि पाई। संवत् **1631** के रामनवमी के दिन से उन्होंने 'रामचरित मानस' लिखना आरंभ करके **2** वर्ष **7** माह **26** दिन पश्चात संवत **1633** के मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में रामविवाह के दिन उसे पूर्ण किया। 'रामचरित मानस' एक अमर ग्रंथ है जिसे हर हिंदू बड़े चाव से रखता और पढ़ता है।

संवत् **1680** श्रवण शुक्ल सप्तमी, शनिवार को अस्सी घाट पर 'राम-राम' कहते हुए अपना नश्वर शरीर का परित्याग किया।

भावार्थ सहित दोहे

1. **राम नाम मनिदीप धरू, जीह देहरीं द्वार ।**

   तुलसी भीतर बाहेरहुँ, जौं चाहसि उजियार ।।

   शब्दार्थः- धरु = धारण करना, जीह = जीभ, देहरी = चौखट, भीतर = अन्दर, बहेर = बाहर, चाहीस = चारों ओर, उजियार = उजाला

   प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि तुलसीदास द्वारा रचित है। तुलसीदास ने जी मन में राम नाम जपने के लिए कहा है।

   भावार्थः- तुलसीदास जी कहते है कि हे मनुष्य तुम मन के भीतर और बाहर दोनों तरफ उजाला चाहते हो तो मुखरूपी द्वार की जीभरूपी दहलीज पर राम-नामरूपी मणिदीप को रखो। अर्थात अगर हमें भगवान को प्राप्त करना है तो हमें मन में भी और जीभ द्वारा भी राम के नाम का जाप करना चाहिए। तभी हमें भगवान की प्राप्ति होगी।

2. **सूधे मन सूधे वचन, सूधी सब करतूति।**

   तुलसी सूधि सकल बिधि, रघुबर प्रेम प्रसूति।।

   शब्दार्थः- सूधे = सीधे, बचन = बाणी, करतूति = कार्य, सकल = पूर्ण, बिधि = कार्य, ढंग, तरीका, प्रसूति = दूसरों के वश में रहना, प्रेम बरसाना

   प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि तुलसीदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि ने मनुष्य के कर्म और वाणी पर प्रकाश डाला है।

   भावार्थः- तुलसीदास जी कहते हैं कि जिस मनुष्य का सीधा मन, सीधी बाणी होती है। उस मनुष्य के सब कार्य ठीक ढंग से संपूर्ण हो जाते हैं। जो अपने कार्य सही विधि द्वारा करते हैं। भगवान भी उनके ऊपर प्रेम की वर्षा करते हैं। अर्थात हमें अपना कर्म , शुद्ध मन और सच्ची बाणी से करना चाहिए।

3. एक भरोसो एक बल , एक आस बिस्वास।

एर राम घन स्याम हित , चातक तुलसीदास।।

शब्दार्थः- भरोसो = भरोसा, बल = ताकत, आस = आशा, बिस्वास = विश्वास , भरोसा, घन = बादल, स्याम = श्याम, काला, हित = भला, चातक = एक पक्षी का नाम

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि तुलसीदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि ने हमें भगवान पर भरोसा रखने के लिए कहा है। क्यों कि भगवान ही हमें सीधा मार्ग दिखा सकते हैं।

भावार्थः- तुलसीदास जी कहते हैं कि हमें एक राम नाम पर भरोसा रखना चाहिए। क्यों कि उनके बल या शक्ति द्वारा हम जीवन में आगे बढ़ सकते हैं। तुलसीदास जी कहते है कि जिस प्रकार चातक को उन घने बादलों पर विश्वास होता है कि जब वे बरसेंगे तभी में पानी पीऊंगा। उसी प्रकार हमें भी एक राम नाम का नाम लेकर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

4. मातु पिता गुरू स्वामी , सिख धरि करहिं सुभायँ।

लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर , नतरू जनमु जग जायँ।।

शब्दार्थः- सिख = शिक्षा, धरि = रखना, करहिं = करना, लहेउ = ले सकते, लाभु = लाभ, तिन्ह = तीन, जनमु = मरण

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि तुलसीदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि ने माता-पिता, गुरु और स्वामी की शिक्षा के बारे में बात की है। इनका आशीर्वाद और सीख हमारे लिए वरदान के समान है।

भावार्थः- जो मनुष्य अपने माता - पिता, गुरु और स्वामी की शिक्षा और उनके द्वारा बताए हुए मार्ग को अपने जीवन में धारण कर लेता है। अर्थात उनके वचनों का पालन करता है। उसे इसका लाभ तीनों लोकों तक मिलता है। उसे दोवारा इस संसार में आने की आवश्यकता नहीं है, वह मनुष्य जनम -मरण के बंधन से छूट जाता है।

5. बरषत हरषत लोग सब, करषत लखै न कोइ।

तुलसी प्रजा सुभाग ते, भूप भानु सो होइ।।

शब्दार्थः- बरषत = बरसना, हरषत = खुश रहना, करषत = कलह, कलेश, भूप = राजा, भानु = सूरज, सूर्य

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि तुलसीदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि ने राजा और प्रजा के संबंधों के बारे में बात की है। राजा अगर न्यायप्रिय हो तो प्रजा भी सुख भोगती है।

भावार्थः- तुलसीदास जी कहते हैं कि जहाँ पर लोग खुशी और आनंद से रहते हैं वहाँ कभी भी कलह कलेश नहीं होता है। वहाँ राजा अपनी प्रजा को उसी प्रकार देखता है, जिस प्रकार सूर्य चमककर पूरे संसार को तपिश और रोशनी देता है। अर्थात उस राज्य की प्रजा खुश रहती है, जहाँ का राजा न्यायप्रिय होता है।

6. तुलसी असमय के सखा , धीरज धरम बिबेक ।

साहित साहस सत्यव्रत , राम भरोसो एक ।।

शब्दार्थः- सखा = दोस्त, धीरज = धैर्य, धरम = धर्म, बिबेक = ज्ञान, साहित = ज्ञान, साहस = हिम्मत, सत्यव्रत = सच्चाई की राह पर चलने वाला

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि तुलसीदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि कहते हैं कि हमें अच्छे और बुरे समय में एक जैसा रहना चाहिए। ने राजा और प्रजा के संबंधों के बारे में बात की है। राजा अगर न्यायप्रिय हो तो प्रजा भी सुख भोगती है।

भावार्थः- तुलसीदास जी कहते हैं कि धैर्य, धर्म और ज्ञान हमारे बुरे समय के दोस्त हैं। अर्थात ये सब हमारे बुरे समय में साथ देते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं जिनमें साहित्य, हिम्मत और सच्चाई के मार्ग पर चलने की लग्न और भगवान पर विश्वास हो वही संसार रूपी नैया पार कर सकता है।

7. पर सुख संपति देखि सुनि, जरहिं जे जड़ बिनु आगि ।

तुलसी तिन के भागते, चलै भलाई भागि ।।

शब्दार्थः- संपति = धन, संपत्ति, जरहिं = जलना, बिनु = बिना, तिन = उनके, चलै = चले जाने से

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि तुलसीदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि कहते हैं कि हमें दूसरों की सुख संपत्ति देखकर इर्ष्या नहीं करनी चाहिए।

भावार्थः- दूसरों की संपत्ति देखकर जो मनुष्य इर्ष्या करते हैं, अर्थात जलन करते हैं।वे मनुष्य वैसे ही जल जाते हैं जैसे बिना आग के जड़ जल जाती है। ऐसे लोगों के चले जाने से दूसरे लोगों की भलाई ही होती हैं।अर्थात इर्ष्यालु लोग कभी किसी के बारे में अच्छा नहीं सोच सकते हैं। उनके न रहने से ही अच्छा है।

8. **तुलसी मीठे वचन तें , सुख उपजत चहूँ ओर।**

वशीकरण एक मंत्र है , तज दें वचन कठोर।।

शब्दार्थः- उपजात = पैदा होना, चहुँ = चारों ओर, वशीकरण = वश में करना, तज = छोड़ना,

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि तुलसीदास द्वारा रचित है। इस दोहे में तुलसीदास जी कहते हैं कि हमें हमेशा मीठी वाणी ही बोलनी चाहिए। मीठा वाणी से हम सबको अपने वश में कर सकते हैं।

भावार्थः- तुलसीदास जी कहते हैं कि मीठे वचन सब ओर सुख फैलाते हैं। अर्थात मीठी वाणी सबके मन को शीतलता प्रदान करती है। मीठे वचन किसी को भी वश में करने का मूलमंत्र है। इसलिए मानव को चाहिए कि कठोर वचन छोड़कर मीठा बोलने का प्रयास करे।

9. **नीच निचाई नहिं तजइ, सज्ञनहू के संग ।**

तुलसी चंदन विपट बसि, बिनु विष भए न भुजंग ।।

शब्दार्थः- नीच = बुरा, निचाई = नीचता, बुराई, तजइ = छोड़ना, सज्ञनहू = अच्छे मनुष्य संग = साथ, विपट = वृक्ष, बसि = रहना भुअंग = साँप

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि तुलसीदास द्वारा रचित है। इस दोहे में तुलसीदास जी कहते हैं कि नीच अर्थात ओछे लोग कभी भी अपनी बुराई नहीं छोड़ते हैं। ये लोग चाहे कितने भी सज्ञन पुरूषों के संग रहें मगर अपनी बुराई का चोला हमेशा पहन कर ही चलते हैं।

भावार्थः- तुलसीदास जी कहते है कि, नीच लोग (या) बुरे लोग अच्छे महापुरुषों के साथ रहकर भी अपनी नीचता अर्थात बुराई का त्याग नहीं करते हैं। तुलसीदास जी कहते है, जिस प्रकार साँप चंदन के वृक्ष के साथ लिपटकर भी अपने विष का त्याग नहीं कर सकते हैं। उसी प्रकार बुरे लोग अच्छे लोगों के साथ रहकर भी अपनी बुराई का परित्याग नहीं कर सकते हैं।

10. मो सम दीन न दीन , हित तुम्ह समान रघुबीर।

अस बिचारि रघुबंस मनि , हरहु बिषम भव भीर।।

शब्दार्थः- मो = मेरे, सम = समान, दीन = दुःखी, रघुवीर = श्री राम, अस = ऐसा, विचारि = विचार, रघुबंस = राम का वंश, मनि = मन

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि तुलसीदास द्वारा रचित है। इस दोहे में तुलसीदास जी कहते हैं कि प्रभु इस संसार में मेरे जैसा कोई दीन नहीं है और आपके जैसा कोई दयालु नहीं है। आपको ही मेरे दुखों का संहार करना पड़ेगा।

भावार्थः- हे रघुवीर इस दुनिया में मेरे जैसा कोई दीन-दुखी नहीं है और तुम्हारे जैसा कोई दीनहीनों का भला करे वाला नहीं है। ऐसा विचार करके हे रघुवंश-मेरे जन्म-मुत्यु के भयानक दुःख को दूर कर दीजिए। अर्थात मुझे इस जन्म- मरण के चक्र से मुक्त कीजिए।

कविता का सारांशः-

तुलसीदास जी मनुष्य की बदलती हुई मनोभावना के बारे में विचार कर रहे हैं, कि यदि मनुष्य सच्चाई के रास्ते पर चलता है तो निश्चय ही भगवान उसका साथ देते हैं। भगवान पर भरोसा रखना चाहिए। जो मनुष्य गुरु और माता - पिता के बताए मार्ग पर चलता है या उनकी शिक्षा को धारण करता है। उसे तीनों जन्मों तक लाभ मिलता है और वह जनम-मरण के धन से छूट जाता है। जैसे सूर्य सबको गर्मी और प्रकाश देता है। उसी तरह हितकारी राजा अपनी प्रजा के हितों को देखता है। जीवन रूपी मार्ग में हिम्मत, साहस और धैर्य से काम लेना चाहिए। क्यों कि यह तीन चीजें ही संसार रूपी नैया पार करवा सकती है। तुलसीदास जी कहते हैं लेकिन कुछ बुरे लोग अपने अंदर की बुराई को नहीं छोड़ सकते। जैसे साँप चंदन के वृक्ष के साथ लिपटकर भी अपने विष का परित्याग नहीं कर सकता। भगवान जैसा कोई दूसरा नहीं हैं जो दूसरों का दुःख दूर कर सके। तुलसीदास जी भी कहते हैं कि मुझे भी जनन -मरण के बंधन से मुक्त कर दीजिए।

दीर्घ प्रश्नः-

1. तुलसीदास जी के अनुसार बुरे समय के मित्र कौन-कौन होते हैं?

उ. तुलसीदास जी के अनुसार बुरे समय के मित्र धैर्य, धर्म, और विवेक होते हैं। जब बुरा समय आए तो हमें अपने मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए। बल्कि धैर्य से काम लेना चाहिए। परिस्थितियाँ

हमें कितना भी भटकाने की कोशिश करें फिर भी हमें अपने धर्म को अपने कर्तव्य को नहीं भूलना चाहिए। क्यों कि यह तीनों ही हमें जीवन में आने वाले दुःखों और असफलताओं से निकलने का मार्ग बताते हैं।

2. चारों ओर सुख कैसे फैलता है?

उ. तुलसीदास जी कहते हैं कि मनुष्य को अपनी वाणी से धनी होना चाहिए। क्यों कि उसकी मीठी वाणी ही दूसरे के हृदय में जगह बना सकती है और शीतलता प्रदान कर सकती है। मीठे वचन एक ऐसा अमृत हैं जो बड़े से बड़े शत्रु को भी झुकने पर मजबूर कर देता है। मीठे वचनों द्वारा किसी को भी जीता जा सकता है। मीठे वचन ही दूसरे को वश में करने का एक मूल मंत्र हैं।

3. तुलसीदास ने साँप का उदाहरण देकर किस बात का स्पष्टीकरण किया है?

उ. जिस प्रकार साँप चंदन के वृक्ष के साथ लिपटा रहता है और उसकी खुशबू लेता रहता है, फिर भी वह अपने अंदर के विष (जहर) को नहीं निकालता अर्थात अपने विष का त्याग नहीं करता उसी प्रकार बुरा मनुष्य भी अच्छे लोगों सज्जन पुरुषों के साथ रहकर अपने अंदर की बुराइयों को नहीं छोड़ता। चाहे उसे कितने बड़े महात्मा महापुरुष का संग मिले लेकिन वह अपने अंतरआत्मा की मैल को साफ नहीं कर पाता। वह कहीं न कहीं अपनी नीचता दिखा ही देता है।

4. तुलसीदास जी को साहित्याकाश का सम्राट क्यों कहा जाता है?

उ. तुलसीदास जी का अवधी, संस्कृत, ब्रजभाषा इसके अतिरिक्त और भी कई भाषाओं पर अधिकार था। उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रबंध तथा मुक्तक शैली का प्रयोग किया है। इनकी रचनाएँ दोहा, चौपाई, कक्ति-छप्पय, बरवै, गीत, सोरठ, आदि छंदों से झलकती हैं। रामचरितमानस में उन्होंने अवधी भाषा का प्रयोग किया है। विनय पत्रिका ब्रजभाषा के माधुर्य से ओतप्रोत हैं। उन्होंने अपने काव्य में अधिकतर सार्थक शब्दों का प्रयोग ही किया है। इनके अंदर माधुर्य, ओज तथा प्रसाद रूपी गुण दर्शित होते हैं।

इनके गुणों का वर्णन इन पंक्तियों से किया जाता है।

भक्त था , सुधारक था, कवि था, ज्ञानी था, परहितकारी था।
माता हिन्दी के मंदिर का वह अनन्य पुजारी था।

5. **तुलसीदास ने राजा और सूर्य को एक समान क्यों माना है?**

उ. तुलसीदास जी कहते हैं कि जहाँ पर लोग खुशी और आनंद से रहते हैं वहाँ कभी भी कलह कलेश नहीं होता है। वहाँ राजा अपनी प्रजा को उसी प्रकार देखता है, जिस प्रकार सूर्य चमककर पूरे संसार को तपिश और रोशनी देता है। अर्थात उस राज्य की प्रजा खुश रहती है, जहाँ का राजा न्यायप्रिय होता है।

लघु प्रश्नः-

1. **तुलसीदास जी का जन्म कब और कहाँ हुआ?**

उ. तुलसीदास जी का जन्म सं. **1554** में उत्तरप्रदेश के राजापुर में हुआ था।

2. **तुलसीदास जी के महाकाव्य का नाम लिखिए।**

उ. तुलसीदास जी का महाकाव्य रामचरितमानस है।

3. **तुलसीदास जी के गुरु का नाम क्या था?**

उ. तुलसीदास जी के गुरु का नाम नरहरिदास था।

4. **तुलसीदास जी की मृत्यु कब और कहाँ हुई?**

उ. तुलसीदास जी की मृत्यु संवत् **1680** में गंगा के किनारे असी घाट पर हुई।

5. **तुलसीदास जी के अनुसार मीठे वचन किसका मंत्र हैं?**

उ. तुलसीदास जी के अनुसार मीठे वचन वशीकरण का मंत्र हैं।

6. **तुलसीदास जी ने अपना जीवन किसको समर्पित किया?**

उ. तुलसीदास जी ने अपना पूरा जीवन राम भक्ति के लिए समर्पित किया।

3. नवयुवकों से

कवि परिचय -

मैथिलीशरण गुप्त भारत के प्रसिद्ध और आधुनिक हिन्दी कवियों में से एक हैं। खड़ी बोली की कविताओं को लिखने और खड़ी बोली को उपभाषा मानने वाले वे पहले कवि थे, उन्होंने ये सब उस समय में किया था जिस समय में हिंदी कवि ज्यादातर ब्रज भाषा का उपयोग उपभाषा के रुप में करते थे। इनका जन्म सन् 1886 में झांसी के चिरगाँव ग्राम में एक संपन्न और प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। इनके पिता स्वयं राम भक्त एवं काव्य प्रेमी थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। बाल्यावस्था में उन्हें स्कूल जाना पसंद नहीं था। इसीलिए उनके पिता ने उन्हें घर पर ही पढ़ाने का इंतजाम कर रखा था। घर पर रहकर इन्होंने संस्कृत, इंग्लिश और बंगाली का अभ्यास किया था। उस समय महावीर प्रसाद द्विवेदी उनके विश्वसनीय सलाहकार थे। वे द्विवेदी जी को अपना गुरू मानते थे। सोलह वर्ष की अवस्था में इन्होंने कविता लिखना आरंभ किया। वे गाँधी जी के आदर्शों के अनुगामी थे। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलनों में भी भाग लिया है। इसके साथ ही वे भारत के तीसरे सर्वोच्च आवार्ड पद्म भूषण से भी नवाजे जा चुके हैं।

उनकी किताब भारत-भारती (1912) आज़ादी के स्वतंत्रता संग्राम के समय में काफी प्रभावशाली साबित हुई थी, और इसी वजह से महात्मा गांधी ने उन्हें राष्ट्रकवि की पदवी भी दी थी।

साहित्यपूर्वक कार्य -

बहुत सी पत्रिकाओं में हिंदी कविताए लिखकर गुप्त ने हिंदी साहित्य में प्रवेश किया था, जिनमें सरस्वती भी शामिल है। 1910 में उनका पहला मुख्य कार्य, रंग में भंग था, जिसे इंडियन प्रेस ने पब्लिश किया था। इसके बाद भारत-भारती की रचना के साथ ही उनकी राष्ट्रीय कविताएँ भारतीयों के बीच काफी प्रसिद्ध हुई, साथ ही जो भारतीय आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहे थे उनके लिए भी यह कविताएँ काफी प्रेरणादायी साबित हुई।

उनकी ज्यादातर कविताएँ हमें रामायण, महाभारत और बुद्धा के समय की दिखाई देती हैं और साथ ही उस समय के प्रसिद्ध इंसानों का चित्रण भी हमें उनकी कविताओं में दिखाई देता है। उनके प्रसिद्ध कार्य, साकेत में हमें रामायण के लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला का वर्णन भी दिखाई देता है। साथ ही उनकी दूसरी रचना जैसे, यशोधरा में हमें गौतम बुद्दा की पत्नी यशोधरा का वर्णन दिखाई देता है।

उनकी चालीस से भी अधिकि रचनाएँ हैं।

साकेत, रंग में भंग,मातृभूमि, भारत-भारती, जयद्रथ वध, विकट भट, प्लासी का युद्ध, गुरुकुल किसान, पंचवटी आदि रचनाएँ हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में नवयुवकों को ओजपूर्ण भाषा में प्रेरित किया है। उनके अनुसार आज के बच्चे कल का देश का भविष्य हैं। सन् 1964 ई.को दिल का दौरा पड़ने से साहित्य का यह जगमगाता तारा अस्त हो गया। वे मानववादी, नैतिक और सांस्कृतिक काव्यधारा के विशिष्ट कवि थे।

भावार्थ सहित दोहे

1. **हे नवयुवाओं! देश भर की दृष्टि तुम पर ही लगी,**
है मनुज जीवन की तुम्हीं में ज्योति सबसे जगमगी।
दोगे न तुम तो कौन देगा योग देशोद्धार में?
देखो, कहाँ क्या हो रहा है आजकल संसार में।।

शब्दार्थः- नवयुवाओं = नौजवानों, दृष्टि = नजर, मनुज = मनुष्य, ज्योति = प्रकाश से ओत प्रोत जोत, योग = सहयोग, देशोद्धार = देश का कल्याण, संसार = दुनिया

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि ने नौजवानों से देश की सेवा करने की बात कही है।

भावार्थः- कवि कहते है कि हे देश के नौजवानों अब जागो। अब तुम्हारी जागने की बारी आ गई है। पूरे देश की निगाहें अब तुम पर ही टिकी हुई हैं। तुम्हीं में वो ज्योति स्वरूप प्रकाश जगमगा रहा है। जो मानव के जीवन को बदल सकता है। अर्थात् अब तुम्हीं नौजवानों पर सबकी नजरें टिकी हैं, अगर देश कल्याण और जनहित में तुम सहयोग नहीं दोगे तो कौन देगा? आजकल यह संसार अर्थात् यह दुनिया कितनी विरक्त हो गई। सभी लोग अपने मार्ग से भटक गए हैं। देखो जगह-जगह क्या-क्या हो रहा है। इन सब को सही मार्ग पर लाना अब तुम्हारा काम है। इसलिए देश के नौजवानों अब जनहित तथा देशकल्याण के लिए जाग जाओ।

2. **जो कुछ पढ़ो तुम कार्य में भी साथ ही परिणत करो,**
सब भक्तवर प्रह्लाद की निम्नोक्ति को मन में धरो --
''कौमार में ही भागवत धर्मचरण कर लो यहाँ''
नर -जन्म दुर्लभ और वह भी अधिक रहता है कहाँ ।।

शब्दार्थः- कार्य = काम, कर्म, परिणत = बदलना, भक्तवर = भक्त क्षेष्ठ, निम्नोक्ति = नीचे दी गई उक्ति, कौमार = किशोरावस्था

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि ने नौजवानों से कहा है कि जो तुम किताबों में पढ़ते हो ,उसकी अपने अंदर एक धारणा बना लो। देश की सेवा के लिए तन,मन, धन से समर्पित हो जाओ।

भावार्थः- हे नौजवानों तुम जो कुछ भी पुस्तक में पढ़ते हो उसे तुरंत की कार्य में बदल डालो अर्थात् जो पढ़ रहे हो उसे अपने मन में ही मत रखो बल्कि उसके अनुसार अपना कर्म करना शुरु कर दो। श्रेष्ठ भक्त प्रह्लाद के नियमों और उनकी बातों को अपने अंदर धारण कर लो। भगवान द्वारा कही बातों को वाल्यवस्था में ही अपना धर्म समझकर उसका अनुसरण करो। हमें मनुष्य जीवन बहुत ही कठिनाईयों से मिला है। यह जीवन अधिक समय तक टिका नहीं रह सकता है। अर्थात् जो भी भगवान से संबधित प्राप्तियाँ करनी हैं। वे प्राप्तियाँ इसी जीवन में कर लो। क्यों कि यह जीवन दोवारा मिलने वाला नहीं है।

3. **दो पथ, असंयम और संयम, हैं तुम्हें अब सब कहीं,**
पहला अशुभ है, दूसरा शुभ है, इसे भूलो नहीं।
पर मन प्रथम की ओर ही तुमको झुकायेगा अभी,
यदि तुम न सँभलोगे अभी तो, फिर न सँभलोगे कभी ।।

शब्दार्थः- पथ = रास्ता, असयंम = धीरज नहीं करना, संयम = धीरज धारण करना, प्रथम = पहला

प्रसंगः- प्रस्तुत दोहा पाठय पुस्तक काव्य निधि से लिया गया है। यह दोहा प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित है। इस दोहे में कवि ने नौजवानों से अपने लिए सही मार्ग चुनने के लिए कहा है।

भावार्थः- कवि कहते हैं कि अब तुम्हारे सामने दो ही रास्ते हैं, या तो तुम अपने रास्ते से विचलित हो जाओ या धैर्य धारण करके अपने सही मार्ग पर चलते रहो। यह सब कुछ अब तुम ही पर निर्भर है। तुम्हें पता होना चाहिए कि पहला मार्ग हमारे लिए अशुभ का संकेत दे रहा है और दूसरा शुभ का संकेत है। अब इसे बुद्धिमानी से परखना तुम्हारा काम है। तुम्हें इन दोनों रास्तों को नहीं भूलना चाहिए। परंतु तुम्हारा मन हमेशा तुम्हें पहले मार्ग की ओर ही जाने का संकेत देगा। अर्थात् मनुष्य बुराइयों को जल्दी धारण करता है और अच्छाई के मार्ग पर चलने के लिए समय लगाता है। अगर तुम अभी अपने आपको नहीं संभाल पाए तो जीवन में कभी नहीं संभाल पाओगे। क्यों कि एक बार बुराई धारण करने से मनुष्य अच्छाई का मार्ग भटक जाता है।

कविता का सारांशः-

कवि देश के नौजवानों से आग्रह कर रहे हैं कि देश के कल्याण और जनहित के लिए अपने आपको तैयार करो। अगर तुम देश के कल्याण में सहयोग नहीं दोगे तो यह देश पिछड़ जायेगा। प्रह्लाद की तरह अपने मार्ग पर अटल और अड़ग रहो। भगवान से संबंधित ज्ञान भी इसी जन्म में ही ले लो। क्यों कि यह जन्म दोबारा मिलने वाला नहीं है। तुम्हारे सामने दो ही मार्ग हैं, एक बुराई का और दूसरा अच्छाई का मार्ग। अब यह तुम्हारे ऊपर निर्भर है कि तुमने कौन से मार्ग का अनुसरण करना है। याद रखना मन बहुत ही चंचल है। यह कभी भी रास्ते से भटका देता है। यह मन हमेशा बुरा रास्ता पहले दिखाता है। इसलिए इन बातों का ज्ञान कर लेना होगा कि सही रास्ता कौन सा है। अगर एक बार अपने रास्ते से विचलित हो गए तो कभी अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच पाओगे।

दीर्घ प्रश्नः-

1. कवि नौजवानों को किसके हित में काम करने के लिए कह रहे हैं?

उ. कवि नौजवानों से कह रहे हैं कि देश की निगाहें तुम पर टिकी हैं, तुम्हें ही देश का कल्याण करने के लिए आगे आना होगा। हमारा देश के लोगों में अब इतनी ताकत नहीं रही कि वे अच्छाई और बुराई की पहचान कर सकें। इसलिए जनहित के कार्य के लिए तुम्हें हमेशा तत्पर रहना होगा। क्यों कि तुम ही तो देश और मानव कल्याण का उज्ज्वल भविष्य हो। तुम्हें ही आने वाली नई पीढ़ी को देश कल्याण का पाठ पढ़ाकर सही रास्ता दिखाना होगा। देश के लोगों को हाथ पकड़कर सही दिशा का ज्ञान करवाना होगा। इसी मत को ध्यान में रखकर कर्म के मार्ग पर आगे बढ़ते जाओ।

2. कवि ने श्रेष्ठ भक्त प्रह्लाद के नियमों को धारण करने के लिए क्यों कहा है?

उ. कवि के अनुसार भक्त प्रह्लाद अपने नियमों और बातों के पक्के थे। उनके पिता ने उनके ऊपर कितने अत्याचार किए। लेकिन वे अपने फैसले पर डटे रहे और उन्होने भगवान की भक्ति करना नहीं छोड़ा। उसी प्रकार तुम्हें भी अपनी कुमार अर्थात् बाल्यावस्था में ही अपने आपको दृढ़ बनाने की कोशिश करनी है। ताकि तुम्हें कोई अपने मार्ग से विचलित न कर सके। तुम्हें भी अपने भक्ति मार्ग पर बिना किसी वाधा के चलना है। चाहे कितनी भी बाधाएँ मार्ग में आकर तुम्हारा रास्ता रोकें, मगर तुम्हें बिना समय वर्वाद किए अपने रास्ते पर डटे रहना है।

3. कवि ने नौजवानों के लिए कौन से दो मार्ग बताए हैं?

उ. नौजवानों के लिए कवि ने दो ही मार्ग बताएँ हैं। एक असंयम और दूसरा संयम का मार्ग अर्थात् एक बुराई का एक अच्छाई का मार्ग। अगर कोई असंयम वाले मार्ग पर चलेगा तो वह अपनी मंजिल पर कभी नहीं पहुँच पाएगा। लेकिन संयम वाला रास्ता सच्चाई और धर्म पर चलने वाला रास्ता है। इस मार्ग पर चलकर नौजवान अपने भविष्य को निखार सकते हैं। उसे सुनहरा बना सकते हैं। क्यों कि संयम , विवेक और सच्चाई जीवन को सफल बनाने के मार्ग हैं। बुराई का रास्ता मनुष्य के जीवन को नरक की तरफ धकेल देता है। इस लिए कवि कहते हैं कि संयम वाला मार्ग ही अपनाना चाहिए।

4. मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' तथा 'यशोधरा' जैसे काव्यों की रचना क्यों की?

उ. 'साकेत' तथा 'यशोधरा' जैसे काव्यों की रचना करके कवि उन नारियों को गरिमापूर्ण स्थान देना चाहते है, जिन्हें समाज में उपेक्षित किया जाता है। साकेत में उर्मिला की विरह वेदना प्रकट हुई तथा कैकेयी को भरत की माँ के रूप में गरिमापूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। यशोधरा में गौतम बुद्ध सिद्धि प्राप्त हेतु पत्नी और पुत्र को छोड़कर चले गए। उनके जाने के पश्चात कहकर ना जाने से वेदना प्रकट हुई है। इन दोनों काव्यों में नारियों की विरह वेदना को प्रकट किया गया है। इनके काव्यों में अधिकतर उपदेश का मर्म ही दिखाई देता है।

5. मैथिलीशरण गुप्त का जीवन परिचय लिखिए।

उ. **जीवन-परिचय -** राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई. में चिरगाँव, जिला झाँसी (उत्तर प्रदेश)के एक प्रतिष्ठित वैष्णव परिवार में हुआ। इनके पिता श्री रामचरण जी भी बड़े अच्छे कवि थे। गुप्ताजी बचपन से ही कविता करने लगे थे। उन्हें अपने पिता से कवि बनने का आशीर्वाद भी मिला था। इनका मन स्कूल के सीमित पाठयक्रम में नहीं लग पाया। अतः इन्होंने अपने घर पर ही हिन्दी, संस्कृति तथा बँगला साहित्य का अध्ययन किया। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदीजी की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से इनकी लेखनी को बल मिला। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन ने आपको

'साकेत' पर मंगला प्रसाद पारितोषिक देकर सम्मानित किया। आगरा विश्वविद्यालय ने आपकी साहित्यिक सेवाओं पर 'डी.लिट्' की मानद उपाधि प्रदान की। राष्ट्रपति द्वारा मनोहित होकर राज्यसभा के भी आप अनेक वर्षों तक सदस्य रहे। भारत सरकार ने आपको 'पद्मविभूषण' की उपाधि से अलंकृत भी किया था। 12 दिसम्बर, 1964 ई. को आपका देहावसान हो गया।

रचनाएँ - गुप्तजी ने द्विवेदी-युग से लिखना आरम्भ कर दिया था और वे अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक लिखते ही रहे। आपने छोटे-बड़े अनेक काव्य-ग्रन्थों की रचना की है, पर आपकी अपनी ख्याति के मुख्याधार 'साकेत', 'द्वापर', 'जयभारत', 'विष्णुप्रिया', 'भारत-भारती', 'जयद्रथ वध', सिद्धराज', 'यशोधरा', पंचवटी' हैं। आपने 'मेघनाथ वध' तथा 'उमर खय्याम की रुपाइयाँ' आदि ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद भी किया।

भाषा-शैली - गुप्तजी ने सरल बोलचाल की खड़ीबोली में काव्य रचना की है। संस्कृत तथा ग्राम्य भाषाओं के शब्दों का भी अपने पर्याप्त प्रयोग किया है। आपने मुख्यतः प्रबन्ध काव्य शैली को ही अपनाया है। इतिवृत्तात्मक काव्य में संवाद-योजना से आपका काव्य सुन्दर बन पड़ा है।

विचारधारा - गुप्तजी की कविता राष्ट्रिय एवं सांस्कृतिक है। इन्होंने भारत के गौरवमय अतीत का श्रद्धापूर्वक गुणगान किया है। राम-प्रेम, भारतीय संस्कृति, देशभक्ति, मानवता का सन्देश तथा नारी-महत्ता आदि विषयों को आपने प्रमुख रुप से अपने काव्य में स्वर दिया है।

लघु प्रश्नः-

1. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कब हुआ?

उ. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई. मे हुआ था।

2. वे किसको अपना गुरु मानते थे?

उ. वे द्विवेदी जी को अपना गुरु मानते थे।

3. उन्होने नवयुवकों को किस भाषा में प्रेरित किया है?

उ. उन्होने नवयुवकों को ओजपूर्ण भाषा में प्रेरित किया है।

4. मैथिलीशरण गुप्त की कितनी रचनाएँ हैं?

उ. मैथिलीशरण गुप्त की चालीस से अधिक रचनाएँ हैं।

4. फूल और काँटा

कवि परिचय-

हरिऔध जी का जन्म उत्तर प्रदेश के आजमगढ जिले के निजामावाद नामक स्थान में सन् 1865 में हुआ। उनके पिता का नाम पंडित भोलानाथ उपाध्याय था। उन्होंने सिख धर्म अपना कर अपना नाम भोला सिंह रख लिया था, वैसे उनके पूर्वज सनाढय ब्राह्मण थे। इनके पूर्वजों का मुगल दरबार में बड़ा सम्मान था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा निजामाबाद एवं आजमगढ़ में हुई। पांच वर्ष की अवस्था में इनके चाचा ने इन्हें फारसी पढ़ाना शुरु कर दिया था।

हरिऔध जी निजामाबाद से मिडिल परीक्षा पास करने के पश्चात काशी के क्वीन्स कॉलेज में अंग्रेजी पढ़ने के लिए गए, किंतु स्वास्थ्य बिगड़ जाने के कारण उन्हें कॉलेज छोड़ना पड़ा। उन्होने घर पर ही रह कर संस्कृत, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी आदि का अध्ययन किया और निजामाबाद के मिडिल स्कूल में अध्यापक हो गए। इसी पद पर कार्य करते हुए उन्होंने नार्मल-परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इनका विवाह आनंद कुमारी के साथ संपन्न हुआ।सन् 1941 में हरिऔध जी को सरकारी नौकरी मिल गई। वे कानूनगो हो गए। इस पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद हरिऔध जी ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अवैतनिक शिक्षक के रुप से वर्षोतक अध्यापन कार्य किया। उसके बाद यह निजामाबाद वापस चल आए। इस अध्यापन कार्य से मुक्त होने के बाद हरिऔध जी अपने गाँव में रह कर ही साहित्य-सेवा करते रहे। अपनी साहित्य-सेवा के कारण हरिऔध जी ना काफी ख्याति अर्जित की। हिंदी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें एक बार सम्मेलन का सभापति बनाया और विद्यावाचस्पति की उपाधि से सम्मानित किया। सन् 1947 में निजामाबाद में आपका देहावसान हो गया।

रचनाएँ

हरिऔध जी ने ठेठ हिंदी का ठाठ, अधखिला फूल, हिंदी भाषा और साहित्य का विकास आदि ग्रंथ-ग्रथों की भी रचना की, किंतु मूलत, वे कवि ही थे उनके उल्लेखनीय ग्रंथों में शामिल है।

प्रिय प्रवास, वैदेही वनवास, पारिजात, रस-कलश, चुभते चौपदे, चौखे चौपदे, ठेठ हिंदी का टाठा, अध खिला फूल, रूक्मिणी परिणय, हिंदी भाषा और साहित्य का विकास।

प्रिय प्रवास, हरिऔध जी का सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह हिंदी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है। इसे मंगलप्रसाद पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

काव्यगत विशेषताएँ

वर्ण्य विषय- हरिऔध जी ने विविध विषयों पर काव्य रचना की है। यह उनकी विशेषता है कि उन्होने कृष्ण-राधा, राम-सीता से संबधित विषयों के साथ-साथ आधुनिक समस्याओं को भी लिया है और उन पर नवीन ढंग से अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। प्राचीन और आधुनिक भावों के मश्रिण से उनके काव्य में एक अद्भुत चमत्कार उत्पन्न हो गया है।

वियोग तथा वातसल्य - वर्णन - प्रिय प्रवास में कृष्णा के मथुरा गमन तथा उसके बाद ब्रज की दशा का मार्मिक वर्णन है। कृष्ण के वियोग में सारा ब्रज दुखी है। राधा की स्थिति तो अकथनीय है। नंद यशोदा आदि बडे व्याकुल है। पुत्र-वियोग में व्यथित यशोदा का करुण चित्र हरिऔध ने खींचा है, यह पाठक के हृदय को द्रवीभूत कर देता है -

प्रिय प्रति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दु:ख जल निधि डूबी का सहारा कहाँ है?
लख मुख जिसका मैं आजलौं जी सकी हूँ।
वह हृदय हमारा नैन तारा कहाँ है?

लोक-सेवा की भावना -हरिऔध जी ने कृष्ण को ईश्वर रुप में न दिखा कर आदर्श मानव और लोक-सेवक के रुप में चित्रित किया है। उन्होंने स्वयं कृष्ण के मुख से कहलवाया है -

विपत्ति से रक्षण सर्वभूत का,
सहाय होना असहाय जीव का।
उबारना संकट से स्वजाति का,
मनुष्य का सर्व प्रधान धर्म है।

कृष्ण के अनुरुप ही राधा का चरित्र है वे दोनों की भागिनी अनाश्रितों की माँ और विश्व की प्रेमिका है। अपने प्रियतम कृष्ण के वियोग का दुख सह कर भी वे लोक-हित की कामना करती हैं- प्यारे जीवें जग-हित करे, गेह चाहे न आवें।

प्रकृति-चित्रण - हरिऔध जी का प्रकृति चित्रण सराहनीय है। अपने काव्य में उन्हें जहाँ भी अवसर मिला है, उन्होंने प्रकृति का चित्रण किया है। और उसे विविध रूपों में अपनाया है। हरिऔध जी का प्रकृति-चित्रण सजीव परिस्थितियों के अनुकूल है। संबंधित प्राणियों के सुख में प्रकृति सुखी और दु:ख में दुखी दिखाई देती है। कृष्ण के वियोग में ब्रज के वृक्ष भी रोते हैं।

भावार्थ सहित दोहे

1. **है जनम लेते जगह में एक ही,**
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक ही सी चाँदनी है डालता।।
मेंह उन पर है बरसता एक-सा,
एक-सी उन पर हवाएँ बहीं।
पर सदा ही यह दिखाता है समय,
ढंग उनके एक - से होते नहीं।।

शब्दार्थः- जनम = जन्म, पालता = पालन पोषण करना, चाँद = चंद्रमा, मेह = मेघ, बादल, बहीं = चलती, सदा = हमेशा, ढंग = तरीका

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई हैं। यह पंक्तियाँ प्रसिद्ध कवि हरिऔध द्वारा रचित हैं। इस कविता के माध्यम से कवि ने मनुष्य के अच्छे और बुरे कर्मों की तुलना की है।

भावार्थः- कवि कहते हैं कि फूल और काँटा दोनों एक ही जगह जन्म लेते हैं और उनकी पालना एक ही पौधा करता है। रात में चाँद भी उन पर एक जैसा चमकता है और अपनी चाँदनी बिखेरता है। बादल उन पर पानी भी एक जैसा बरसाते हैं और ठंडी हवाएँ भी उन पर एक जैसी ही चलती हैं। परंतु इन दोनों की पालना एक जैसी होने पर भी इनका व्यवहार एक जैसा नहीं है। अर्थात मुनष्य दो प्रकार के होते हैं धार्मिक और अधर्मी। धार्मिक व्यक्ति प्रेम की भावना से आते-प्रोत रहकर सभी प्राणियों का हित करता है, और अधर्मी व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ के लिये दूसरों का अहित करता रहता है।अधर्मी व्यक्ति को दूसरों को कष्ट पहुंचाने में आनन्द आता है। उससे दूसरों का सुख देखा ही नहीं जाता। लोगों को दुख पहुँचाने में ही वह सुख का अनुभव करता है।

2. **छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ,**
फाड़ देता है किसी का वर वसन
प्यार-डूबी तितलियों का पर कतर,
भँवर का है भेद देता श्याम तन।।

शब्दार्थः- वर-वासन = अच्छे वस्त्र, पर = पंख, कतर = काटना, भंवर = भंवरा, भेद = चोट पहुँचाना

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई हैं। यह पंक्तियाँ प्रसिद्ध कवि हरिऔध द्वारा रचित हैं। इस कविता के माध्यम से कवि ने फूल और काँटे की महता पर प्रकाश डाला है।

भावार्थः- काँटा किसी की भी उँगलियों में चुभकर उनमें छेद कर देता है और किसी के भी अच्छे वस्त्रों को फाड़ देता है। प्यार से फूल का रस चूसती हुई तितलियाों के पंख काट डालता है। काले भंवरे के शरीर को भी भेद डालता है। अर्थात चोट पहुँचा देता है। अर्थात बुरा मनुष्य हमेशा किसी की बुराई ही सोच सकता है। वह किसी का भी भला नहीं कर सकता है। वह इसी काम में लगा रहता है जीवन भर काँटे की तरह।धार्मिक व्यक्ति हमेशा दूसरों के कष्ट को दूर करता है। वह कभी किसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकता। उसका स्वभाव फूल जैसा होता है। वह दूसरों की प्रसन्नता के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देता है।

3. **फूल लेकर तितलियों को गोद में,**
भँवर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगन्धों और निराले ढंग से,
है सदा देता कली का जी खिला।।

शब्दार्थः- अनूठा = अनोखा, निज = अपना, सुगंधों = खुशबू, निराले = अनोखे, सदा = हमेशा, जी = मन, खिला = खुश करना

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई हैं। यह पंक्तियाँ प्रसिद्ध कवि हरिऔध द्वारा रचित हैं। इस कविता के माध्यम से कवि ने तितली और भंवरे के प्रति फूल और कांटे की कटुता और स्नेह बताया है।

भावार्थः- कवि फूल की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि फूल तितलियों को अपनी गोद में बिठा कर मधुर रसपान करवाता है। काले भंवरे को भी अपना अदभुत मीठा रस पिलाता है। अर्थात वह किसी में भी भेदभाव नहीं करता है। अपनी महकती हुई खुशबू से यह संदेश देना चाहता है कि केवल अच्छे खानदान में जन्म लेने से बड़ा नहीं हुआ जा सकता। बड़े होने के लिए बड़प्पन का होना बहुत जरुरी है। केवल ऐसा बड़ा होना किस काम का जिसकी छत्रछाया में किसी को आश्रय न मिले।

4. **है खटकता एक सबकी आँख में,**
दूसरा है सोहता सु शीश पर।
किस तरह कुल की बडाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।।

शब्दार्थः- खटकना = चुभना, सोहता = शोभा देना, सुर = देवता, शीश = माथा, कुल= वंश, बड़प्पन = बड़ा पद, कसर = कमी

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई हैं। यह पंक्तियाँ प्रसिद्ध कवि हरिऔध द्वारा रचित हैं। इस कविता के माध्यम से कवि ने अच्छाई की बुराई पर जीत का वर्णन किया है।

भावार्थः- काँटा सबकी आँखों में खटकता ही रहता है और फूल देवताओं के माथे पर चढ़ाया जाता है। अर्थात बुरे मनुष्य की बुराई सब को निराश कर देती है। लेकिन अच्छे मनुष्य की मिठास दूसरों के दिल में अपनी जगह बना लेती है। अच्छा मनुष्य सोचता है कि मैं कौन सा ऐसा काम करुँ जिससे कुल का नाम ऊँचा हो, मैं अपने में बड़ाप्पन लाकर उस कमी को भी पूरा कर दूँगा।

कविता का सारांशः-

कवि कहते हैं कि जिस प्रकार फूल और काँटा एक साथ जन्म लेते हैं। एक ही जैसा धूप और पानी उन पर गिरता है, उसी प्रकार सभी मनुष्य इसी संसार में जन्म लेते हैं। उन सभी को एक ही जैसे संस्कार मिलते हैं। लेकिन अपनी अच्छाई और बुराई के कारण वे सभी अलग-अलग स्थान प्राप्त करते हैं। जिस प्रकार काँटा अपने बुरे व्यवहार के कारण सभी के वस्त्र और उँगलियाँ फाड़ देता है उसी प्रकार अपने बुरे आचरण

के कारण दुर्जन मनुष्य भी किसी न किसी को हानि पहुँचाने की ताक में रहता है। इसके विपरीत जिस प्रकार फूल सबको अपनी कार्यों के कारण चारों ओर शांति बिखेरने का प्रयत्न करता है। इस लिए अपने वंश की बड़ाई के लिए हमेशा अच्छे कार्य ही करने चाहिए। क्यों कि अच्छे कार्यों की प्रसिद्धि चारों तरफ होती ।

दीर्घ प्रश्नः-

1. कवि ने काँटे और फूल में क्या अंतर बताया है?

उ. कवि कहते हैं कि काँटा दूसरों के कपड़ों और शरीर पर चुभकर उन्हें चीर-फाड़ डालता है। उसकी बुराई देखकर कोई भी उससे प्यार नहीं करना चाहता है। क्यों कि वह हमेशा दूसरों को दुख, तकलीफ ही देता है। इसके विपरीत फूल से सभी प्यार करते हैं। तितलियाँ और भंवरे इसका रसपान करते हैं। मनुष्य भी इसकी सुंदरता देखकर मोहित हो जाते हैं। इसकी खुशबू चारो दिशाओं के वातावरण को सुंगधित कर देती है। फूल को हर जगह उपयोग में लाया जाता है। इससे भगवान का श्रृंगार किया जाता है। फूल ही सबके मन को भाता है।

2. सज्जन तथा दुर्जन लोगों को समाज में किस प्रकार का स्थान मिलता है?

उ. सज्जन लोग कर्म, सच्चाई और कल्याणकारी होने के कारण समाज में उच्च से उच्च पद प्राप्त करते हैं। सज्जन लोग हमेशा दूसरों के हित के बारे में ही सोचते रहते हैं। उनमें निस्वार्थ भावना हमेशा बनी रहती है। वे दूसरों के हित में अपना हित ढूँढते हैं। दुर्जन लोग हमेशा दूसरों से इर्ष्या करते हैं। उनसे दूसरों का सुख देखा नहीं जाता। इसलिए वे हर किसी को दुखी करने की योजनाएँ बनाते रहते हैं। दुर्जन मनुष्य कभी भी समाज में अपनी जगह नहीं बना सकते हैं। उन्हें समाज भी धिकारता है।

3. फूल और काँटा एक साथ पनपते हैं। लेकिन उनमें समानता क्यों नहीं होती?

उ. फूल और काँटा एक साथ जन्म लेते हैं। एक जैसी ही धूप, गर्मी, बारिश और हवा इन दोनों को मिलती है। लेकिन इन दोनों के स्वभाव के कारण इनमें भिन्नता पाई जाती है। एक का स्वभाव मधुर और शीतलता प्रदान करने वाला होता है और एक का स्वभाव कर्कश दूसरों को दुख पहुँचाने का होता है। फूल अपनी सुगंध से सबका मन जीत लेता है, जबकि काँटा दूसरों के कपड़े और तन फाड़कर कटुता का पात्र बनता है। इन दोनों की परवरिश एक साथ होने पर भी इनके स्वभाव के कारण भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

4. इस कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं?

उ. हरिऔध जी की सभी कविताएं विश्वबन्धुत्व का संदेश देने वाली हैं और जाति, वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर आदर्श मानवीय मूल्यों को प्रोत्साहित करने वाली हैं।

उनकी एक बहुत प्रसिद्ध कविता है ''फूल और काँटा''। ऐसा कोई देश नहीं है जहाँ फूल और काँटा न हो, और न ही ऐसा कोई समय रहा है और न रहने की सम्भावना ही है कि जब फूल और काँटे का अस्तित्व न हो। हर परिस्थिति में फूल और काँटों का अपना-अपना महत्व होता है, इसीलिए यह कविता हर देश में, हर समय में, और हर परिस्थिति में अपना महत्व कम नहीं होने देती। फूल और काँटा कविता के द्वारा कवि संसार के एक बड़े रहस्य की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता है। आखिर क्या बात है कि एक ही परिवार में जन्म लेने वाले और एक जैसी ही परवरिश में पले बड़े दो भाई परस्पर विपरित स्वभाव के कैसे हो जाते हैं? कवि इस कविता के माध्यम से पुनर्जन्म के सिद्धान्त को भी परिपुष्ट करना चाहते हें। व्यक्ति के स्वभाव में पूर्व जन्मों के संस्कारों का बहुत बड़ा योगदान होता है, अन्यथा ऐसा कैसे हो सकता है?

5. इस कविता के कवि का जीवन परिचय लिखिए।

जीवन - परिचय - अयोध्यासिंह उपध्याय 'हरिऔध' का जन्म सन् 1865 ई. में निजामाबाद, जलिा आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित भोलानाथ सिंह था। कॉलेज में पढ़ने गए किन्तु अस्वस्थ होने के कारण पढ़ न सके। इन्होंने घर ही पर उर्दू, फारसी तथा संस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया। सर्वप्रथम आप निजामाबाद के मिडिल स्कूल में अध्यापक हुए, उसके पश्चात् कानूनगो के पद पर भी कार्य किया। सन् 1923 में सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण करके अपने अपना जीवन साहित्य-सेवा के लिए समर्पित कर दिया। बहुत समय तक आपने हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में अवैतनिक अध्यापन किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आपको अपने 'प्रिय प्रवास' नामक महाकाव्य पर मंगला प्रसाद पारितोषिक भी मिला। सन् 1947 में आपका देहावसान हो गया।

रचनाएँ - 'हरिऔध' जी की प्रतिभी बहुमुखी थी। उन्होंने गद्य एवं पद्य दोनों में ही रचनाएँ करके हिन्दी साहित्य के भंडार को भरा है। 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' और 'अधखिला फूल' ये दो उपन्यास तथा 'हिन्दी भाषा का विकास' और 'कबीर वचनावली' आदि इनकी औलोचना की पुस्तकें हैं। 'प्रिय प्रवास', 'वैदेही वनवास', 'चुभते चौपदें', 'चोके चौपदे', 'पद्य-प्रसुन', 'बोल-चाल', 'रस-कलश' आदि काव्य-रचनाएँ हैं।

भाषा -शैली - 'हरिऔध' जी ने ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनों में ही रचनाएँ की हैं। पहले आप ब्रजभाषा में कविता लिखते थे। बाद में खड़ीबोली की ओर आपका ध्यान आकर्षित हुआ। आप कठिन-से-कठिन तथा सरल-से-सरल भाषा लिखने में निपुण थे। इनकी रचनाओं में जहाँ एक और सरल और सहज भाषा का रुप दिखलाई देता है वहाँ दूसरी ओर संस्कृत की समासयुक्त पदावली की छटा भी मिलती है। कविता में मुहावरों का प्रयोग आपने खूब किया है। खड़ीबोली में संस्कृत के छन्दों के प्रयोग में भी आपको सफलता मिली है।

विचारधारा - 'हरिऔध' जी ने राष्ट्रीयता, समाज-सुधार, जातीय एकता जैसे विषयों पर कविताएँ लिखी हैं। राम और कृष्णा के प्रति इन्होंने नवीन दृष्टिकोण अपनाया है। 'प्रियप्रवास' में श्रीकृष्ण को अवतार न मानकर लोकनायक माना है और राधा को लोक-सेविका के रुप में चित्रित किया है। 'प्रिय प्रवास' खड़ीबोली का प्रथम महाकाव्य है। 'वैदेही वनवास' में राम का आदर्श रुप प्रस्तुत हुआ है।

लघु प्रश्नः-

1. सज्जन मनुष्य और फूल में क्या अंतर है?

उ. सज्जन मनुष्य अपने सदगुणों से चारों ओर शीतलता प्रदान करता है और फूल अपनी महक द्वारा सबके मन को मोह लेता है।

2. काँटे का स्वभाव कैसा होता है?

उ. काँटे का स्वभाव बहुत ही कर्कश होता है। वह सबके वस्त्र फाड़ देता है।

3. फूल तितलियों को क्या देते हैं?

उ. फूल तितलियों को रसपान का सुख प्रदान करते हैं।

4. काँटा भंवरे से कैसा व्यवहार करता है?

उ. काँटा भंवरे के काले शरीर को भेद डालता है।

5. मेह किस पर बरसता है?

उ. मेह फूल और काँटे पर बरसता है।

5. भारत

कवि परिचय -

महाकवि के रूप में सुविख्यात जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 को प्रसिद्ध हिंदू नगरी वाराणासी में एक व्यासायिक परिवार में हुआ था। आपके पिता देवी प्रसाद तंबाकू और सुंघनी का व्यवसाय करते थे और वाराणासी में इनका परिवार सुंघनी साहू के नाम से प्रसिद्ध था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा आठवीं तक हुई किंतु घर पर संस्कृत, अंग्रेजी, पालि, प्राकृत भाषाओं का गहन अध्ययन किया। इसके बाद भारतीय इतिहास,संस्कृति, दर्शन, साहित्य और पुराणा कथाओं का एकनिष्ठ स्वाध्याय कर इन विषयों पर एकाधिकार प्राप्त किया।

एक महान लेखक के रुप में प्रख्यात जयशंकर प्रसाद के तितली, कंकाल और इरावती जैसे उपन्यास और आकाशदीप, मुधुआ और पुरस्कार जैसी कहानियाँ उनके गद्य लेखन की अपूर्व ऊँचाइयाँ है। उनकी कविता समान रहती है।

काव्य साहित्य में कामायनी बेजोड़ कृति है। विविध रचनाओं के माध्यम से मानवीय करुणा और भारतीय मनीषा के अनेकानेक गौरवपूर्ण पक्षों का उद्घाटन करने वाले इस महामानव ने **48** वर्षो के छोटे से जीवन में कविता, कहानी, नाटक,उपन्यास और आलोचनात्मक निबंध आदि विभिन्न विधाओं में रचनाए लिख कर हिंदी साहित्य जगत को संवार सजाया। **1937** को वाराणसी में निधन, हिंदी साहित्याकास में एक अपूर्णीय क्षति।

प्रमुख रचनाएं

काव्य - कानन कुसुम, महाराना का महत्व, झरना, आंसू, कामायनी, प्रेम पथिक

नाटक - स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, धुवस्वामिनी, जन्मेजय का नाग यज्ञ, राज्यश्री, कामना

कहानी संग्रह - छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी

उपन्यास - कंकाल, तितली, इरावती

भावार्थ सहित दोहे

1. **अहा! खेलता कौन यहाँ शिशु सिंह से**

आर्य-वृन्द के सुन्दर सुखमय भाग्य सा

कहता है उसको लेकर निज गोद में ---

'खोल, खोल मुख, सिंह-बाल, मैं देखकर

गिन लूँगा तेरे दाँतों को, हैं भले,

देखूँ तो कैसे यह कुटिल कठोर है।

शब्दार्थः- शिशु = बच्चा, सिंह=शेर, वृन्द = समूह, निज = गोद, मुख = मुँह, सिंह-बल = शेर का बच्चा, भले = अच्छे, कुटिल = टेढ़ा, कठोर = कड़ा,

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई है। यह पंक्तियाँ प्रसिद्ध रचनाकार जयशंकर द्वारा 'रचित हैं' इन पंक्तियों में कवि शकुंतला-दृष्यंत के पुत्र भरत की साहसिक गाथा के बारे में बता रहे हैं।

भावार्थः- कवि कहते हैं कि सुंदर और किस्मत वाला यह आर्य कौन है, जो शेर के बच्चे का साथ खेल रहा है। कभी सिंह का मुँह खोलकर देखता है। कभी कहता है कि तेरे टेढे और कठोर दाँतों को देखकर गिन लूँगा। जो देखने में भले लगते है। अर्थात्त जो तेरे मुँह में दाँत हैं उन्हें मैं गिन कर ही बता दूँगा।

2. **देख वर बालक के इस औद्धत्य को,**

लगी गरजने भरी सिंहिनी क्रोध से ।

छड़ी तानकर बोला बालक रोष से,

'बाधा देगी क्रीड़ा में यदि तू कभी

मार खायेगी,औत तुझ दूँगा नहीं -----

अरे ! जा यहाँ से भाग जा।

शब्दार्थः- वीर = बहादुर, औद्धत्य = दुस्साहस, उग्रता क्रोध = गुस्सा, छड़ी = लकडी का डंडा, रोष = क्रोध, क्रीड़ा= खेल

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई है। यह पंक्तियाँ प्रसिद्ध रचनाकार जयशंकर द्वारा 'रचित हैं' इन पंक्तियों में कवि ने शकुंतला-दृष्यंत के पुत्र भरत की सिहंनी पर गरजना का वर्णन किया है।

भावार्थः- साहसी बालक के इस दुस्साहस को देखकर सिंहनी गुस्से से गरजने लगी। बालक भी डंडा तान कर कहने लगा कि तू अगर हम दोनों के खेल में वाधा बनेगी अर्थात हम दोनों के खेल में रुकावट बनेगी तो तू मुझ से मार खा लेगी। फिर तुझे इस बच्चे को कभी वापस नहीं दूँगा।

3. **अहा, कौन यह वीर बाल निर्भीक है**

कहो भला भारतवासी! हो जानते,

यही 'भरत' वह बालक है, जिस नाम से

'भारत संज्ञा पड़ी इसी वर भूमि की।।

शब्दार्थः- वीर = साहसी, बहादुर, बाल =बच्चा, निर्भीक = निडर, संज्ञा = नाम, वर भूमि = श्रेष्ठ भूमि

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई है। यह पंक्तियाँ प्रसिद्ध रचनाकार जयशंकर द्वारा 'रचित हैं' इन पंक्तियों में कवि शकुंतला-दृष्यंत के पुत्र भरत की साहसिक गाथा के बारे में बता रहे हैं।

भावार्थः- अरे! कौन है यह निडर साहसी बच्चा? हे भारतवासियो क्या तुम इसे जानते हो? यह वही भरत नाम का बच्चा है, जिसका नाम इस श्रेष्ठ भूमि भारत के नाम से जाना जाता है।

4. **कश्यप के गुरुकुल में शिक्षित हो रहा**

आश्रम में पलकर, कानन में घुम कर,

निज माता की गोद मोद भरता रहा ।

जो पति से भी बिछुड़ रही दुर्दैव-वश ।।

शब्दार्थः- कश्यप = आचार्य का नाम,कानन =जंगल, निज = अपनी, मोद = प्रसन्नता, दुर्देव-वश = बुरी भावना, पीड़ा.

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई है। यह पंक्तियाँ प्रसिद्ध रचनाकार जयशंकर द्वारा 'रचित हैं' इन पंक्तियों में कवि में कवि शकुंतला-दृष्यंत के पुत्र भरत की साहसिक गाथा के बारे में बता रहे हैं।

भावार्थः- वह बालक कश्यप के गुरुकुल में दीक्षा ले रहा था। जंगल में घूम -घूम कर और आश्रम में पलकर बड़ा हुआ। वह अपनी माता की गोद में लोट - पोट करता खेलता -कूदता था। लोट - पोट करके माता के गोद को खुशी से भरता था। बेचारी माता पति से बिछुड़ कर अलग बिछुड़ने की पीड़ा को सह रही थी। उस माता को यह बालक खुशी प्रदान करता था।

5. **जंगल के शिशु-सिंह सभी सहचर रहे**
रहा घूमता हो निर्भीक प्रवीर यह,
जिसने अपने बलशाली भुजदण्ड से
भारत का साम्राज्य प्रथम स्थापित किया।
वही वीर यह बालक है दुष्यन्त का
भारत का शिर-रत्न 'भारत' शुभ नाम है।।

शब्दार्थः- सहचर = विचरण करना, प्रवीर = वीरों का भी वीर, बलशाली = शक्तिशाली, भुजदण्ड = डण्डे जैसे हाथ, प्रथम = पहला

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई है। यह पंक्तियाँ प्रसिद्ध रचनाकार जयशंकर द्वारा 'रचित हैं' इन पंक्तियों में कवि में कवि शकुंतला-दृष्यंत के पुत्र भरत की साहसिक गाथा के बारे में बता रहे हैं।

भावार्थः- जंगल में विचरण करते हुए सिंह के बच्चों के बीच यह साहसी बालक वीरों का वीर बिना किसी डर से घूम रहा था। यह वही साहसी बालक भरत है जिसने अपने शक्तिशाली बाजुओं के बल पर भरत सम्प्रदाय की पहली स्थापना की अर्थात जिसने भारत का निर्माण किया। यह दुष्यंत का वीर पुत्र और भारत का अनमोल रत्न है। जिसका शुभ नाम भरत रखा गया है।

कविता का सारांशः-

इस काव्य में कवि ने शकुंतला और उसके पुत्र भरत की वीरता का वर्णन किया है। भरत अपने बाल्यकाल में सिंह के बच्चों का साथ खेलता है । वह कभी उनके मुँह को खोलकर उनके दाँतो को गिनता और कभी उनके साथ अनोखे ढंग से क्रीड़ा करता जब कभी सिंहनी अपने बच्चों के पास आती तो भरत कहता हमारे खेल में वाधा बनेगी तो तेरे बच्चों को भी नहीं दूँगा और तुझे भी मार कर भगा दूँगा। लोग पूछते हैं कि यह निडर तथा वीर बालक कौन है? जिसे सिंह के साथ खेलते हुए तनिक भी भय नहीं लग रहा है। भरत ऋषि कश्यप के गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करके बड़ा हुआ है, उसे अपनी माँ गोद में बैठना अच्छा लगता है। यह साहसी वीर वही है जो सिंह के बीच में रहता है और जो निडरता से जंगलों में घूमता है। और जिसने अपनी शक्शिाली भुजाओं द्वारा भारत नामक एक बड़े साम्राज्य की स्थापना कर डाली। यह वही दुष्यंत का साहसी तथा वीर पुत्र है जिसका नाम भरत है।

दीर्घ प्रश्न -

1. भरत की वीरता के बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

उ. शकुंतला और दुष्यंत के पुत्र भरत बहुत ही साहसी और निडर थे। वे वीरों के वीर थे। वे जंगल में सिंह के बीच रहकर क्रीडा करते थे। उन्हें सिंहों से डर नहीं लगता था। सिंहनी जब भी गुरराते हुए उनके पास आती वे डाँटकर उसे भगा देते थे। इस छोटे से बच्चे की इतनी महिमा थी कि प्रत्येक व्यक्ति इनसे प्रभावित हो जाता था। बाद में इन्होंने भारत राज्य का निर्माण भी किया।

2. भरत का बचपन कैसे बीता?

उ. भरत बचपन से ही बहुत साहसी रहे हैं। वे अपनी माता शकुंतला के साथ आश्रम में रहते थे। इनकी माता इन्हें गोद में सुलाकर वीर और बहादुर लोगों के किस्से सुनाया करती थी। इनके खिलौने सिंह के बच्चे थे। वे कहीं भी खेलने नहीं जाते थे। उनका बचपन जंगल के बीच में बीता। यह जंगली जानवरों से नहीं डरते थे। इनकी माँ ने बचपन में ही इन्हें निडर बना दिया था। जब सिंहनी इनकी तरफ गुरराते हुए आती तो यह डरा कर उसे भगा देते थे । इनकी शिक्षा कश्यप के गुरुकुल में हुई।

3. जयशंकर जी के महाकाव्य के बारे में लिखिए।

उ. जयशंकर प्रसाद ने कई नाटक, कहानियाँ और उपन्यास लिखे। लेकिन उनका रौद्र स्वरुप का अंकन जलप्लावन के प्रसंग का चित्रण मार्मिक रुप में हुआ है। कामायनी उनकी कीर्ति का आधार स्तंभ है। यह एक कालजयी महाकाव्य है। इससे उन्होंने मनु और श्रद्धा के माध्यम से हृदय और मस्तिष्क का सुख-दुख का प्रवृत्ति-निवृत्ति का शासक शासित कर नर और नारी का समंजस्य स्थापित किया है। इसमें मानव विकास की गाथा के दर्शन हुए हैं।

लघु प्रश्नः-

1. भरत ने कहाँ शिक्षा ग्रहण की?

उ. भरत ने कश्यप के गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण की।

2. भरत किसके साथ खेलते थे?

उ. भरत सिंह के बच्चों के साथ खेलते थे।

3. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब हुआ?

उ. जयशंकर का जन्म 1889 ई.में हुआ।

4. जयशंकर प्रसाद की मृत्यु कब हुई थी?

उ. इनकी मृत्यु 1937 ई. में हुई थी।

5. भारत की स्थापना किसने की?

उ. भारत की स्थापना भरत ने की।

6. भारत के माता - पिता का क्या नाम था ?

उ. भारत के माता - पिता का नाम शकुंतला - दुष्यंत था।

6. मेरा नया बचपन

कवि परिचय -

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गांव में सन् 1904 में रामनाथसिंह के जमींदार परिवार में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे कविताएँ रचने लगी थी। उनकी रचनाएँ राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण है। सुभद्रा कुमारी चौहान चार बहनें और दो भाई थे। उनके पिता ठाकुर रामनाथ सिंह शिक्षा के प्रेमी थे और उन्हीं की देख-रेख में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी हुई।

सन् 1919 में खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ विवाह के बाद वे जबलपुर आ गई थी। सन् 1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थी। वे दो बार जेल भी गई थी। सुभद्रा कुमारी चौहान की जवानी, इनकी पुत्री,सुधा चौहान ने 'मिला तेज से तेज' नामक पुस्तक में लिखी है। इसे हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ने प्रकाशित किया है।

वे एक रचनाकर होने के साथ-साथ स्वाधीनता संग्राम की सेनानी भी थीं। डा.मंगला अनुजा की पुस्तक सुभद्रा कुमारी चौहान उनके साहित्यिक व स्वाधीनता संघर्ष के जीवन पर प्रकाश डालती हैं। साथ ही स्वाधीनता आंदोलन में उनके कविता के जरिए नेतृत्व को भी रेखांकित करती है।

15 फरवरी सन् 1948 को एक कार दुर्घटना में उनका निधन हो गया था। 'बिखरे मोती' उनका पहला कहानी संग्रह है। इसमें भग्नावशेष, होली, पापीपेट, मंझलीरानी,परिवर्तन,दृष्टिकोण, कदम के फूल, किस्मत, मछुये की बेटी, एकादशी, आहुति, थाती, अमराई, अनुरोध, वे ग्रामीणा कुल 15 कहानियां है। इन कहानियों की भाषा सरल बोलचाल की भाषा है।

अधिकांश कहानियां नारी विमर्श पर केंद्रित है। उन्मादिनी शीर्षक से उनका दूसरा कथा संग्रह 1934 में छपा। इस में उन्मादिनी, असमंजस, अभियुक्त, सोने की कंठी, नारी हृदय, पवित्र ईर्ष्या, अंगूठी की खोज, चढ़ा दिमाग, वे वेश्या की लड़की कुल 9 कहानियां है। इन सब कहानियों का मुख्य स्वर पारिवारिक सामाजिक परिदृश्य ही है।

'सीधे साधे चित्र' सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा व अंतिम कथा संग्रह है। इसमें कुल 14 कहानियां है। रूपा, कैलाशी नानी, बिआल्हा, कल्याणी, दो साथी, प्रोफेसर मित्रा, दुराचारी व मंगला - 8 कहानियों का कथावस्तु नारी प्रधान पारिवारिक सामाजिक समस्यायें हैं। हींगवाला, राही, तांगे वाला, एव गुलाबसिंह कहानियां राष्ट्रीय विषयों पर आधारित हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुल 46 कहानियां लिखी और अपनी व्यापक कथा दृष्टि से वे एक अति लोकप्रिय कथाकार के रुप में हिन्दी साहित्य जगत में सुप्रतिष्ठित हैं।

कहानी संग्रह -

- बिखरे मोती (1932)
- उन्मादिनी (1934)
- सीधे साधे चित्र (1947)

कहानी संग्रह -

- मुकुल
- त्रिधारा

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

- यह कदंब का पेड अगर माँ होता यमुना तीरे। मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।।
- मुझे छोड़े कर तुम्हें प्राणाधन सुख या शांति नही होगी यही बात तुम भी कहते थे सोचो भ्रान्ति नहीं होगी।
- सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी, बूढे भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी, गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी, दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।

भावार्थ सहित दोहे

1. बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन, तेरी।
गया, ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी।।
चिंता रहित खेलना-काना वह फिरना निर्भय स्वच्छन्न।
कैसे भूला जा सकता है बचपन का अतुलित आनन्द
ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था, छुआछूत किसने जानी।
बनी हुई थी, वहाँ झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी।।

किये दूध के कुल्ले मैने चूस आँगूठा सुधा पिया।

किलकारी किल्लोल मचाकर सूना घर आबाद किया।।

सोना और मचल जाना भी क्या आनन्द दिखाते थे।

बड़े-बड़े मोती-से आँसू जयमाला पहनाते थे।।

शब्दार्थः- मधुर= मीठी, मस्त = खुशहाल, रहित = बिना, निर्भय = निडर, स्वच्छन्द = स्वतंत्रता, अतुलित = मीठा, चीथड़ो = फटे हुए कपड़े, सुधा = अमृत, किलकारी किल्लोर = शोर मचाना, आबाद = स्थापना, मचल जाना = खुश होना, आनन्द = खुशी

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई है। यह कविता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित मेरा नया बचपन से ली गई है।

भावार्थः- कवयित्री को बार-बार बचपन की मीठी यादें आती हैं। वे कहती है कि बचपन मुझे तेरी मीठी याद बार-बार आती है। तू अपने साथ ही जीवन की सबसे मस्त खुशी भी ले गया। बचपन कितना अच्छा था। पूरा दिन खेलना, खाना और बिना चिंता,बिना डर, आजादी से इधर-उधर घूमना आदि। मैं अपने टूटे फूटे घर में और फटे हुए कपड़ों मे भी रहकर स्वयं को किसी रानी से कम नहीं समझती थी। अपने बचपन में ,मैं दूध के कुल्ले करती थी अर्थात दूध को कभी पीती और कभी उछाल कर बाहर फैंक देती थी। मैं अपने अंगूठे को मुँह में डालकर चूसती रहती और अमृत पीती रहती थी। अर्थात में समझती थी कि अंगूठे में से अमृत या कोई पीने वाला पदार्थ निकलता है। घर में किलकारियाँ मारकर में सूने घर को सिर पर उठा लेती थी। बचपन में कभी रुठना और कभी मान जाने में भी कितना आनंद आता था। जब बचपन में हम रुठ जाते थे तब मोतियों जितने बड़े-बड़े आँसू टपकाते थे। अर्थात बचपन में रूठना, फिर झूठे आँसू बहाकर मान जाना। यही बचपन के सुनहरे पलों की यादें आती हैं।

2. **मैं रोई, माँ काम छोड़कर आई, मुझको उठा लिया।**

झाड़-पोंछ कर चुम-चुम कर गीले गालों को सुखा दिया।।

दादा ने चंदा दिखलाया नेत्र नीर-युत दमक उठे।

धुली हुई मुस्कान देख कर सबके चेहरे चमक उठे।।

वह सुख का साम्रज्य छोड़कर मैं मतवाली बड़ी हुई

लुटी हुई, कुछ ठगी हुई-सी दौड़ द्वार पर खड़ी हुई।।

जालभरी आँखें थीं मेरी मन में उमँग रँगीली थी।

तान रसीला ती कानों में चंचल छैल छबीली थी।

शब्दार्थः- चंदा= चंद्रमा, नेत्र = आँखे, नीर-युत = पानी सहित, लाजभरी = शर्म से भरी, उमंग = खुशी, तान = राग, चंचल = होशियार, छैल-छबीली = सुंदर, अलबेली = आवारा

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठय पुस्तक काव्य निधि से ली गई है। यह कविता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा मेरा नया बचपन से ली है।

भावार्थः- बचपन में जब भी मैं रोती थी तो माँ अपना काम छोड़कर मुझे उठा लेती थी। मिट्टी लगे मेरे कपड़ों को झाड़ती थी तथा न जाने मेरे गालो को कितनी बार चूम कर उनके ऊपर गिरे आँसू भी सुखा देती थी। जब भी मैं रोती थी। तब दादा उठाकर आकाश में चाँदनी बिखेरता चंद्रमा दिखाते थे और मेरी आँसुओं से भरी आँखे चमक उठती थी। जब में मंद-मंद मुस्कराती थी तब सभी के चेहरे चमक उठते थे। वह बचपन का सुख से भरा साम्राज्य छोड़कर मैं उछलते-कूदते हँसते -खेलते बड़ी हो गई। बचपन को पीछे छोड़ते-कूदते हुई जवानी के द्वार पर खड़ी हो गई। अब किसी अनजान व्यक्ति को देखकर मेरी आँखे लजा से भर जाती थी। लेकिन मन में एक उमंग सी भी भर जाती थी। बड़ी होने पर अब मेरी आवाज बदल चुकी थी और मेरे हाव-भाव बदल चुके थे। अर्थात मैं बहुत ही चंचल हो गई थी। बड़ी होने पर मुझे इस दुनिया के बारे में पता चला तो बहुत अजीब महसूस हुआ। मन में एक ही प्रश्न था। मैं सबके बीच स्वयं को अकेला महसूस कर रही थी। अर्थात मुझे जब दुनिया के बारे में पता चलने लगा तो मन में एक ग्लानि सी महसूस होने लगी कि मैं यह कहाँ पहुँच गई।

3. **दिल में एक चु भन -सी थी यह दुनिया अलबेली थी।**

मन में एक पहेली थी मैं सब के बीच अकेली थी।

मिला, खोजती थी जिसको हे बचपन ठगा दिया तूने।

अरे जवानी के फंदे में मुझको फँसा दिया तूने।
सब गलियाँ उसकी भी देखीं उसकी खुशियाँ न्यारी हैं।
प्यारी, प्रीतम की रँग-रलियों की स्मृतियाँ भी प्यारी हैं।
माना मैं ने युवाज-काल का जीवन खूब निराला है।
आकांक्षा, पुरुषार्थ, ज्ञान का उदय मोहनेवाला है।
किंतु यहाँ झंझट है भारी युद्ध-क्षेत्र संसार बना।
चिंता के चक्कर में पड़कर जीवन भी है भार बना।।
आ जा बचपन ! एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शांति।
व्याकुल व्यथा मिटानेवाली वह अपनी प्राकृत विश्रांति।।

शब्दार्थः- ठगा= धोखा देना, प्रतीम = प्रिय, स्मृतियाँ = यादें, युवा-काल = जवानी, निराला = अनोखा, आकांक्षा = इच्छा, पुरुषार्थ = परोपकार, झंझट = उलझने, युद्ध-क्षेत्र = युद्ध का मैदान, निर्मल = स्वच्छ, व्याकुल = बेचैन, व्यथा = सुख-दुख, विश्रांति = आराम करना

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई है। यह कविता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा मेरा नया बचपन से ली है।

भावार्थः- कवयित्री कहती है कि बचपन यह तुमने कहाँ लाकर खड़ा कर दिया है। तुमने तो मुझे जवानी के फंदे में फंसा दिया है। बचपन तुमने सचमुच मुझे बड़ा ही धोखा दिया है। मैं तुझे कहाँ-कहाँ ढूँढती रही मगर तू तो मुझे जवानी की दहलीज पर छोड़कर वापस चला गया। मैने जवानी के रंगीले दिन और उसकी खुशियाँ भी महसूस की हैं। रात-दिन प्रियतम की यादों में रहना भी अच्छा लगता है। वे सभी बातें तो अच्छी लगती है लेकिन बचपन तुम्हारे जैसा आनंद कहीं नहीं मिल सकता। मैं मानती हूँ कि युवा काल या जवानी जीवन का सुख बहुत ही अनोखा होता है। इस जीवन में इच्छाएँ, परोपकार और ज्ञान का आभास मन को मोह लेता है। परंतु इस जीवन में उलझने और मुसीबतें भी बहुत हैं। ऐसा लगता है कि यह संसार रण-भूमि है और हम यहाँ संघर्षो का बहुत बड़ा युद्ध लड़ रहे हैं। चिंता और दुख के आने पर यह जवानी का जीवन अब बोझ लगने लगा है।

हे प्यारे बचपन एक बार फिर से आजा, और आकर अपनी वही प्यारी सी निर्मल शांति फिर से देकर जा, वही प्राकृतिक शांति जो जीवन के सभी दुखों को मिटा देती है।

4. **वह भोली-सी मधुर सरलता वह प्यारा जीवन निष्पाप।**
क्या आकर फिर मिटा सकेगा तू मेरे मन का संताप?
मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी।
नंदन वन-सी फूल उठी यह छोटी-सी कुटिया मेरी।।
'माँ ओ' कहकर बुला रही थी मिट्टी खाकर आयी थी।
कुछ मुँह में कुछ लिये हाथ में मुझे खिलाने लायी थी।

शब्दार्थः- मधुर= मीठी, निपाप = पाप से रहित, संताप = दुख, बिट्यिा = बेटी, कुटिया = झोंपड़ी

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई है। यह कविता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा मेरा नया बचपन से ली है।

भावार्थः- कवयित्री कहती है कि बचपन कैसा था? बचपन में वह भोली-बाली मीठी सरलता और पाप रहित जीवन बहुत ही प्यारा था। हे बचपन क्या तू आकर मेरे उन दुखों को मिटा सकता है जो मैने अभी-अभी जवानी में प्राप्त किए हैं। जब मैं बचपन को बुला रही थी अर्थात बचपन में खोई हुई थी, तभी मेरी छोटी बेटी बोल उठी। उसकी आवाज से मेरी छोटी सी कुटिया नंदन वन के फूल की तरह खिल उठी। उसका मुँह मिट्टी से भरा था और वह मुझे 'माँ' ओ माँ कहकर बुला रही थी। कुछ मिट्टी उसके मुँह में और कुछ हाथ में थी, जो मुझे खिलाने के लिए लाई थी।

5. **पुलक रहे थे अंग, दृगों में कौतहल ता छलक रहा।**
मुँह पर थी अह्लाद-लालिमा विजय-गर्व था झलक रहा।।
मैंने पूछा 'यह क्या लायी?' बोल उठी वह 'माँ, काओ।'
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से मैने कहा 'तुम्ही खाओ।।'
पाया मैंने बचपन फिर से बचपन बेटी बन आया।

उसकी मंजूल मूर्ति देखकर मुझे में नवजीवन आया।।

मैं भी उसके साथ खेलती खाती हूँ, तुतलाती हूँ।

मिलकर उसके साथ स्वयं मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।।

जिसे खोजती थी बरसों से अब जाकर उसको पाया।

भाग गया था मुझे छोड़कर वह बचपन फिर से आया।।

शब्दार्थः- दृग = नेत्र, नयन, कौतुहल = चहलपहल, आह्लाद = आनंद, गर्व = अभिमान, प्रफुल्लित = उत्साह, , हँसता हुआ, हृदय = दिल

प्रसंगः- प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्य पुस्तक काव्य निधि से ली गई है। यह कविता प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा मेरा नया बचपन से ली है।

भावार्थः- कवियत्रि कहती है कि जब मेरी छोटी सी बेटी मिट्टी से भरी मुट्ठी मुझे दिखाती है, तो असमाक मेरी आँखों से आँसुओं की धारा निकलने लगी। मेरा चेहरा आनंद से लाल हो रहा था और एक विजय-अभिमान मेरे चेहरे पर साफ-साफ दिखाई दे रहा था।

मैने उससे प्यार से पूछा कि यह क्या लाई हो? तो उसने कहाँ माँ तुम भी खाओ। तो मेरा मन खुशी से भर गया और मैने कहा तुम खा लो।

कवियत्रि कहती हैं कि मेरी बेटी के द्वारा मैने अपने खोए हुए बचपन को फिर से प्राप्त कर लिया। उसकी छोटी सी मूर्ति (अर्थात उसके छोटे-छोटे हाथ-पैर छोटा सा शरीर देखकर ऐसा लगता है जैसे मुझे ही दूसरा जीवन मिल गया है।

मुझे जब भी समय मिलता है, मैं अपनी बचपन में लौट आती हूँ। अर्थात उसके साथ में भी खेलती हूँ। उसके जैसे तुतलाने जैसी बात करती हूँ। उसके साथ खेलते-खेलते मैं भी बच्ची ही बन जाती हूँ।

मैं सालों भर से जिसे खोज रही थी, वह बचपन मैंने अपनी बेटी के रुप में प्राप्त कर लिया है। मैने सोचा था कि बचपन मुझे छोड़कर कहीं चला गया है। लेकिन अपनी बेटी के रुप में मैने उसे फिर से पा लिया है।

कविता का सारांशः-

इस कविता में कवयित्री ने बचपन का महत्व बड़े ही अच्छे ढंग से समझाया है। एक बार यह बचपन चला जाये तो फिर से दोवारा नहीं आता है। कवयित्री को भी अपने बचपन की बहुत याद आ रही है। वे बचपन को याद करते हुए कहती हैं कि जवानी में आने के बाद इतना आनंद नहीं आता जितना बचपन में आता था। इसलिए हे बचपन तू मेरी सबसे बड़ी खुशी अपने साथ ही ले गया। बचपन तुमने जवानी के फंदे में फंसाकर मुझे बुरी तरह धोखा दिया है। इस जवानी और संसार के चक्कर में बुरी तरह फंस चुकी हूँ। वह मीठा और प्यारा जीवन कितना अच्छा था। क्या वही जीवन तू मुझे दोवारा दे सकता है। कवयित्री कहती है कि उस प्यारे जीवन को तो मैं कभी भूले भी नहीं भूला सकती। लेकिन फिर भी बचपन के उस प्यारे जीवन को मैने अपनी छोटी सी बेटी के द्वारा जीने का प्रयत्न किया है। जब वह मिट्ठी भरी मुट्ठी मुझे दिखाती है और कहती है खाओ। तब मेरी करुण भरी आँखे मेरे बचपन को ढूँढती है। तबमें महसूस करती हूँ कि मेरा बचपन मेरी बेटी के द्वारा लौट आया है।

दीर्घ प्रश्नः-

1. कवयित्री को बार-बार बचपन की याद क्यों आती है?

उ. कवयित्री का बचपन बहुत ही उमंगों और खुशियों से भरा था। वह अपने बचपन में अलबेली, चिन्तारहित घूमती-फिरती और खाती-पीती थी। बचपन मे उसे किसी के प्रति घृणा और इर्ष्या नहीं थी। वह किलकारियाँ मारकर पूरे घर में भगदड़ मचाती थी। जब भी वह रोती थी माँ घर का पूरा काम छोड़कर उसे उठाने के लिए उतावली रहती थी। वह रोती तो दादा चंदा दिखाकर उसे चुप करा देते थे। वह फटे-पुराने कपड़ों में भी अपने आपको रानी समझती थीं। जब भी वह मुस्कुराती थी तो घर में सबके चेहरों पर एक खुशी की लहर दौड़ पड़ती थी। उनको अपने बचपन पर बहुत ही नाज था।

2. कवयित्री ने अपने बचपन को किसके द्वारा अनुभव किया?

उ. कवयित्री ने अपने बचपन और बचपन की बातों को अपनी छोटी सी बेटी की द्वारा अनुभव किया। उनकी बेटी जब मिट्टी से भरी मुट्ठी उनकी तरफ बढ़ाती है और खाने के लिए कहती है, तब सचमुच उनकी आँखों में कौतुहल छलक पड़ता है। उनकी छोटी सी बेटी उनके सामने किसी मूर्ति के समान खड़ी है। कवयित्री भी अपनी बेटी के साथ उसी तरह खेलती और बात करती है, जैसे बचपन में करती थी। कवयित्री कहती है कि उस बचपन को मैंने मेरी बेटी द्वारा फिर से प्राप्त कर लिया है, जिसे मैं आजतक भूल गई थी।

3. वह सुख का साम्राज्य छोड़कर मैं मतवाली बड़ी हुई। इस पंक्ति का क्या आशय है?

उ. कवयित्री कहती है कि वह सुख भरा जीवन छोड़कर धीरे-धीरे अपनी जवानी भरे जीवन की दहलीज पर कदम रखने लगी। वह सुख से भरा जीवन उमंग और उत्साह से भरा जीवन था। उस उमंग भरे जीवन में मैने खूब आनंद लिया। यह जीवन वैसा था, जिससे दुख का कभी अनुभव नहीं हुआ। खेलना-खाना और अपनी मस्ती में ही रहना। बचपन को छोड़कर जब मैने जवानी में बेड़िया डाल दी हो। वही सुख का साम्राज्य प्यारा था।

4. सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता मेरा नया बचपन पढ़कर आपको अपने जीवन के किन दिनों की याद आती है?

उ. श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता ने तो मानो दिल के तार झंझोड़ दिए और मन बचपन की अतल गहराइयों में डूब गया। वे सावन के झूले, बारिश में चुपके चुपके भीगना, कागज़ की नाव, कापियों के पन्ने फाड़ कर हवाई जहाज़ बनाकर उड़ाना, कागज की फिरकी लेकर भागना, ओले पड़ते ही छाता लेकर बाहर भागना और ओले इकट्ठा करना। गर्मियों की छुट्टियों का बेसब्री से इंतजार, छुट्टियों में दादी, नानी के घर जाना, दोपहर में बड़ों की नज़र बचा कर बाग में भाग जाना, कच्ची -कच्ची आमियों के चटकारे, कभी ट्यूब वेल में नहाते तो कभी रजवाहे में घर आने पर डाँट पड़ती थी। परंतु अगले दिन फिर वही मस्ती तरबूज, खरबूज के बीजों को छील कर गुड में पाग कर चाटने का स्वाद आज भी जुबान पर उतना ही ताज़ा लगता है। गेहूँ के ढेर में से चुपचाप फ्रॉक के घेर में गेहूँ भर कर निकल जाते थे। बदले में पानी की रंगीन बर्फ और गुड़ पगे बेसन के सेव के सामने आज की अच्छी से अच्छी आइसक्रिम और मिठाई भी फीकी लगती है। छुट्टियाँ खत्म होने पर दिल बड़ा उदास हो जाता था।

स्कूल से लौट कर शाम होते ही सब घरों से बच्चे बाहर निकल आते थे। आँख-मिचौली, सतोलिया, ऊँच नीच, विष-अमृत,लंगडी, नीली पीली साड़ी, गिल्लीडंडा और ना जाने क्या-क्या खेल खेलते थे। गुड्डे गुडियों की शाती करते तो- गुड़िया को विदा करने का नाम पर झगडा हो जाता था। परंतु अगले दिन फिर दोस्ती हो जाती थी। कितने प्यारे ते वे दिन भी। ना मन मैं कोई भेद भाव और ना कटुता, पर इस सबके साथ समय की बड़ी नियमितता थी। सुबह जल्दी उठना, समय से पढ़ना, समय से खेलना और समय से सो जाना, हर बात में एक आनंद था।

लगु प्रश्नः-

1. प्रस्तुत कविता किस विषय में लिखी गई है?

उ. प्रस्तुत कविता बचपन के विषय में लिखी गई है।

2. कवयित्री का बचपन किस प्रकार का था?

उ. कवयित्री का बचपन मस्ती भरा था।

3. जवानी और बचपन की तुलना में किसे उमंग भरा बताया गया है?

उ. बचपन को उमंग से भरा बताया गया है।

4. कवयित्री ने अपने बचपन को किस में ढूँढा?

उ. कवयित्री ने अपने बचपन को अपनी बेटी मैं ढूँढा।

5. सुभद्रा कुमारी का जन्म कब हुआ?

उ. सुभद्रा कुमारी का जन्म सन् **1904** में हुआ।

Unit - II: हिन्दी साहित्य का इतिहास

1. आदिकाल

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास को किन-किन कालों में विभक्त किया जा सकता है? काल-विभाजन में विद्वानों ने जिन प्रवृत्तियों को आधार माना है, उनकी विवेचना भी कीजिए।

उ. **आचार्य शुक्ल का काल - विभाजन -**हिन्दी साहित्य के इतिहास में जो काल-विभाजन किया वह आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने तथ्यों के अनुसार किया। बाद के विद्वानों के बीच सर्वोधिक प्रचलित और मान्य हुआ। शुक्ल जी के अनुसार हिन्दी साहित्य का इतिहास निम्नंकित चार कालों में बाँटा है:

1. **आदिकाल (वीरगाथाकाल) सं.1050 से 1375 तक**
2. **पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) सं.1375 से 1700 तक**
3. **उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) सं.1700 से 1900 तक**
4. **आधुनिक काल (गद्यकाल) सं.1900 से अब तक**

शुक्ल जी के इस काल - विभाजन में 'इतिहास' को समयानुसार आदि, मध्य, आधुनिक में विभाजित करने के साथ वीर, भक्ति, रीति, गद्य आदि उस काल की प्रमुख प्रवृत्ति को भी आधार बनाया गया है। उनके काल -विभाजन में सुसष्टता, संक्षिप्तता के साथ सुभोदता और सुसंगति भी है --- यही कारण है, बाद के अनेक विद्वानों में उनके द्वारा किये गये काल-विभाजन में त्रुटियों और दोष-दर्शन के बावजूद भी इसी का निर्बाध प्रचलन होता गया।

आदिकाल - डा. रामकुमार वर्मा ने अपने 'आलोचनात्मक इतिहास' में शुक्ल जी द्वारा प्रतिपादित चार कालखण्डों के बजाय एक और कालखण्ड 'संधि काल' नाम से जोड़कर संख्या पाँच कर दी और शुक्ल जी के **'वीरगाथा'** नाम के स्थान पर **'चरण काल'** नाम दे दिया। शुक्ल जी ने चारणओं की मुख्य भूमिका का उल्लेख स्वयं अपने 'इतिहास' में भी कर दिया था। इसी प्रकार आचार्य मिश्र ने 'रीतिकाल' नामकरण के अनौचित्य को प्रतिपादित कर उसे **'श्रृंगार काल'** नाम देना अधिक उपयुक्त समझा था। शुक्ल जी को स्वयं इस नाम पर कोई आपत्ति नहीं थी। सभी श्रृंगार कवि 'काव्य रीति' से भी प्रभावित थे, अतःउन्हें 'रीति' के अंतर्गत लाना अधिक संगतपूर्ण लगता है। साथ ही भूषण जैसे महत्वपूर्ण कवि जो श्रृंगारी नहीं थे, किन्तु रीति से प्रभावित थे, उन्हें भी सरलता से 'रीति' के अंतर्गत लाया जा सकता है।

स्पष्टतः शुक्ल जी द्वारा प्रस्तुत काल-विभाजन अधिकाधिक मान्य और संगत समझा गया। इसी काल-विभाजन को सुगम-संगत समझकर अपने इतिहास लेखन का आधार बनाना हमने भी उपयुक्त माना।

नामकरण का औचित्य -'आदिकाल' नामकरण आचार्य शुक्ल के द्वारा दिया गया और बाद में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी इसके औचित्य को स्वीकारा। किन्तु अपने इतिहास में शुक्ल जी ने आदिकाल को वीरगाथाकाल कहना ही समीचीन माना। उनके अनुसार उस काल की जनरुचियाँ और प्रवृत्तियाँ 'वीरता' में सबसे अधिक केन्द्रित थीं। इसी से प्रेरित होकर तात्कालीन कवियों ने वीररसात्मक और वीरगाथा काव्य की रचनाएँ सबसे अधिक कीं। आदिकाल को डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'चारणकाल' नाम देना अधिक उपयुक्त माना है। चारणकाल वीरगाथाकाल चारणों द्वारा ही रचित थीं। डॉ. श्याम सुन्दर दास अपने 'इतिहास' में शुक्ल जी द्वारा दिये गये नाम के ही समर्थक हैं। उन्होंने अपनी ओर से इस कालखण्ड को पच्चीस वर्ष बढ़ाकर सं **1050** से **1375** तक न मानकर **1400** तक माना है। इतना अवश्य है,इस कालखण्ड का काव्य-चाहे वह किसी सम्प्रदाय या धर्म विशेष के सिद्धान्तों के प्रचार हेतु रचा गया हो किसी राजा-समांत की वीरता के यश बखान के लिए रचा गया वीरगाथा काव्य हो-----देशी भाषा के साथ बहुत कुछ अपभ्रंश भाषा में भी रचा गया। इस आधार पर कुछ विद्वान इसे 'अपभ्रंशकाल' से भी अभिहित करते हैं। तथापि विचारणीय तथ्य यही है कि भाषा अपभ्रंश प्रधान होते हुए भी विषय में 'वीरत्व' की प्रधानता रही।

2. विद्वानों ने अपभ्रंश शब्द का प्रयोग क्यों किया? अपभ्रंश के कुछ प्रमुख कवियों के बारे में लिखिए।

उ. 'अपभ्रंश' शब्द का प्रयोग कुछ विद्वानों ने 'अवहट्ट' रुप में भी किया है। 'अवहट्ट' शब्द 'अपभ्रंश' या 'अपभ्रष्ट' शब्द से बना हुआ लगता है। जिस प्रकार 'प्राकृत' में 'गाथा' काव्य रचा गया, वैसे ही 'दुहा' (दोहा) रुप में अपभ्रंश काव्य का भी अधिकांश काव्य रचित मिलती है। सिद्ध या बौद्ध, जैन और नाथपंथियों द्वारा रचित काव्य अपभ्रंश से मिलता है जो आठवीं शती से अधिक पुराना नहीं लगता। राहुल सांकृत्यायन अपभ्रंश के प्रथम रचनाकार सरहपा के समय **760** के लगभग बताते हैं तो अन्य विद्वान **817** ठहराते हैं। प्रसिद्ध कवि विद्यापति की 'कीर्तिलता' अवहट्ट भाषा में ही रचित है।

अपभ्रंश के कुछ प्रमुख कवि

1. **जैनाचार्य हेमचन्द्र -** उपर्युक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों में भी अपभ्रंश काव्य के नमूने मिलते हैं। गुजरात के सोलंकि राजा सिद्धराज जयसिंह के समय में जैनाचार्य हेमचन्द्र ने एक वृहद् व्याकरण ग्रन्थ 'सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन' बनाया था। उसमें से अपभ्रंश भाषा में लिखा हुआ एक 'दोहा' बहुत प्रसिद्ध हैः

2. **विजयसेन सूरि -** इन्होंने 'रेवंत गिरिरास' की रचना की जो जैन तीर्थकर नेमिनाथ और रेवंत गिरि तीर्थ से सम्बन्धित है।

3. **सोमप्रभ सूरि -** इन्होंने 'कुमारपाल प्रतबोध' नामक एक संस्कृत-प्राकृत काव्य लिखा था। इसमें कुछ प्राचीन अपभ्रंश काव्य के नमूने और कुछ उनके ही बनाये हुए दोहों के नमूने मिलते हैं।

4. **जैनाचार्य मेरुतुंग -** इन्होंने 'प्रबन्ध चिन्तामणि' नामक एक ग्रन्थ बनाया था, जिसमें बहुत से प्राचीन राजाओं की कथाएँ संग्रहीत हैं। इन कथाओं के अन्तर्गत राजा भोज के चाचा मुञ्ज जे कहे हुए बहुत से दोहे मिलते हैं। उनमें से उदाहरणार्थ एक दोहा नीचे दिया जाता हैः

5. **शङ्घर -** चौदहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में लिखित इनका 'शार्ड्धर पद्धति' नामक सुभाषित ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध है। यह भी कहा जाता है कि इन्होंने 'हम्मीररासो' नामक एक वीरगाथा काव्य भी रचा था, जो आजकल उपलब्ध नहीं है।

6. **विद्यापति -** -इनकी 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' भी अपभ्रंश के अन्तर्गत हैं। ये पुस्तकें तिरहुत के राजा कीर्तिसिंह की प्रशंसा में लिखि गयी है। एक उदाहरण 'कीर्तिलता' से लीजिए।ः

   (सभी नारियाँ विलक्षण थीं, सभी नर सुस्थित थे। श्री हमारा इमारा इमसाह के शासन में न चिन्ता थी, न शोक।)

   (संस्कृति को बहुत से लोग समझते नहीं है, प्राकृत में रस का मर्म नहीं आता। देशी बोली सबको मीठी लगती है। इसको अवहट्ट कहते हैं।)

   इसी भाषा में अप्रभंश से आगे बढ़कर लोकभाषा की ओर झुकाव है। प्रकृत और अप्रभंश की साधारण, प्रकृति के विरुद्ध इसमें संस्कृत तत्सम शब्दों के प्रयोग की प्रवृत्ति है।

   होता गया, वह प्राकृत और अपभ्रंश के बन्धनों से छूटती गयी और संस्कृत के तत्सम शब्दों को अपनाती गयी।

3. आदिकाल की परिस्थितियों के बारे में लिखिए।

उ. हिन्दी साहित्य का जन्म ऐसे समय में हुआ जब भारत पर मुसलमानों के आक्रमण आरम्भ हो गये थे। हिन्दू राजा अपने-अपने राज्यों की रक्षा में लगे हुए थे। हर्षवर्द्धन की मृत्यु (**704**) के पश्चात् एक केन्द्रीय शक्ति के अभाव में देश में पृथक - पृथक राजवंश अपनी-अपनी सत्ता के प्रसार में लगे हुए थे। मुसलमान आक्रामक कभी खदेड़े जाते थे, तो कभी प्रबल होकर वे अपना अधिकार जमा लेते थे। गजनवी (मृत्यु सं. **1087**) और गोरी (पहली चढ़ाई सं **1247**) के आक्रमणों ने राजपूतों को शिथिल कर दिया था। राजपूत राजा प्रायः अपने-अपने वैयक्तिक गौरव की अधिक परवाह करते थे, देश के गौरव का उन्हें कम ध्यान था। उनमें वीरता खूब थी, किन्तु वह वीरता का कोष प्रायः आपस की प्रतिद्धन्ध्विताओं में ही खाली किया जा रहा था। इन प्रतिद्वन्द्विताओं के कारण ही राजा लोग एक सूत्रबद्ध सामूहिक शक्ति का परिचय न दे सके। मुसलमानों के पैर धीरे धीरे जमते गये। उन दिनों कन्नौज, दिल्ली, अजनेर, अन्हलवाड़ (गुजरात) आदि राजधानियाँ ही प्रधान क्रियास्थली थीं। प्रमुख वीरगाथा काव्य दिल्ली और कन्नौज के राजाओं तथा उनके प्रतिद्वन्द्वितापूर्ण चरित्रों पर आश्रित हैं। चन्द ने पृथ्वीराज का वर्णन किया तो भट्ट केदार और मधुकर कवि ने जयचन्द का यश गाया।

वह युग युद्धों का युग था। साहित्य समाज का प्रतिबिम्मब होता है। इसी प्रकृति के अनुकूल तत्कालीन साहित्य पर वीरता की छाप पड़ी। उस काल के साहित्य-निर्माता चारण लोग थे, जो अपने आश्रयदाताओं का ?सगान कर उन्हें युद्ध के लिए प्रोत्साहन देते थे, और कभी-कभी वे लेखनी या वाणी के चमत्कार और कौशल जो राष्ट्रीय भावना वांछनीय थी उसका अभाव रहा है। वे अपने आश्रयदाता राजाओं का ही यशोगान करना जानते थे ----- 'जिसका खाना उसका गानाा' की लोकोक्ति प्रसिद्ध है। इस प्रकार उस समय का काव्य वीर-काव्य होना आवश्यक था, किन्तु उसके राष्ट्रीय काव्य होने में सन्देह हैं।

वीरगाथाओं के साथ इस प्रकार काव्य में श्रृंगार का भी पुट पर्याप्त मात्रा में रहता था, क्योंकि प्रायः स्त्रियाँ ही पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता और झगडे का कारण होती थी, ेर उनके रुप-लावण्य तथा प्रतिद्वन्द्वियों में उनकी रक्षा हेतु किये गये युद्धादि वर्णन ही ऐसे काव्यों का रुचिकर विषय होता था। ऐसे काव्यों के विषय में यह अवश्य कहा जा सकता है कि इमें तत्कालीन युद्धों का बड़ा सुन्दर और सजीव वर्णन है। संक्षेप में, वीरगाथा काव्य-ग्रन्थों की निम्नलिखित विशेषताएँ हैंः

4. आदिकाल की विशेषताओं के बारे में विवरण कीजिए।

उ.

1. **आश्रयदाता राजाओं की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसाः-** यह तो साधारण बात है कि जिस समय कोई देश युद्ध में व्यस्त रहता है और जिस काल में युद्ध की ही ध्वनि प्रधान रुप में व्याप्त रहतीहै उस काल में वीरोल्लासिनी कविताओं की ही गूँज सुनाई देती है। इस युग में युद्ध प्रिय राजपूत अपनी स्तुति सुनना चाहते थे। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार -'निरंतर युद्ध के लिए प्रोत्साहित करने को भी एक वर्ग आवश्यक हो गया था। चरण इसी श्रेणी के लोग हैं। उनका कार्य ही था हर प्रसंग में आश्रयदाता के युद्धोन्माद को उत्पन्न कर देनेवाली घटना-योजना का आविष्कारा।' वे अपने आश्रयदाता की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा करते थे। चारण तथा भाटयों से रचित इस साहित्य के कारण इसे 'चारण काल' भी कहा जाता है। इन कवियों ने अपने आश्रयदाताओं की वीरता का गान तो उत्साह के साथ किया है किंतु उनमें राष्ट्रीय भावना का अभाव ही रहा है।

2. **युद्धों के सुंदर एवं सजीव वर्णनः-** चारण कवि कलम के साथ-साथ तलवार के धनी थे। वे अपने आश्रयदाता के साथ स्वयं युद्धभूमि में जाकर युद्ध में भाग लेते थे। दोनों ओर की सेनाओं के एकत्र होने पर युद्ध के वाद्य, शस्त्रों की झंकार, आक्रमण के लिए उत्साहपूर्ण स्वर आदि के सजीव चित्र इस कविता का योगदान है। युद्ध क्षेत्र का जीता जागता, भव्य, मनोहारी वर्णन इन कवियों की मौलिक विशेषताी है। उदाः-

   'थकि रहे सूर्य कौतिक गगन, रगन भइ सोन घर।

   हरद हरषि वीर जग्गे हुलसि, हुरेउ रंग नव रत्त वर।।'

3. **वीर और श्रृंगार का समन्वयः-** वीरतापूर्ण युद्धों से शांति पाने तथा मन को विश्राम देने के लिए चारण कवियों ने श्रृंगार रस से ओत प्रोत रचनाएँ कीं। इन वीरगाथाओं में कवियोंने स्त्रियों के रूप सौंदर्य का वर्णन किया है। वीरगाथाओं की शोभा बढ़ाने के लिए उन्होंने अपने चरित नायक के विवाह तथा प्रेम आदि का भी वर्णन किया है। वीरों के विलास प्रदर्शन का वर्णन इस काव्य का विशेषता रही है।

   राजस्थान की वीरांगनाओं के जौहर और उनके रण-कौशल से ये कविताएँ आभूषित हैं। इसमें श्रृंगार रस वीररस के सहायक के रुप में आया, क्योंकि प्रायः स्त्रियाँ ही युद्ध का मूल कारण हुआ करती थीं। वीरांगणाओं की ओजस्विता के साथ-साथ उनके अपूर्व सौंदर्य का भी कलापूर्ण वर्णन

इस काव्य में दर्शित होताा है। उदाः- एक राजपूत स्त्री अपनी सखी में कहती है, उस देश में आग लगा दें जहाँ मतवाले योद्धा नहीं घूमते हैं और बहादुर को 'बेचारा' कहा जाता है -

'मतवाला घूमै नहीं, नहीं घायल धारणाय।
बाल सखी उ देशडौ, भड़ बापड़ा कहाय।।'

जिस प्रकार युद्धभूमि पर अपने पति के साथ शौर्य प्रदर्शन करती थीं उसी निर्भयता तथा साहस के साथ पति के वीरगति पाने पर सोलह श्रृंगार करके चितारोहण करने में ही अपने जीवन की सार्थकता मानतीं थीं। युद्ध से हारकर या भागकर आनेवाले पति के लिए वे कहतीं हैं-

'बिण मरियाँ बिण जीतियाँ, जो धव आवै धाम।
पग-पग चूड़ी पाछ दूँ, तो रावत री जाम।।'

4. **ऐतिहासिकता की अपेक्षा कल्पना का प्राचुर्यः-** जहाँ केवल प्रशंसा करना ही कविता का उद्धेश्य रह जाता है वहाँ ऐतिहासिकता की अपेक्षा कल्पना का आश्रय लिया जाता है। अतः रासो काव्य में आश्रित चारण कवियों ने आश्रयदाता राजाओं की वीरता के गान में कल्पना का आश्रय लिया है।

5. **वीरगाथाओं में भावोन्मेष का अभावः-** वीरगाथाओं में वर्णनात्मकता अधिक है। वस्तुओं की सूची तथा सना आदि का वर्णन आवश्यकता से अधिक है। इस वर्णनात्मकता का एकमात्र उद्देश्य नायक की शक्ति तथा वीरता को अभिव्यक्ति करना था अतः कहीं-कहीं ये वर्णन बहुत नीरस हो गए हैं।

6. **भाषा एवं शैलीगत विशेषताएँः-** वीरगाथाएँ दो रुपों में मिलती हैं - प्रबंध काव्य का चरित काव्य में तथा मुक्तक वीर गीतों के रुप में। जहाँ तक चरित काव्य का संबंध है, ये वीरगाथाएँ पूर्ववर्ती जैन अपभ्रंश चरित काव्यों की परंपरा में हैं। 'पृथ्वीराज रासो' एक महान वीरगाथात्मक चरित काव्य है। मुक्तक वीर गीतों का स्वरुप 'बीसलदेव रासो' आदि में दर्शित होता है। वीरगाथाओं की बहुत बड़ी विशेषता प्रबंध काव्य में छंद परिवर्तन की है। 'पृथ्वीराज रासो' के छंद जब बदलते हैं तो श्रोता के चित्त में प्रसंगुनकूल नवीन कंपन उत्पन्न करते हैं। इन रासों काव्य की भाषा डिंगल है जो वीरत्व के लिए अत्यधिक उपयुक्त है। इसमें कठोर व्यंजनों का प्रयोग युद्ध में उत्साह वर्द्धन के लिए किया गया है।

प्रायः चारण काव्य 'रासो' के नाम के अभिहित है। रामचंद्र शुक्ल ने 'रासो' का मूल 'रामायण' शब्द से खोजा है। नरोत्तम स्वामी ने इस शब्द की व्युत्पत्ति 'रसिक' शब्द से मानी है जिसका अर्थ प्राचीन राजस्थानी में कथाकाव्य होता है। 'रासक' नाम का एक रूपक है। 'रासक' एक इक्कीस मात्राओं का छंद भी है। अतः 'रासो' एक महत्वपूर्ण काव्य रुप है। जो राजस्थानी भाषा में रचित चारण कवियों के चरित काव्यों का सूचक है।

वीरगाथाएँ अपने मूल रुप में प्राप्त नहीं है। उनमें से कुछ नोटिस मात्र हैं। कुछ काल, वंशावली वर्णन आदि इतिहास से मेल न खाने के कारण अर्द्धप्रामाणिक हैं।

5. आदिकाल काव्य की रचनाओं की विवेचना कीजिए।

उ. आदिकाल काव्य रचनाएँः-

1. विजयपाल रासो - तल्लसिंह
2. हम्मीर रासो - शांरगधर
3. खुमान रासो - दलपतिविजय
4. परमाल रासो (आल्हखंड) - जगनिक
5. बीसलदेव रासो - नरपति नाल्ह
6. पृथ्वीराज रासो - चंदबरदाई

1. विजयक्माल रासोः- कवि नल्लसिंह ने इसमें राजा विजयपालसिंह तथा पंग राजा के युद्ध का वर्णन किया है। इसकी भाषा परवर्ती अपभ्रंश के समान है। मिश्र बंधुओं ने इसका काल सं.1355 माना है। इस कृति के केवल 42 छंद ही उपलब्ध हैं।

2. हम्मीर रासोः- प्राकृत पैंगलम में इस काव्य के कुछ छंद प्राप्त हैं। इसके कवि शारंगधर रणथभौर के राजा हम्मीर देव के दरबारी कवि थे। उनका आयुर्वेद संबंधी 'शारंगधर संहिता' नामक संस्कृत ग्रंथ प्रसिद्ध है। किंतु यह रचना उपलब्ध नहीं है। यह रचना **14** वीं शती के मध्य मानी जाती है।

3. खुमान रासोः- आचार्य शुक्ल ने इसको नवीं शताब्दी की रचना माना है क्योंकि इसमें नवीं शती के चित्तोड़ नरेश खुमान के युद्धों का वर्णन है। इसमें तत्कालीन राजाओं के सजीव वर्णन, उस समय की परिस्थितियाँ आदि के प्रमाण मिलते हैं। नवीं शती के नरेश खुमान के समकालीन दलपतिविजय

को इसका रचयिता माना गया है। यह पाँच हजार छंदों का विशाल काव्य ग्रंथ है। राजाओं के युद्ध तथा विवाह वर्णनों में उनकी प्रशंसा की गई है। वीररर के साथ श्रृंगार की धारा इसमें प्रवाहित है। इसकी भाषा राजस्थानी हिंदी है। इसमें दोहा, सवैया, कवित्त आदि छंदों का प्रयोग किया गया है। इस ग्रंथ में बाप्पा रावल से लेकर राजसिंह तक का वृत्तांत है। इस काव्य की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं।

'पिउ चितौड़ न आविउ, सावण पहिली तीज।

जोवे बाट बिरहिणी खिण अणवै खीज।।'

4. **परमाल रासो (आल्हाखंड) :-** यह रासो लोक-गेय काव्य माना जाता है। इसके राचयिता जगनिक नामक कवि माने जाते हैं जो महोबा के राज परमंर्दिदेव के आश्रित थे। इस काव्य में आल्हा और ऊदल नामक दो वीर सरदारों की वीरता का वर्णन है। इसका रचनाकाल तेरहवीं शती का आरंभ माना जाता है। युद्धों के प्रभावशाली चित्र इसमें अंकित हैं। परमर्दिदेव ने कनौज नरेश जयचंद की सहायता की थी। जयचंद तथा पृथ्वीराज चौहान में वैमनस्य होने के कारण पृथ्वीराज ने महोबा पर आक्रमण किया। इसमें आल्हा और ऊदल वीरगति को प्राप्त हुए। इस काव्य को पृथ्वीराज रासों में महोबा खंड नाम दिया गया है। इसमें कहा गया है -

'बारह बरस लौ कुकर जीवे, अरु तेरह लौ जिए सयार।

बरस अठारह क्षत्रिय जीवे, आगे जीवन को छिक्कार।।'

युद्धभूमि में वीरोल्लासिनी कविता की अनुगूँज इस प्रकार ध्वनित होती है।

तोपे छूटी दोनों दल में। रण में होन लगे घमसान।

अरर अरर अर गोला छूटे। कड कड करे अगनिया बाण।।

भाषा तथा शैली में परिवर्तन होने के कारण इसे अर्द्धप्रामाणिक रचना माना जाता है।

5. **बीसलदेव रासो :-** यह आदिकाल की महत्वपूर्ण रचना है। इसका रचना काल सं.1212 माना गया है। इसके रचयिता अजमेर नरेश विग्रहराज तृतीय उपनाम बीसलदेव के समकालीन कवि नरपति नाल्ह हैं। इसमें भोज परमार की पुत्री राजमती तथा बीसलदेव के विवाह, वियोग एवं पुनर्मिलन की कथा सरस शैली में प्रस्तुत की गई है। इसके चार खंड तथा सवा सौ छंद हैं। इसमें बारहमासा तथा षट्ऋतु है-

'चैत्र मासई चतुरंगी है नारि।

प्रिय बिण जीविजइ किसई अधारि।'

विषय भाषा तथा शैली में परिवर्तन होने के कारण यह अर्द्धप्रमाणिक रचना मानी जाती है।

6. **पृथ्वीराज रासो और चंदबरदाईः** 'आचार्य रामचन्दर शुक्ल ने चंदबरदाई को हिन्दी के प्रथम महाकवि तथा पृथ्वीराज रासो को प्रथम हिन्दी महाकाव्य माना है। उन्होंने चंद को पृथ्वीराज चौहान का सामंत तथा राजकवि माना है। चंदबरदाई का जन्म लाहोर में 1168 में हुआ था। वे भट्ट जाति के जगान नामक गोत्र के थे। वे षट्भाषा, व्याकरण, काव्य, छंदरशास्त्र, ज्योतिष, पुराण आदि में प्रवीण थे। वे सभा, युद्ध, आखेट तथा यात्रा में सदैव पृथ्वीराज के साथ रहते थे। उनकी तथा पृथ्वीराज को मुहम्मद गोरी गजनी ले गया था तब चंदबरदाई ने अपने पुत्र जल्हण को ग्रन्थ पूर्ण करने का कार्य सौंप दिया तथा गजनी की ओर प्रयाण किया।

गजनी पहुँच चंदबरदाई ने पृथ्वीराज चौहान को मुक्त करवाने के लिए शब्द भेदी बाण पृथ्वीराज द्वारा चलाने की योजना बनाई। उसमें गोरी की मृत्यु हुई। तत्पश्चात् दोनों ने आत्मोत्सर्ग किया।

पृथ्वीराज रासो - अबू में एक यज्ञ हुआ उससे चार क्षत्रिय कुलों की उत्पत्ति हुई चौहान, तोमर, गृहलोत तथा सोलंकी। अतः चौहान अग्निवंशी माने जाते हैं। अजमेर में चौहान, दिल्ली में तोमर तथा कनौज में गहरवारों का राज्य था। अजमेर में अर्णोराज के पश्चात् उनके पुत्र सोमेश्वर राजा बने। उनका विवाह दिल्ली के तोमर राजा अनंगपाल की पुत्री कमला से हुआ। उनके पुत्र का नाम पृथ्वीराज था। राजा अनंगपाल की दूसरी पुत्री सुंदरी का विवाह कनौज के राजा विजयपाल से हुआ। उनके पुत्र का नाम जयचंद था। राजा अनंगापाल ने पृथ्वीराज को गोद लिया अतः वह अजमेर तथा दिल्ली का शासक बना। इसके कारण जयचंद के मन में वैमनस्य की भावना उत्पन्न हुई। उसकी पुत्री संयोगिता के स्वयंवर में पृथ्वीराज को आमंत्रित नहीं किया गया। उसे अपमानित करने के लिए द्वार पर द्वारपाल के रुप में उसकी प्रतिमा स्थापित की गई। संयोगिता की वरमाला स्वीकार करने के लिए पृथ्वीराज का अकस्मात् आगमन के प्रतिक्षोध के रुप में जयचंद ने गोरी से संधि की। गोरी ने सात बार अजमेर पर आक्रमण किया किंतु वह उसमें पराजित हुआ। जयचंद ने घर का भेदी बनकर छल से गोरी को भेद बताया। जिससे पृथ्वीराज को बंदी बनाया गया तथा गजनी ले जाकर उसकी नेत्रज्योति को नष्ट किया गया।

काव्य सौंदर्य - काशी नगरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित यह ढाई हजार पृष्ठों का विशालप ग्रंथ है। यह एक महाकाव्य है जिसका नायक पृथ्वीराज चौहान है। इसके 69 सर्ग हैं जिसे समय कहा गया है। इसमें पृथ्वीराज की वंशावली, जीवन, युद्ध, विवाह आदि का प्रभावी चित्रण किया गया है। इसमें चंदबरदाई स्वयं कलम और तलवार के धनी होने के कारण युद्धभूमि पर पृथ्वीराज की वीरता के अनेक चित्र उन्होंने साकार किए हैं। इसमें उनकी स्वामिनिष्ठा तथा आदर दर्शित होता है। वीररस के साथ विवाह आदि अवसरों का जो वर्णन किया गया है उसमें वस्तु वर्णन में नगरों, वनों, सरोवरों तथा किलों का भव्य चित्रण किया गया है। यह पिंगल शैली में लिखा गया है तथा इसमें कवित्त, सवैया, छप्पय,दोहा आदि छंदों का प्रयोग किया गया है।

6. अन्य आक्षेपों की समीक्षा के बारे में संक्षिप्त वृत्तांत लिखिए।

उ. **अन्य आक्षेपों की समीक्षा -** शाहबुद्दीन गोरी के सात बार हराये जाने के सम्बन्ध में मिश्रबन्धुओं का कहना है कि सम्भवतःमुसलमान इतिहासकारों ने ये घटनाएँ अपनी हीनता छिपाने के लिए न लिखी हों। आचार्य शुक्ल का मत रायबहुदुर गौरीशंकर हीराचन्द से मिलता है। उनका विचार है कि चन्द नाम को कोई कवि पृथ्वीराज के पुत्र या उनके किसी वंशज के यहाँ रहा होगा। उसने अपने आश्रयदाता के पूर्वजों की प्रशंसा में कुछ छन्द लिखे होंगे। उसमें और छन्द मिलाकर एक ग्रन्थ तैयार हो गया और चन्द को पृथ्वीराज का समकालीन बतलाकर वह ग्रन्थ उनके नाम से प्रख्यात कर दिया गया।

बाबू श्यामसुन्दर दास चन्द को पृथ्वीराज का समकालीन होना मानते हैं, और यह भी मानते हैं कि उसने कुछ छन्द रचे होंगे जो बहुत से प्रक्षिप्त छन्दों से मिलकर वर्तमान ग्रन्थ के रुप में आ गये। अब यह जानन कठिन है कि कितना अंश प्रक्षिपत है और कितना मूल। मिश्रबन्धु भी पाण्ड्या जी के मत का समर्थन करते हुए कहते हैं कि यह बात विचार में नहीं आती की कोई कवि एक कल्पित कवि के नाम से ढाई हजार पृष्ठ का एक ग्रन्थ रचकर खड़ा कर दे, क्योंकि अपने परिश्रम का यश दुसरे को देना सहज कार्य नहीं है। रासो के पक्ष में यह भी कहा जाता है कि उसमें अधिकांश वर्णन वर्तमान काल के रुप में आये हैं, जिससे प्रकट होता है कि उसका लिखने वाला कवि समकालीन ही है। ओझा जी ने भाषा के सम्बन्ध में जो आपत्ति उठायी है वह यह है कि रासो में प्रायःदस प्रतिशत फारसी-अरबी के शब्द आये हैं और पृथ्वीराज के समय फारसी के शब्दों का इतना प्रचार नहीं था। इस सम्बन्ध में बी मिश्रबन्धुओं का कथन है कि मुसलमान बहुत काल पहले से भारतवर्ष में आये हुए थे, और चन्द लाहौर में रहते रहने के कारण मुसलमानों की भाषा

से भलीभाँति परिचित ते। वास्तव में रासों में कई स्तर की भाषा है --- कुछ प्राचीन है और कुछ नीवन, और कहीं-कहीं प्राचीन का-सा आभास है। यह इस बात को द्योतक है कि समय-समय पर इसमें प्रक्षेप होते रहे हैं।

चन्द के वंशज नानूराम ने पं. हरिप्रसाद शास्त्री को रासो की एक प्राचीन प्रति दिखलायी थी,जिसको वे संवत् **1455** की लिखी बतलाते हैं। किन्तु उस ग्रन्थ की पूरी-पूरी जाँच नहीं हुई, और जो कुछ जाँच हुई है, वह उसकी प्रमाणिकता में सन्देह उत्पन्न करती है।

7. डिंगल साहित्य की समाप्ति कब हुई थी? लिखिए।

उ. डिंगल साहित्य की वीरगाथाकाल से ही सम्माप्ति नहीं हो जाती। वैसे तो राजस्थान में डिंगल मिश्रित ब्रजभाषा साहित्य की भी वृद्धि हुई है। मीरा, दादू, सुन्दरदास आदि सन्त कवि राजस्थान में ही हुए हैं। यद्यापि डिंगल साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाले बहुत-से कवि वीरगाथा काल में हुए तथापि उनमें से दो (पृथ्वीराज तथा सूर्यमल्ल मिश्र) का यहाँ और उल्लेख कर देना चाहते हैं -- एक मध्यकाल में हुए और दूसरे उत्तर काल में।

पृथ्वीराज - बीकानेर के राजा राजसिंह के भाई थे, और इनका जन्म मार्गशीर्ष सं. **1606** में हुआ था। चन्द की भाँति ये जैसे खड़-शूर थे, वैसे ही लेखनी -शुर भी थे। इन्होंने वीर और श्रृंगार, दोनों ही रासों को अपनाया था। इनकी गणना भक्तों में भी है। नाभादस जी ने इनके सम्बन्ध में लिखा है:

रुक्मिणी लता वर्णन अनुप, बागीसबदन कल्याण सुव।

नरदेव उभय भाषा निपुण, पृथ्वीराज कविराज हुव।।

यद्यापि इन्होने बहुत-सी स्फुट रचनाएँ की हैं, तथापि 'बोलि क्रिसन रुकमणी री' इनका प्रधान ग्रन्थ माना जाता है। यह एक खण्डकाव्य है। इसमें श्रीकृष्ण का रुक्मिणी के साथ प्रेम, विवाह आदि का सुन्दर वर्णन है। इसमें प्रकृति-वर्णन भी अच्छा हुआ है। इसकी कथा प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध के जन्म तक चलती है। इसमें 'बोलियों गीत' छन्द का प्रयोग है। इसी से इसके नाम में बोलि शब्द का प्रयोग है। इसकी भाषा साहित्यिक डिंगल है और इसमें अलंकार, लालित्य, भाव-सुकुमारता आदि साहित्यिक गुण भी हैं। इसको पाँचवाँ वेद कहा गया है।:

'पाँचमौं वेद भाख्य पीथल'

सूर्यमल्ल मिश्र - इनका जन्म संवत् **1772** में हुआ था। ये बूँदी के रहने वाले थे। इनका मुख्य ग्रन्थ 'वंश भास्कर' है जिसमें राजूपतों और विशेषकर बूँदी के राजाओं का इतिहास है। इस ग्रन्थ के ऐतिहासिक अंश में कुछ विद्वान अत्युक्तियाँ बतलाते हैं। इनकी 'वीर सतसई' वीर रस का एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है। एक उदाहरण देखिए।

अठै सुजस प्रभुता उठै, अवसर मरिया आय ।

मरणौ धारे माझियाँ, जम नरका लै जाय ।।

(जो अवसर पर अर्थात् देश की रक्षा में मारे जाते हैं, उनके लिए यहाँ सुयश और परलोक में प्रभुता है, और जो घर पर मर जाते हैं इनको यमराज तरक में ले जाते हैं।)

8. वीरगाथाकाल के कुछ अन्य प्रमुख कवियों का संक्षिप्त में परिचय दीजिए।

उ.

1. **गुरु गोरखनाथ -** ये नाथ साहित्य के प्रारम्भकर्ता थे। इनका समय **902** वि. माना जाता है। कुछ विद्वान इनका समय ग्यारहवीं तो कुछ तेरहवीं शती मानते हैं। इनके गुरु का नाम मत्स्येन्द्र नाथ था। इनकी मुख्य रचनाएँ है - पद, सबदी, अभैमात्रा जोग, आत्मबोध, सप्रवार, रामावली, ग्यान चौंतीसा आदि। इनकी रचनाओं में गुरु महिमा, इन्द्रिय निग्रह, वैराग्य, कुण्डलिनी जागरण, शून्य समाधि का मुख्यतः वर्णन मिलता है। नीति और साधना की व्यापकता इनकी रचनाओं का आधार था। इन्होंने सिद्धों के स्वैच्छाचार के विरुद्ध संयम, इन्द्रिय-निग्रह और हठयोग का प्रतिपादत किया। बाद में कबीर आदि संत -कवियों पर इनका व्यापक प्रभाव पड़ा। तात्कालिक जनता पर गुरु गोरखनाथ का बड़ा प्रभाव पड़ा था।

2. **ढोला मारु र दोहा -** ग्यारवहीं शती में रचित इसलोक भाषा काव्य में ढोला नामक राजकुमार और मारवाणी नामक राजकुमारी की प्रेमकथा को सरसता से काव्यबद्ध किया गयाा है। वीरगाथा काल में यह काव्य श्रृंगार की सिरमौरता की घोषणा--सा करता प्रतीत होता है।

3. **वसंत विलास -** यह श्रृंगार प्रधान सरस रचना मानी जाती है। इसका रचनाकाल **1457** वि. के लगभग माना जाता है। इसके रचनाकार के बारे में प्रामाणिक तौर पर अभी पता नहीं चल पाया है।

4. **संदेसरासक -** इसके रचयिता अब्दुल रहमान माने जाते हैं जो मुलतान वासी थे। यह ग्यारहवीं शती की रचना मानी जाती है। मुलतान गये हुए अपने पति के लिए एक विरहिणी एक पथिक द्वारा जो संदेश भेजती है, उसमें नाना ऋतुओं में उसकी विरह-दशा का मार्मिक चित्रण हुआ है।

5. **मुल्ला दाउद -** डा. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल से पूर्व मिश्रबंधुओं ने भी इसका उल्लेख किया है। इसका रचना काल सं. **1375** के आसपास माना जाता है। ड़ा. रामकुमार वर्मा ने इसका नाम 'नुरक और चंदा की प्रेमकथा' दिया है और यह भी सरस समधुर प्रेमकथा। वीरगाथाकाल में विशुद्ध प्रेमकथा की स्थिति प्रेम की शाश्वत सत्ता को प्रमाणित करती है।

9. डिंगल और पिंगल के सम्बन्ध में उपलब्ध विभिन्न मतों की परीक्षा कीजिए और डिंगल तथा पिंगल के अन्तर को भी स्पष्ट कीजिए।

उ. राजस्थानी भाषा के साहित्यिक रुप को डिंगल कहा जाता है। राजस्थानी हिन्दी की एक अपभाषा है। राजस्थानी की भी मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती आदि अनेक बोलियाँ है। राजस्थानी का अधिकांश साहित्य मारवाड़ी में है। इसी मारवाड़ी का दूसरा नाम डिंगल है। इस राजस्थानी भाषा का नाम डिंगल क्यों पड़ा, इस विषय में विद्वानों के विभिन्न मत हैं। इन मतों का उल्लेख निम्नलिखित रुप में किया जा सकता है -

1. डॉ. एल. पी. टैसीटरी के मत से 'डिंगल' शब्द का असली अर्थ अनियमित अथवा गँवारु था। ब्रजभाषा परिमार्जित थी और साहित्य -शास्त्र के नियमों का अनुकरण करती थी। पर डिंगल इस सम्बन्ध में स्वतन्त्र थी। इसलिए इसका यह नाम पड़ा।

   समीक्षा - वस्तुत : डिंगल सुशिक्षित चारण-भाटों की भाषा थी। द्वितीय, राजदरबारों में इसका ब्रजभाषा से अधिक सम्मान था। अतः शिष्ट-समुदाय की भाषा गँवारू नहीं कही जा सकती। इसके अतिरिक्त उनका यह कहना कि डिंगल अनियमित थी, उचित नहीं। यह व्याकरण के नियमों से सर्वथा मुक्त नहीं थी। छन्द, रस, अलंकार, ध्वनि आदि का इसमें उतना ही ध्यान रखा जाता था, जितना कि ब्रजभाषा में। हां, शब्दों की तोड़-मरोड़ अवश्य इसमें ब्रजभाषा से अधिक थी, किन्तु केवल इसी आधार पर डिंगल को गँवारू कहना शोभा नहीं देता। अतः कहा जा सकता है कि डिंगल का अर्थ न तो गँवारू भाषा है और न वह अनियमित थी।

2. पं. हरप्रसाद शास्त्रि ने डिंगल का प्रारम्भिक नाम डगल स्वीकार किया है। उनके मतानुसार डगल शब्द का बाद में पिंगल से तुक मिलाने के लिए डिंगल कर दिया गया। डगल शब्द का अर्थ है

'उजाड प्रदेश' अथवा 'मरुस्थल'। मरुभूमि की भाषा होने के कारण तथाकथित डिंगल भाषा को 'डगल' कहा जाता था। चौदहवी शताब्दी में रचित निम्नांकित छन्द के आधार पर शास्त्रीजी ने अपना मत स्थिर किया है -

दीसें चंगल डगल जेथ जल बगलां चाटे।
अणहूंता गल दियै, गल हूंता गल काटै।

समीक्षा - शास्त्रीजी ने इस छन्द का अर्थ नहीं दिया। केवल इतना ही कहा है कि इससे स्पष्ट है कि जंगल देश अर्थात् मरु देश की भाषा डिंगल कहलाती थी। भाषा और रचना-शैली की दृष्टि से भी यह छन्द सोलहवीं शताब्दी का प्रतीत होता है। किन्तु यदि इसे चौदहवीं शताब्दी का मान भी लिया जाय तो यह प्रश्न खड़ा होता है कि प्रारम्भ में डिंगल का नाम डगल क्यों था? राजस्थानी भाषा में डगल शब्द का अभिप्राय मिट्टी का ढेला या अनगढ़ पत्थर है। यदि डिंगल भाषा अनगढ़ एवं अव्यवस्थित थी तो किस सुव्यवस्थित और परिमार्जित भाषा की तुलना में इसे यह संज्ञा प्रदान की गयी, क्योंकि ब्रजभाषा का साहित्यिक प्रौढ़ रुप **14** वीं शती तक नहीं बन पाया था और फिर चारण-कवि अपनी उदर-पूर्ति का साधन साहित्यिक भाषा को डगल या अनगढ़ कैसे कह सकता था? अर्थात् नहीं।

3. श्री गजराज ओझा के मत में डिंगल भाषा के नामकरण का आधार इसमें उपलब्ध होने वाली 'डाकर' वर्णों की प्रचुरता है। फिर पिंगल के आधार पर इसका नाम डिंगल रखा गया। जिस प्रकार पिंगल अलंकार-प्रधान है उसी प्रकार डिंगल डकार प्रधान है।

समीक्षा - ओझाजी का यह मत भी युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता। प्रथम तो डिंगल भाषा में सर्वत्र 'ड' वर्ण की प्रचुरता नहीं पायी जाती। द्वितीय, भाषा-विज्ञान के समग्र इतिहास में एक भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा, जहाँ किसी 'वर्ण' विशेष के आधार पर किसी भाषा का नामकरण हुआ है। पिंगल के साम्य पर 'डिंगल' नाम की कल्पना भी वैज्ञानिक प्रतीत नहीं होती। वस्तुतः डिंगल भाषा पिंगल से अधिक प्राचीन है।

4. पुरुषोत्तम स्वामी ने डिंगल शब्द की व्युत्पत्ति डिम + गल से मानी है। डिम का अर्थ डमरु की ध्वनि और गल का अर्थ गला होता है। डमरु की ध्वनि रणक्षेत्र में वीरों का आहान करती है। डमरु वीर रस के देवता रुद्र (महादेव) का बाजा है। जो कविता गले से निकलकर डिम डिम की तरह वीरों के हृदय को उत्साह से संचरित कर दे उसी को डिंगल कहते हैं।

समीक्षा - वस्तुतः यह मत भी निराधार ही सिद्ध होता है। महादेव वीररस के नहीं, रौद्ररस के देवता है और उनके डमरू ध्वनि भी उत्साहवर्धक नहीं मानी ।

5. राजस्थान में प्रचलित मत के अनुसार डिंगल शब्द की उत्पत्ति 'डिम + गल' से मानी जाती है। डिम का अर्थ बालक और गल का अर्थ गला है। इस प्रकार डिंगल का अर्थ बालक की भाषा है। जैसे प्राकृत किसी समय बाल-भाषा कहलाती थी वैसे ही डिंगल भी डिम गल कहलायी।

समीक्षा - वस्तुतः इस मत में कोई सार नहीं है। केवल क्लिष्ट कल्पना ही इसका आधार है और फिर चारण-कवियों की परिमार्जित साहित्यिक भाषा को बाल-भाषा के हीन पद से अभिहित करना अनुचित है।

6. श्री उदयराजजी का कहना है - ''डिंगल के कवि पिंगल को पागलों (पंगु) भाषा मानते हैं और पिंगल के मुकाबले डिंगल को उड़ने वाली भाषा कहते हैं। पिंगल का व्याकरण, छन्द-शास्त्र आदि सुगम हैं। डगल शब्द से जो डिंगल भाषा की उक्त विशेषताओं का सूचक है, 'डिंगल' शब्द बना है। डग = पंख, ल = लगे हुए = पंग वाली = उड़ने वाली = स्वतन्त्रता से चलने वाली अर्थात् सुगमता से काम में आने वाली।''

समीक्षा - वस्तुतः यह मत भी अवैज्ञानिक तर्कों पर स्थित है। डिंगल भाषा का व्याकरण और छन्दशास्त्र अपेक्षाकृत क्लिष्ट है। डिंगल तत्कालीन दूसरी काव्य भाषा पिंगल से किसी भी रूप में सरल नहीं है। तदतिरिक्त 'डगल' शब्द से डिंगल की उत्पत्ति मानना भाषा शास्त्र की दृष्टि से त्रुटि पूर्ण है।

2. भक्तिकाल

1. भक्तिकाल के बारे में लिखिए।

उ. यह काल भक्तिपरक रचनाओं और समाज-सुधार की सूक्तियों से पूर्ण काव्य-रचना का काल है। वीरगाथाओं की रचना एकदम बन्द नहीं हो गई थी, फिर भी मुख्य धारा भक्ति-काव्य की ही थी।

आदिकाल एक प्रकार के लड़ाई-झगडे का युग था। उसमें आशान्ति थी, और एक प्रकार की राजनीतिक आँधी चल रही थी। किन्तु आँधी हमेशा नहीं रहती, आँधी के बाद शान्ति और स्थिरता आती ही है। भारतवर्ष के राजनीतिक वातावरण में भी अपेक्षाकृत शान्ति उपस्थित हुई और लोगों को दम लेने की फुरसत मिली। जपूती वीरता का ह्रास हो चुका था, और लोग जैसे-तैसे अपनी परिस्थिति से अनुकूलता प्राप्त करते जाते थे। राजपूतों में जब तक कुछ शक्ति थी, हिम्मत और साहस था, तब तक वीरगाथाओं की रसायन से थोड़ा-बहुत काम चला, किन्तु बल के क्षीण होने पर भी उत्साहर प्रदान से भी कोई काम नहीं चलता। दीपक बुझ जाने पर तेल देने से कतई लाभ नहीं होता - 'निर्वातदीपे किमु तैलदानम।'

रामचन्द्र शुक्ल ने भक्ति कविताओं की इस व्यापकता के पीछे विदेशी शासकों द्वारा उत्पीड़ित जनता के हाहाकार और कातरता को उत्तरदायी माना है। किन्तु हजारीप्रसाद द्विवेदी की मान्यता है कि उन दिनों भारतीय जनता उतनी कातर नहीं थी जितना समझा जाता है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि भक्ति के सभी आन्दोलन दक्षिण भारत में जन्मे जहाँ तब भी विदेशी शासकों का वर्चस्व नहीं हुआ था। स्वतः हिन्दू जाति में अपने गौरव को प्राप्त करने की चेतना विकसित हो रही थी और भक्ति के माध्यम से हिन्दू जाति के अन्दर कठोर होते हुए वर्ण-भेद को तोड़ने की चेष्टा शूद्र कही जानेवाली जातियाँ कर रही थी।

युद्ध के समय वीरगाथाओं का काव्य में अपना महत्व स्वाभाविक ही था, किन्तु शान्ति के समय एक दूसरे ही प्रकार के काव्य की आवश्यकता थी। मुसलमान लोग भी युद्ध से ऊब गये थे। वे चाहते थे कि उनका धर्म ऐसे रुप में आये कि मुसलमान लोग उसका खण्डन न कर सकें। इतना ही नहीं, यदि सम्भव हो तो विरोध छोड़कर उनके साथ मिलें। मुसलमानों की भी यह इच्छा थी कि वे हिन्दूओं के निकट आयें। इसी प्रकार, तत्कालीन जनता में दोनों ओर से मिलने की प्रवृत्ति चल रही थी।

इसके अतिरिक्त,एक प्रवृत्ति और भी रही। कुछ लोग अपना स्वत्व और धार्मिक व्यक्त्वि अलग रखना चाहते थे। ये लोग मुसलमानों के विरोधी नहीं थे। वे सारे संसार को 'सियाराम मय' जानकर 'जोरि जुग पानी' प्रणाम करने को तैयार थे, किन्तु ऐक्य की वेदी पर अपने इष्टदेवों के प्रति अपनी अनन्य भावना का बलिदान नहीं करना चाहते थे। मृतप्राय हिन्दू जाति में भक्ति के द्ारा एक नवीन जीवन का संचार करना उनका अभीष्ट था। देश में चारों ओर सगुण भक्ति का आन्लोलन चल रहा था, उससे उनकी हृदय-स्त्री झंकृक हो उठी। जो उपदेश रामनुजाचार्य, वल्लभाचार्य चैतन्य महाप्रभु, तुकाराम आदि सन्तों और महात्माओं ने जनता को दिये थे, वे अब सूर और तुलसी की काव्यमयी धारा में एक नवीन रुप में अवतरित हुए।

इस विवेचना का यह अभिप्राय न समझा जाय कि हिन्दी का भक्तिकाल मुसलमानों से प्रभावित है। हमारे कवियों ने सामाग्री तो अपने घर से ही ली -- हाँ, उसको कुछ उत्तेजना मुसलमाानों से अवश्य मिली। उस समय की परिस्थितियों में मुसलमानों के अस्थितवि की अवहेलना नहीं की जा सकती थी।

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि हार की मनोवृत्ति में दो ही बातें होती हैं ---- यो तो मनु,द्दय उन बातों में प्रवृत हो, जिनमें उसकी श्रेष्टता अभुण्ण बनी हुई है। एक ओर की श्रेष्ठता दूसरी ओर की गिरावट की क्षति-पूर्ति कर लेती है। ऐसी परिस्थिति में दूसरी प्रवृत्ति यह होती है कि विजेताओं के हास-विलास में शामिल होकर एक प्रकार की समता का अनुभव कर खोये हुए स्वाभिमान को भूल जायें। अथवा स्वतन्त्र रुप से हास-विलास की मादकता में अपने पराजयजन्य दुःख को विलीन कर दें - यह तीसरी प्रवृत्ति भी परिलक्षित होती है।

2. भक्तिकाल की सामान्य विशेषताओं के बारे में लिखिए।

उ. हार की मनोवृत्ति में दो ही बातें सम्भव थीं --- या तो अपनी आध्यात्मिक श्रेष्ठता दिखाना, या विलास में पड़कर हार को भूल जाना। भक्तिकाल में पहली प्रवृत्ति रही, और रीतिकाल में दूसरी। भक्तिकाल में चार शाखाएँ अवश्य थीं, किन्तु उनमें कुछ समान भावनाएँ थी, जिनके कारण ये सब एक सम्मिलित नाम से पुकारी जा सकती हैं।

स्वांतःसुखाय भावना - सन्त और भक्त दोनों ही प्रकार के कवियों ने राज्यश्रय की परवाह नहीं की, और उन्होंने जो कुछ भी लिखा वह सब स्वान्तः सुखाय लिखा। कबीर ने मुसलमान शासकों के धर्म की पर्याप्त भर्त्सना की। जायसी ने 'बादशाहे-वक्त' (अपने समय के बादशाह) की स्तुति की अवश्य, किन्तु 'मसनवी' (फारसी ढंग की एक काव्य-विधा) की मर्यदा-पालन मात्र के ही अर्थ। अष्टछाप के कवियों ने सन्तन को कहा सीकरी सों काम कहकर राज्यश्रय को ठुकराया।

नाम की महत्ता - जप, कीर्तन आदि सन्तों, सूफियों और भक्तों में समान रुप से मान्य हैं। महात्मा कबीर नाम को रसायनों में उत्तम समझते हैं - ''सभी रसायन हम करी, नहीं नाम सम कोय'' सूफियों और कृष्णभक्तों में कीर्तन का प्राधान्य रहा है, सूर ने गाया है - ''भरोसौ नाम कौ भारी।''

तुलसी ने भी राम के नाम को राम से भी बड़ा माना है। नाम में निर्गुण और सगुण, दोनों का समन्वय हो जाता है। देखिएः

अगुन सगुन दुइइ ब्रह्मा सरुपा। अकथ अगाध आनदि अनूपा ।।

मोरे मत बढ़ नाम दुहूँते। कियो जोहि जोहि जुग निज बस निज बूते।।

गुरु की मान्यता - कबीर ने गुरु को गोविन्द से भी बड़ा कहा है -- ''गुरु हैं बड़े गोविन्द से मन में देख विचार'' जायसी ने भी गुरु की वन्दना की है। तुलसी ने 'मानस' के आरम्भ में 'बन्दउँ गुरु पद पदुम परागा'' और सूर ने ''वल्लभ नख चन्दर छटा बिन सब जग माहिं अन्धेरो'' गाया है।

भक्ति-भावना का प्रधान - चारों सम्मप्रदायों में भक्ति-भावना का मान है। कबीर ने भी भक्ति को मुख्यता दी है - ''हरि भक्ति जाने बिना बूड़ि मुआ संसार''। प्रेममार्गियों का प्रेम भी भक्ति का ही रुप है, और भक्त तो भक्त हैं ही। भक्तों ने भी ज्ञान का विरोध नहीं किया, केवल भक्ति -विरोधी ज्ञान का खण्डन क्यिा है। सूरदासजी गोपियों द्वारा उद्धव को कहलाते हैं -----''बार-बार यह बचन निबारों, भक्ति-विरोधी ज्ञान तिहारो''। तुलसी तो समन्वयवादी थे ही। वे ज्ञान और भक्ति में कोई भेद नहीं बतलाते हैं---'' ज्ञानहिं भक्तिहिं नाहिं कुछ भेदा,उभय हरहिं भव सम्भव खेदा''। हाँ, ज्ञान को उन्होंने कठिन अवश्य बताया है ---''ज्ञान कठिन प्रत्यूह अनेका''। ज्ञान और भक्ति का समन्वय करते हुए तुलसीदासजी ने भक्ति को प्रधानता दी है। भक्ति को चिन्तामणि कहा है और ज्ञान को दीपक, जो माया की हवा में बुझ जाता है।

शास्त्र -ज्ञान की अपेक्षा निजी अनुभव पर विशेष बल - कबीर ने तो 'ढाई अक्षर प्रेम' को महत्ता देते हुए पोथियों के ज्ञान को निरर्थक कहा है --- पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पण्डित् भया न कोय।'' तुलसी ने भी केवल 'वाक्य-ज्ञान' को अपर्याप्त समझ है --- ''वाक्य ज्ञान अत्यन्त निपुण , भव पार न पावे कोई (विनय-पत्रिका)। '' सूर की गोपियाँ भी प्रेम के निजी अनुभव को ही प्रधानता देती हैं।

अहंकार का त्याग - यह भी भक्ति का ही दूसरा रुप है। सच्चा भक्त चाहे सगुणवादी हो चाहे निर्गुणवादी, अहंकार नहीं रख सकता। तुलसी के राम निरभिमानी हैं और रावण ब्राह्मण होते हुए भी अहंकारी होने से नशा को प्राप्त होता है।

साधु-संगीत की महिमा - ब्रह्म के निर्गुण और सगुण रुप मानने वाले सन्त और भक त, दोनों ही प्रकार के कवियों ने सत्संग को विशेष महत्व दिया है ---''कबिरा संगति साधु की हरै और की व्याधि। संगति बुरी असाधु की आठों पहल उपाधि।'' सूर ने भी कहा --- ''तजौ रे मन हरि विमुकनि कौ संग।'' रामचरितमानस तो सत्संग की महिमा से भरा पड़ा है।

उच्चतर लक्ष्य के साधक - इन भक्त कवियों का लक्ष्य भगवत्-प्राप्ति होते हुए भी उसकी प्राप्ति के अलग-अलग साधन ही उनके भक्ति मार्ग थे।

सत्य, अहिंसा, त्याग जैसे उच्चादर्शो का गान - ये भक्तिमार्गो कवि सत्य, अहिंसा, त्याग जसे उच्चादर्शो के प्रति समार्पित थे। अपनी भक्ति-भावना को न केवल वे कविताओं में व्यक्त करते थे, बल्कि एक संत भक्त जैसे उनके अपने जीवन में आचरण भी थे।

3. भक्तिकाल की राजनीतिक परिस्थितियों के बारे में लिखिए।

उ. भक्तिकाल के प्रथमार्द्ध में दिल्ली पर तुगलक एवं लोधी वंश के मुसलमानों का शासन था और उत्तरार्द्ध में मुगल वंश के बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगिर तथा शाहजहाँ का शासन था। मुहम्मद गोरी के कारण भारत में अनेक प्रदेशों पर तुर्को की सल्तनत स्थापित हुई। अलाउद्दीन खिलजी आदि सुलतान साम्राज्य विस्तार में सफल हुए किंतु उसके अन्य उत्तराधिकारी अपना अधिकार स्थापित न कर सके। राज्य की शक्ति प्रांतीय शासकों के द्वारा वर्द्धित हुई। राजस्थान में मेवाड़ की उन्नति हुई। मालवा, गुजरात, बंगाल, तिरहुत, बुंदलखंड, उड़ीसा आदि स्वतंत्र राज्य थे। पंद्रहवीं शती के मध्य में पठानों ने दिल्ली पर आधिपत्य स्थापित किया। किंतु वे पठान साम्राज्य नहीं बना सके। सोलहवीं शती के मध्य् बाबर ने आक्रमण कर मुगल सल्लतन की नींव डाली। उसने मेवाड़ के राणा सांगा को पराजित कर कुछ समय तक सूरी साम्राज्य की स्थापना की। इसके पश्चात् अकबर पुनःदिल्ली का सम्राट बना और मुगल साम्राज्य की जड़ें गहरी हो गई। अकबर का प्रतिरोध महाराणा प्रताप ने सफलतापूर्वक किया। शाहजहाँ के शासन के अंतिम काल में बुंदेलखंड में चंपतराय और महाराष्ट्र में शिवाजी ने स्वतंत्रता के लिए प्रयास किए।

इस प्रकार भक्तिकाल में अनेक विदेशी आक्रमण उत्तरी भाग में होते रहे। राजपूत, मराठे तथा अन्य हिंदू शासकों ने इसका प्रतिरोध करने का प्रयास किया। इस युग के मुस्लिम शासकों ने हिंदू जनता पर अत्याचार किए। इसका प्रतिबिंब तुलसी की रचनाओं में दर्शित होता है। उदाः

गोंड, गंवार, नृपाल महि जवन महामहिपाल
साम न दाम न भेद कलि, केवल दंड कराल।।

सामाजिक परिस्थितियाँः- भक्तिकाल में मुगल शासन से निरंतर संघर्ष करते हुए जनता हतोत्साहित हो गयी थी। बादशाह तथा सामंत अत्यधिक विलासी थे। इसके कारण हिंदुओं में पर्दा-प्रथा तथा बाल-विवाह का प्रचलन हुआ। इस युग में हिंदुओं में उच्च्य-नीच का भेद आया। जाति पाँति के बंधन अधिक कठोर होते जा रहे थे। कबीर आदि संतों ने 'जाति पाँति पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई' के विचारों के द्वारा इसका विरोध किया। सांमती संस्कृति में समाज शोषक और शोषित वर्ग में विभाजित हुआ। निम्न वर्ग दीनतापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा था क्योंकि वह जीविकाहीन था। तुलसी ने कवितावली में इसका यथार्थ चित्रण किया है।

'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि।
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका-विहीन लोग सीद्यमान सोच बस।
कहैं एक एकन सों, कहाँ जाई, का करी?

कबीर ने निम्न वर्ग व्याप्त दीनता की भावना को दूर कर एक समान युग धर्म की स्थापना की तथा सामाजिक रूढ़ियों का खंडन किया।

निरधन सरधन दोउ भाई, प्रभु की कला न मोटि जाइ।
कहै कबीर निरधन है सोइ जाकै हिरदय राम न होइ।।

उस समय नारियों की बड़ी हीन दशा थी। उन्हें मात्र भोग्य या विलासिता का साधन माना जाता था। उन्हें सामाजिक अधिकार प्राप्त नहीं थे, सती प्रथा का प्रचलन था। तत्कालीन समय में हिंदू, मुसलमानों के मध्य धर्म भेद तथा वैमनस्य का विरोध कबीर आदि ने किया।

धार्मिक परिस्थितियाँः- भक्तिकाल में मुसलमानों ने इस्लाम का प्रचार-प्रसार तलवार के बल पर किया था। इससे हिंदू धर्म अत्यधिक प्रभावित हुआ। उनके मंदिरों को ध्वस्त कर, देवी-देवताओं की मूर्तियों को तोड़ा गया। उस समय अनेक पंथों का निर्माण हुआ था। इसके कारण सामान्य जनता दिग्भ्रमित हुई थी। तुलसी ने रामचरितमानस में लिखा है -

कलिदास ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ।

दंभिह्य निज मति कल्पि करि, प्रकट किए बहु पंथ।।

उस समय बौद्ध धर्म के दो भेद थे - महायान तथा हीनयान। महायान में तंत्र-मंत्र, वशीकरण तथा चमत्कार प्रधान क्रियाओं की प्रबलता बढ़ी। इसके अतिरिक्त सिद्धों की वामाचार पद्धति से जनता अंधविश्वास की ओर उन्मुख हो रही थी। उस समय नाथ पंथ का भी प्रभाव था। आंतरिक संघर्षों से जर्जर हिंदू समाज अनेक धार्मिक संप्रदायों में विभाजित था। उसमें तीन संप्रदाय प्रमुख थे- वैष्णव, शैव और शाक्त। उनमें भी परस्पर मतभेद था। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने दक्षिण की सुदृढ़ वैष्णव भक्ति की परंपरा से उत्तरी भारत की वैष्णव भक्ति का उद्‌भव माना है।

भक्ति द्राविड़ ऊपजी लाए रामानंद।

परगट किया कबीर ने सप्तद्वीप नवकंड।।

साहित्यिक परिस्थितियाँः- काव्य के भावपक्ष तथा कलापक्ष की दृष्टि से भक्तिकाल को स्वर्णयुग कहा गया है। प्रमुख रुप से इस काव्य का सृजन प्रबंध और मुक्तक दोनों रूपों में हुआ है। तुलसीदास का रामचरितमानस तथा जायसी का पद्मावत प्रबंध काव्य है। कबीर आदि संत कवियों का काव्य तथा कृष्णभक्त सूरदास आदि अष्टछाप कवियों का मुक्तक काव्य रहा है। भक्तिकाल के अधिकांश कवि संगीत के ज्ञाता थे। अतः तुलसी की विनयपत्रिका एक सफल गीतिकाव्य है जिसमें कान्हरा, केदार, मलार, धनाश्री, बिलावल आदि विभिन्न रागरागिनियाँ दर्शित होती हैं। सूरदास के सूरसागर में विभिन्न रागरागिनियों का संगम हुआ है। मीरा के पदों का महत्व उनकी कलात्मकता को स्पष्ट व्यक्त करता है। अवधी, ब्रज तथा संस्कृत पर समान रूप से अधिकार था। सूरदास का काव्य ब्रजभाषा के माधुर्य तथा लालित्य से ओतप्रोत है। अवधी का सौंदर्य के पद्मवत में दर्शित होता है। तुलसीदास की कवितावली आदि रचनाएँ नवरसों से परिपूर्ण हैं। सूरदास श्रृंगार तथा वात्सल्य का कोना-कोना झाँक आए थे। जायसी का 'पद्मावत' संयोग तथा वियोग श्रृंगार से

आप्लावित है। इस काल में दोहा, सोरठा, चौपाई, कवित्त, सवैया, बरवै आदि छंदों का वैविध्य दर्शित होता है। इसमें उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा, यमक आदि अलंकारों ने काव्य की शोभा वृद्धिंगत की है। भक्तिकालीन कवियों के काव्य सिद्धांत भी विशिष्ट हैं। यथा-

सरल कवित कीरति विमल, सोई आदरहि सुजान।

हिंदी का भक्ति साहित्य निम्न चार धाराओं में विभक्त है।

4. भक्तिकाल कितने प्रकार की शाखाओं में विभक्त है? विवरण दीजिए।

उ. भक्तिकाल निम्न चार शाखाओं में विभक्त हैः

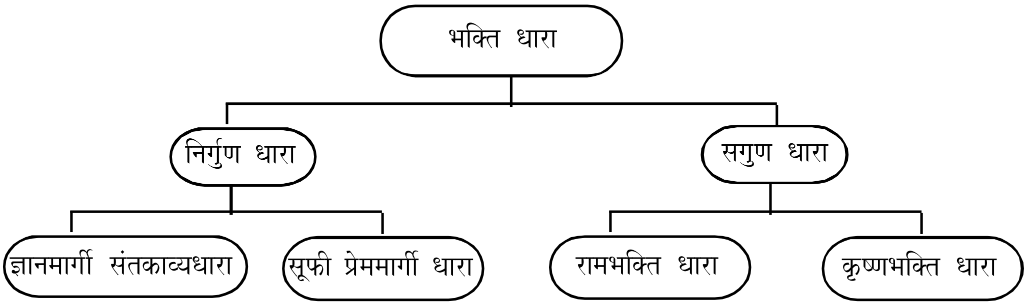

1. **निर्गुण पन्थ की ज्ञानश्रयी शाखा -** यह हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने की इच्छा का फल थी। सन्त कवियों ने निर्गुणवाद में हिन्दुओं और मुसलमानों को एक-दूसरे के निकट आने की सम्भावना देखी। मुसलमान लोग एकेश्वरवाद के मानने वाले थे. उनका मूल मन्त्र था --- 'ला इला लिल् इल्लाह, मुहम्मद रसूल अल्लाह' (अल्लाह के सिवाय दूसरा अल्लाह नहीं है, और मुहम्मद खुदा का रसूल या दूत है) वे लोग देवी-देवताओं की पूजा में हिन्दूओं का साथ नहीं दे सकते थे। वे बहु-इश्वरवाद के विरुद्ध थे। हिन्दू लोग भी बहु-ईश्वरवादी नहीं थे, बल्कि ये भी सब देवी-देवताओं को एक परमात्मा का ही रुप मानते थे----'एक सत् विप्राः बहुधा वदन्ति' । हिन्दूओं का निर्गुणवाद खुदावाद के बहुत निकट आ जाता था। निर्गुणवाद में खूदा की एकता और निराकारता सम्मिलित है। सन्त कवियों ने निर्गुणवाद के आधार पर ही राम और रहीम की एकता का समर्थन एवं हिन्दू-मुसलमानों की निरर्थक रुढ़ियों का विरोध कर, होनोंं जातियों में अविरोध-भाव उत्पन्न करने का उपाय किया। महात्मा कबीर इस धारा के प्रमुक्ख प्रवर्तक थे। उनका पालन-पोषण

यद्यापि मुसलमान के घर में हुआ था, तथापि रामानन्द का शिष्यत्व ग्रहण करने के कारण उनको हम हिन्दू ही कहेंगे। इसके अतिरिक्त उनकी चलायी हु शाखा को हिन्दूओं ने ही आगे बढ़ाया।

2. **निर्गुण पन्थ की प्रेममार्ग शाखा -** यह काव्य धारा मुसलमान सन्तों और सूफियों की सद्भावना का फल थी। मुसलमानों का सूफी सम्प्रदाय हिन्दू धर्म के निकट आ जाता है। सूफी लोग हिन्दूओं के सर्वेश्वरवाद (अर्थात सारा संसार ही ईश्वर है) के निकट पहुँच जाते हैं। सूफी लोग ईश्वर को प्रेम-पात्र के रूप में देखना चाहते हैं, जबकि साधारण शरीयत को मानने वाला मुसलमान ईश्वर के साथ मालिक और बन्दे का सम्बन्ध मानता है। उन सन्तों ने हिन्दू प्रेमगाथाओं के लेकर काव्य-रचना की, और फिर उनके द्वारा ही अपने सिद्धान्तो का प्रतिपदान किया। जायसी इस शाखा के प्रधान कवि थे।

3. **सगुण पन्थ की कृष्णभक्ति शाखा -** यह काव्यधारा उन भक्तों के अन्तस्तल से प्रवाहित हुई जो अपने इष्टदेवों की पूजा और उपासना में मग्न थे। वे देश और जाति का कल्याण भगवद्भजन में ही देखते थे। उनको राजदरबारों के ऐश्वर्य में तनिक भी आकर्षण न था। वे लोग मुसलमानों से विरोध नहीं रखते थे, लेकिन उनमें मिलने की इच्छा भी नहीं थी। वे लोग बादशाह का भी निमन्त्रण आने पर कह देते थे - 'सन्तन को कहा सीकरी सों काम''

भक्तिमार्गो शाखा जिन दो धाराओं में बही ---- 1. कृष्णभक्ति शाखा, और 2. रामभक्ति शाखा ---उनमें सूरदास कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि थे, और तुलसीदास रामभक्ति शाखा के।

भक्तिकाल के इस विभाजन को तालिका द्वारा इस प्रकार भी स्पष्ट किया जा सकता है।

हिन्दू धर्म में भगवान के निर्गुण और सगुण दोनों ही रूप मान्य हैं। सन्तों ने निर्गुन रुप को अपनाया, भक्तों ने सगुण और निर्गुण, दोनों को। सन्त लोग इस्लाम धर्म से भी प्रभावित थे। भक्त लोग विष्णु भगवान के, विशेषकर राम और कृष्ण के अवतार को मानते थे। इसलिए वे वैष्णव भी कहलात थे।

4. **सगुण पन्थ की रामभक्ति शाखा -** रामानुजाचार्य की शि,ड्य परंपरा में रामानंद हुए जिन्होंने उत्तर भारत में रामभक्ति की लहर प्रवाहित की। किंतु रामानुजाचार्य की वैष्णव भक्ति की लता को रामभक्ति जल से अभिसिंचित कर उसे पल्लवित तथा पुष्पित करने का श्रेय तुलसीदास को प्राप्त है। राम को परब्रह्मा स्वरूप तथा विष्णु का अवतार मानकर जो भक्ति पद्धति प्रचलित हुई उसे रामभक्ति कहा गया।

5. ज्ञानमार्गी शाखाओं का वर्णन करते हुए उनके कवियों के बारे मे भी लिखिए।

उ. निर्गुण भक्तिधारा के कवि साधकों को 'संत' शब्द से सम्बोधित किया जाता रहा। 'संत' की व्युत्पत्ति 'शांत' से मानते हुए 'सत्' रूपी परम तत्व के ज्ञाता परम तत्व के ज्ञाता को संत नाम से अभिहित किया गया । परमात्मा की प्राप्ति हेतु जो अपने तथा पराये के भेद को मिटाकर आत्मोन्नयन का पथ पकड़ते हैं, वे ही संत कहलाते हैं। अपने हित के साथ जो लोकहित का भी चिंतन करता है, वहीं 'संत' कहलाने का अधिकारी है। ''जात-पात पूछो नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई'' के स्वर मुखरित करे वाले संत कवि 'सर्व सम भाव' और 'सवें भवन्ति सुखिनः को मानने वाले थे।

संतकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ - संतकाव्य धारा के कवियों की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं -

1. ये निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे, अतःनाम की महिमा का बखान और आत्मशुद्धि कपर बल दे थे।
2. जप-तप, तीर्थाटन, गंगास्नान आदि मिथ्या आडम्बरों के या विरोध करते थे।
3. गुरु का स्थान ये सर्वोपरि मानते थे, उन्हें प्रभु तुल्य मानते थे --

   गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागू पाँय ।
   बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दिये मिलाया।।

4. ये वर्ण, जाति, धर्म, वर्ग में विश्वास न करके मानव को समान स्तर का मानते थे। जाति-पाँत सम्बन्धी विषमताएँ इन्हें और भी अखरने वाली लगती थीं। शूद्रों की स्थिति तो विशेष रुप से खराब होने से ये व्यथित थे। सभी को समान-मानने में ही इनका विश्वास था।
5. सभी संतो ने, मुक्तकंठ से प्रेम के महत्व को स्वीकार किया है। कबीर ने कहा है ---

   पोथी पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
   ढाई अवसर प्रेम का, पढै,सो पंडित होय।।

6. ये लोग सहज मान्य साधारण धर्म को मानते थे, किन्तु साम्प्रदायिकता या वर्णाश्रम सम्बन्धी विशेष धर्म को नहीं मानते थे। ये वैयक्तिक साधना पर अधिक बल देते थे।

7. इनकी भाषा व्याकरण - शास्त्र के बन्धनों से स्वतन्त्र और आडम्बर-रहित थी। सन्त लोगा चारों दिशाओं में विचारण करते थे--- इस कारण तथा प्रचार की भाषा होने के कारण उनकी भाषा 'सधुक्कड़ी' भाषा हो गयी थी जिसको 'खिचड़ी' भाषा की संज्ञा दी गई।
8. निर्गुन-निराकार की उपासना पर बल देने वाले ये संत कदि भक्ति के भावावेश में आकर सगुणोपासकों की भाँति भाव विह्मल उद्‌गार भी व्यक्त करते थे।
9. रुढ़िवाद के कट्टर विरोधी थे, अतःखणअड़न-मण्डन की प्रवृत्ति इनमें बहुत देखी जा सकती है।
10. आत्मा-परमात्मा के सम्बन्धों में सासंरिकता या मायावाद का विरोध मुखर रुप से किया।
11. काव्यशास्त्र या छन्दशास्त्र के नियमों की इन कवियों ने चिन्ता नहीं की। भावावेश में जो इन्हें रुचिकर लगा, बिना काव्य-रुढ़ियों की परवाह किये हुए उसे कविता में व्यक्त कर दिया।

ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि

1. **कबीरदास (सन् 1398 - 1518) -** इस महात्मा के जन्म के सम्बन्ध में किंवदन्ती है कि ये एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से एक महात्मा (रामानन्द) के आशीर्वाद के फलस्वरुप उत्पन्न हुए थे। लोक-लाज वश इनकी माता ने नवजात शिशु का परित्याग कर दिया था, और इसके बाद नीरु नाम के जुलाहे ने दयावश इनको पाल लिया। बाद में यही बालक कबीर कहलाया। इनकी शादी 'लोई' नाम की एक स्त्री से हुई थी, और उनके 'कमाल' और 'कमाली' नाम के दो बच्चे भी थे। ये अपने को जुलाहा मानते थे और अक्खड़पन के कारण जुलाहा होने का गर्व भी रखते थेः

तू ब्राह्मण, मै काशी का जुलाहा, बूजहु मोर गियाना।

इनको अपने घर का काम करना पड़ता था, किन्तु उसमें विशेष रुचि न थी। ये आरम्भ से ही भावुक और भक्त थे।

कबीर पर प्रभाव - कबीर ने अपने समय के प्रसिद्ध आचार्य रामानन्द से बड़ी युक्ति से दीक्षा पायी थी -''काशी में हम प्रकट भये हैं, रामानन्द चेताये।''

मुसलमान लोग इनको शेख तकी का शिश्य बतलाते हैं। किन्तु जिस प्रकार से इन्होंने अपनी कविता में शेख तकी को सम्बन्धित किया है,उससे इस तथ्य में सन्देह होता है। कुछ लोग इनको रामानन्द

का शिश्य होने में आपत्ति करते हैं, और उपर्युक्त पंक्ति को प्रक्षिप्त बतलाते हैं। कबीर पर रामानन्द के अतिरिक्त शंकराचार्य तथा नाथपन्थी साधुओं एवं सूफियों का भी प्रभाव था। रामानन्द से इन्होंने मांस-भक्षण का निशेध और वैष्णवी दया का भाव प्राप्त किया। नाथपन्थियों से हठयोग के सिद्धान्त ग्रहण किये, शंकाराचार्य से मायावाद और अद्वैतवाद के विचार को अपनाया, सूफी फकीरों से प्रेम की साधना ली और मुसलमानी शरीयत के मानने वालों से मूर्ति और तीर्थ का खण्डन-मण्डन सीखा। नाथपन्थियों में भी समता का भाव था, किन्तु ये मुसलमान धर्म से प्रभावित हुए।

ये महात्मा बड़ी स्वतन्त्र प्रकृति के थे। ये रुढ़िवाद के कट्टर विरोधी थे, इसलिए इन्होंने हिन्दू और मुसलमान, दोनों सम्प्रदायों की खूब हँसी उड़ायी है ---- 'इन दोउन रांह न पाई।' ये अपढ़ होते हुए भी ब्रह्मश्रत थ। इनके वचनों में हठयोग तथा वेदान्त की अच्छी झलक मिलती है। इन्होंने कहीं-कहं प्रभावोत्पदान के लिए बहुत-से विरोधात्मक बाव भी लिखे हैं, जैसे - ''नैया में नदिया डूबी जाय।'' रुढ़िवाद के विरोध में ही कबीर ने काशी छोड़ कर मगहर में शरीर-त्याग किया था -- ''जो काशी तन तजै कबीरा, रामै कौन निहोरा।'' धर्मदास इनके प्रधान शिष्यों में से थे। वे जाति के वैश्य थे, और कबीर के बाद वे ही इनकी गद्दी पर बैठे।

कबीर के सिद्धान्त ---- इसके ईश्वर सम्बन्धी विचार बहुत ऊँचे हैं। इन पर शंकारवाद का पूरा प्रभाव था, ौर ये जीव-ब्रह्मा की पूर्ण एकता में विश्वास रखते थे --- ''हेरत-हेरत हेरिया रहा कबीर हिराय, बुन्द समानी समुद में सो कत हेरी जाय।'' इनकी वाणी में रहस्यवाद की मात्रा अधिक रुप में पायी जाती है। हिन्दू-प्रथा के अनुसार इन्होंने जीव को दुलहिन माना है, और परमात्मा को प्रियतम बतलाया है। जीव का विरह-वर्णन बड़ी सरसता के साथ किया है। दुलहिन सदा दूल्हा से मिलने के लिए उत्सुक रहती है। इन्होंने अपने को 'राम की बहुरिया' कहा है। इनके सिद्धान्त निर्गुणवाद के हैं, फिर भी लोगों को समझाने के लिए और शुष्कता में सरसता लाने के निमित्त इन्होंने थोड़ा श्रृंगार का भी पुट दे दिया है, किन्तु उनकी 'झींनी झींनी झीनीं चदरिया' में उनका निर्गुणवाद छिप्पाये नहीं छिपता। 'सेज' अवश्य रहती है किन्तु वह होती शून्य की है, इसलिए वह प्रायःसनी ही रहती है। उपासना में इन्होने राम की महत्ता स्वीकार की है, किन्तु ये दाशरथि राम के उपासक न थे ---''दशरथ सुत तिहु लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना।'' यो तो निराकार रुप के उपासक थे, और एक ही रुप को सारे संसार में देखते थेः

साधो एक रुप सब माँही,

अपने मन विचार कै देखो, कोई दूसरा नाहीं।

कबीर ने अपने परमात्मा को अपने आप में ही देखा है, और हठयोग की साधना में ब्रह्माण्ड और परमात्मा को शरीर के भीतर ही पाया है।

अपने धार्मिक सिद्धान्तों के अनुरुप कबीर ने नीति सम्बन्धी दोहे भी अच्छे कहे हैं। इनमें केवल ज्ञान-पिपासा ही न थी वरन् धर्म-प्रचार की भी इच्छा थी। इस इच्छा को ये अपनी कविता में दबा नहीं सके। इन्होंने समता भाव का प्रचार करके शूद्रों की स्थिति को सुधारा था। इस सम्बन्ध में ये अपने समय से आगे थे।

कबीर की भाषा ---- कबीर की वाणी 'बीजक' नामक ग्रन्थ से संग्रहीत है। इसके तीन भाग है --- 'रमैनी', 'सबद' और 'साखी' । इनकी भाषा में खड़ीबोली, अवधी, पूर्वी (बिहारी) आदि कई बोलियों का सम्मिश्रण है। क्रिया-पदों के रुप अधिकतर ब्रजभाषा, और खड़ी बोली के हैं। कारक चिह्नों में 'से', 'कै', 'सन', 'कर' अवधी के हैं। 'को' ब्रज का है, 'थे' राजस्थानी का। इन्होंने शब्दों को तोड़ा-मरोडडा भी बहुत है। यत्र-तत्र ब्रजभाषा का समावेश है, और पंजाबी शब्दों की बी कमी नहीं है। भाषा जोरदार है जो इनकी तीव्र अनुभूति का परिचय देती है। उसमें कविता की रुढ़ियों और अलंकारों के आडम्बर का अभाव-सा है किन्तु जहाँ पर स्वाभाविक रुप से भाषा के प्रभाव में अलंकार आ जाते है, वहाँ पर उनका चमत्कार पूरी तरह से दिखायी पड़ती है। ईश्वरीय सम्बन्ध की रहस्यमयता में थोड़े प्राकाश की झलक लाने के लिए इन्होंने रुपकों और अन्योक्तियों से काम लिया है। इनको छन्द शास्त्र के नियमों का कम ज्ञान था। इनके दोहे पिंगल की कसौटी पर पूरे नहीं उतरते।इनकी कविता का चमत्कार काव्य के ऊपरी नियमों से नहीं, वरन् इनके हृदय की सच्चाई और तीव्र अनुभूति से है। रहस्यवाद को गूँगे के गुड़। के से आनन्द को 'सैना-बैना' द्वारा ही अर्थात् अन्योक्क्तियों, रूपकों आदि के द्वारा ही व्यक्त किया जा सकता है। इनकी कविता के कुछ उदाहरण देखिए:

कबीर पढ़ना दूर करि पुस्तक देउ बहाइ
बाव आखर सोधि करि ररै ममै चित लाइ।।
कबीर माला मन की और संसारी भेष
माला पहिरयाँ हरि मिले, तो अरहट गलि देख ।।

दुलहिन गावौ मड्लचार, हमारे घर आये राम भरतार।
तन रति करि में मन रति करिहौं, पाँचो तत्त बराती।

राम देव मोहि ब्याह्न आये, मैं जीवन मदमाती।।

सरीर सरोवर वेदी करिहौं, ब्रह्मा वेद उपचार।

राम देव संग भाँवरि लैंहों, धन भाग हमार।।

सूर तेतीसौं कोटिक आये, मुनिवर सहस अठासी।

कहै कबीर मोहि ब्याहि चले हैं, पुरुष एक अविनासी।।

2. **धर्मदास -** ये कबीरदास के सम्प्रदाय के उत्तरधिकारी थे। इनका स्वर्गवास कबीर के स्वर्गवास के 25 वर्ष बाद अनुमानतःसं. 1600 में हुआ होगा। ये जाति के वैश्य थे, और बाँधोगढ़ में रहते थे -''धर्मदास बन्धों के बासी' । इन्होंने कबीर-पन्थ में प्रवेश करने पर अपना सारा धन लुटा दिया था। इनकी गद्दी छत्तीसगढ़ में है। 'सुख निधान' इनके प्राचीन ग्रन्थों में है। ये पहले सगुणोपासक थे, तीर्थ-यात्रा भी करते थे, परन्तु पीछे से इन्होंने निर्गुन पन्थ में दीक्षा ली थी। कबीर की भाँति इन्होंने भी आध्यात्मिक विरह के छन्द लिखे हैं। इनकी भाषा में पूर्वी भाषा का अधिक प्रभाव है, उदाहरणर्थ एक पद लीजिए।

झरि लागै महलिया गगन घरराय।

खन गरजै, खन बिजली चमकै, लहर उठै शोभा-वरनि न जाय।

सुन्न महल में अमृत बरसै, प्रेम मगन हवै साधु नहाय।।

खुली किबरिया, मिटी अँधिरिया, धनि सतगुर जिन दिया लखाय।।

धमरदास बिनवै मिटी अँधिरयिा, धनि सतगुरु जिन दिया लखाय।

धमरदास बिनवै कर जोरे, सतगुरु चरन में रहत समाय।।

3. **रैदास -** इनको रविदास भी कहते हैं। इनके जन्म के विषय में प्रामाणिकर जानकारी का अभाव है। अंतःसाक्ष्य से संकेत मिलता है कि यह कबीर और गुरु नानक के समकालिक थे। इनके गुरु भी रामानंद थे। 'कहै रैदास खलास चमारा' पंक्ति से इनकी जाति चमार थी। इनकी पत्नी का नाम लोना था। कहाँ जाता है, ये सुप्रसिद्ध कवयित्री मीराबाई के गुरु थे। इनकी कोई स्वतन्त्र रचना नहीं मिलती। इनके फुटकर पद भी 'गुरुग्रन्थ साहब' में संग्रहीत हैं। इनकी कविता जन-सुलभ है। कबीर की भाँति इनका भी सम्प्रदाय है। इनकी कविता का एक उदाहरण लीजिए।

प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी। जाकी अंग-अंग बास समानी।।
प्रभुजी तुम वन-धन हम मोरा। जैसे चितवत चन्द चकोरा।।
प्रभुजी तुम माली हम बागा। जैसे सोनहि मिलत सुहाग।।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भगति करै रैदासा ।।

'तुम और मैं' की परम्परा में वर्तमान युग में बहुत-सी कविताएँ लिखि गयी हैं। इसी शीर्षक की निराला जी की भी कविता प्रसिद्ध है।

नाभादास जी ने रैदास की प्रशंसा में कहा है:

वर्णाश्रम अभियान तजि, पद रज वन्दहि जा सकी।
सन्देह ग्रन्थि खण्ड़त निपुन, बनी विमल रैदास की।।

4. **गुरु नानक -** ये महात्मा सिक्ख (शिष्य) सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं। इनका जन्म कार्तिक पूर्णिमा, सं 1521 को तलवण्डी ग्राम, जिला लाहौर में हुआ था। उनके पिता का नाम कस्तुरचन्द और माता का नाम तृप्तादेवी था। इनका विवाह गुरुदासपुर के मूलचन्द खत्री की सुलक्खिनी नाम की कन्या से हुआ। उससे इनके श्रीचन्द तथा लक्ष्मीचन्द नाम के दो पुत्र हुए । श्रीचन्द उदासी सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं। वैसे तो सिख्ख भी हिन्दू ही हैं, किन्तु उदासी लोग हिन्दू धर्म को अधिक मानते हैं। महात्मा नानक जन्म से ही बड़े त्यागी तथा साधु-सेवी थे। एक बार इनके पिता ने एक बड़ी रकम व्यापार के लिए सौदा खरीदने को दी। इन्होंने उस रकम को साध-सेवा में लगा दिया और पिता के पूछने पर कह दिया कि मैने सच्चा सौदा खरीद लिया है।

इन्होंने भगवद्भक्ति के भजन गाये हैं। ये नाम के उपासक हैं। ये भी स्थान-स्थान पर घूमकर ज्ञान अर्जित करते थे। भ्रमण के दौरान ही इनकी भेंट संत कबीर और रैदास से हुई थी। कबीर की भाँति इन्होंने आकाश-पाताल के कुलाबे नहीं मिलाये हैं, और न उलटबांसियाँ ही कही हैं। इन्होंने बड़े सरल हृदय से ईश्वर-भक्ति के साथ सदाचार और संगठन की भी शिक्षा दी है। इन्होंने हिन्दुओं को विचार-भूमि, दोनों में मुसलमानों से टक्कर लेने योग्य बनाना चाहा है। इनकी वाणी 'श्री गुरुग्रन्थ साहब' में संग्रहीत है। कुछ भजन तो पंजाबी में है, और कुछ देश की प्रचलित काव्य-भाषा हिन्दी में है --- जो कहीं खड़ीबोली के रूप मेंहै और कहीं ब्रजभाषा के रुप में।

ये अवतारवाद, मूर्तिपूजा, जातिपाति आदि के विरोधी थे। कबीर की भाँति ये सर्वधर्म समबाव के समर्थक थे। इनकी वाणी में बड़ी विनय है। ये सदाचार के बड़े पक्षपाती थे। इनकी कविता के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

सुरा	एक	न	आँखिए	जो		
लड़नि	दला	में	जाय			
सूरा	सोई	नानका	जो	मरुण	हुकुम	रजाय
हिरदे	जिनके	हरि	बसे,	ते	जन	कहियहि
सूर	कहि न	जाई	'नानक'	पूरि	रह्यो	भरपूर ।।

पंजाबी मिश्रित भाषा का एक पद लीजिए।

इह दम दा मेन्नू कीवे भरोसा, आा आया, न आया न आया।

यह संसार रैना दा सुपना, कींह देखा कहीं नाहिं दिखाया।

सोच विचार करै मत मन में, जिसने ढूँढ़ा उसने पाया।

'नानक' भक्तन के पद परखें, निसदिन राम चरन चित लाया।

5. **दादूदयाल -** ये गुजरात के रहने वाले थे। इनका जन्म अहमदाबाद में हुआ था। कबीर की भाँति इनके नाम से भी दादू-पन्थ चल रहा है। कुछ लोग इनको मुसलमान बतलाते हैं, और कहते हैं कि इनका असली नाम दाऊद था। ये भी निराकार ब्रह्मा के उपासक थे। इनके विचारों की विवेचना आचार्य क्षितिमोहन सेन ने अपने 'दादू' नाम के बंगाली ग्रन्थ में की है। इस पन्थ के लोग 'सद्राम' कहकर अभिवादन करत हैं। इनकी वाणी हिन्दी के अतिरिक्त राजस्थानी, गुजराती और पंजाबी में बी पायी जाती है। इनकी हिन्दी पश्चिमी हिन्दी है जिसमें राजस्थानी (जयपुरी) का मेल है। अन्य निर्गुण सन्तों की वाणी की भाँति इनकी वणी में भी खड़ीबोली की क्रियाओं की ओर अधिक झुकाव पाचा जाता है। यत्र-तत्र फारसी - अरबी के शब्दों का भी समावेश दिखवायी पड़ा है। कबीर की भाँति ये महात्मा खण्डन-मण्डन में नहीं पड़े। इनकी वाणी में बड़ी सरलता के साथ तत्व-विवेचन किया गया है। इनकी वाणी के संग्रह 'हरडे वाणी', 'अंगवधू' नाम से छपे हैं।

कहा जाता है, अकबर के निमंत्रण पर ये सीकरी गये थे और वहाँ कुछ दिनों रहकर आध्यत्मिक चर्चा में लीन रहे।

कबीर की भाँति ये भी अनपढ़ थे, लेकिन बहश्रुत ज्ञानी थे। प्रसिद्ध संत रज्जब इनके शिष्य बताये जाते हैं। ये सरल, सहिष्णु और प्रेमी स्वभाव के थे। इनकी कविता का एक उदाहरण देखिए:

प्रीति जो मेरे पीव की, पैठी पिंजर माँहि।

रोम, रोम पिड-पडि करै, दादू दूसर नाहिं।।

6. **सुन्दरदास** - संतमार्गी काव्य परम्परा में सुन्दरदास भी बहुत प्रसिद्ध हुए थे। ये दादू के शिश्य कहे जाते है। ये पढ़े लिखे थे और खण्डेलवाल वैश्य परिवार में जयपुर के निकट दौसा में जन्म थे। नाम के अनुरुप ये सुन्दर-सुडौल थे।

इनका विधिवत् विद्याभ्यास हुआ प्रतीत होता है। ये काव्य -रीति से भली-भाँति परिचित थे। वैसे इनके छोटे-बड़े **42** ग्रन्थ माने जाते हैं। जो अब 'सुन्दर ग्रन्थावली' में संकलित होकर प्रकाशित हो चुके हैं। इनके रचे छन्दों में श्रृंगार के प्रति विरक्ति झलकती है, किन्तु हास्य-विनोद पर्याप्त मिलता है। 'सुन्दर-विलास' इनका प्रधान ग्रन्थ है। इसकी रचना साहित्यिक और सरस है, भाषा भी परिमार्जित ब्रजभाषा है। इन्होंने ज्ञान के अतिरिक्त नीति-सम्बन्धी छन्द भी लिखे हैं। इनकी रचना कवित्त-सवैयों में अधिक हुई है। इनकी कविता में यमक और अनुप्रास, शब्दलंकार और उत्तमोत्तम अर्थलंकार भी मिलते हैं। इन्होंने चित्र-काव्य, छन्द-बन्ध, नागबन्ध आदि भी लिखे हैं। इनकी कविता का एक उदाहरण नीचे दिया जाता है।:

बोलिए तो तब जब बोलिबे की बुद्धि होई
न तो मुख मौन गहि चुप होइ रहिए।
जोरिए तो तब जब जोरिबे की रीति जानें,
तुक, छन्द, अरथ, अनूप जामें लहिए।
गाइये तो तब जब गाइबे को कण्ठ होय,
स्त्रोत के सुनत ही मनै जाहि गहिए।
तुकभंग, छन्दभंग, अरथ मिलै न कछु,
सुन्दर कहत ऐसी बानी नहिं कहिए।

7. **मूलकदास -** ये कड़ा, जिला इलाहाबाद के निवासी थे। इनकी भाषा साधारण सन्त-कवियों की अपेक्षा अधिक शुद्ध और सुंस्कृत थी। इनको छन्द का भी ज्ञा था। इनकी 'रत्नखान' और 'ज्ञानबोध' नाम की दो पुस्तकें हैं। आलसियों का गुरुमन्त्र -- 'अजगर करै न चाकरी, पींछी करै न काम' ---इन्हीं का बनाया हुआ है। इससे यही प्रकट होता है कि ये बड़े मनमौजी और ईश्वर पर विश्वास रखने वाले थे। इनकी कविता के उदाहरण नीचै दिया जाते हैं।

दीनदयाल सुनी जबतें तबतें हिय में कछु ऐसी बसी है।

तेरी कहाय के जाउँ में तेरे हित की पटखेंच कसी है।।
तेरोई एक भरोसो मलूक को तेरे समान न दूजो जसी है।
एहो मुरारि पुकारि कहों अब मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है।
ना वह रीझे जप - तप कीन्हें, ना आतप के जारे।
ना वह रीझे धोती नेती, ना काया के पखारे।।
दया करै धरम मन राखै, घर में रहे उदासी।
अपना सा दुख सबका जानै, ताहि मिले अविनासी।।
सहै कुसबद वादहु त्यागे, छाँड़ै गर्व गुमान।
वही रीझ मेरे निरझर की, कहत मलूक दिवाना।।

8. **अक्षर अनन्य -** इनके जन्म संवत् का पता नहीं है, किन्तु ये संवत् **1710** के करीब वर्तमान थे। ये दनिया रियासत के रहने वाले थे, और कुछ दिनों दतिया के राजा पृथ्वीसिंह के दीवान रहे थे। महाराज छात्रपाल ने इनसे दीक्षा ली थी। इन्होंने राजयोग, सिद्धान्त-बोध, विवेक-दीपिका,अनन्य-प्रकाश, आदि योग और वेदान्त के कई सुन्दर ग्रन्थ रचे हैं।

अन्य कवि - इन कवियों के अतिरिक्त, दादूदयाल के पुत्र गरीबदास, निश्चलदास, जगजीवदास दूलनेदास, मानीमानों साहब, बुल्ला साहब, सहजोबाई दयाबाई, तुलसी साहब, पलटूदास आदि अनेक सन्त कवि हुए हैं जिन्होंने अपनी मधुर वाणी से हिन्दी साहित्य का भण्डार भरा है। इन कवियों में निश्चलास जी का वेदान्त सम्बन्धी ग्रन्थ 'विचार-सागर' बड़ा पण्डित्यपूर्ण है। इसमें वेदान्त का शास्त्रीय ढंग से विवेचन हुआ है।

6. प्रेममार्गी शाखा तथा उनके कवियों का परिचय लिखिए।

सामान्य परिचय --- प्रेमाश्रयी काव्यधारा 'प्रेम' पर केन्द्रित है। प्रेम वास्तव में वह आनन्दमयी अनुभूति है जो दैहिक रूप-रंग-गुण और नान्निध्य से प्राप्य है। किन्तु निर्गुण-निराकार के अंतर्गत ये प्रेमार्गी बिना रुप-रंग और गणों के प्रेमाधार कहाँ-कैसे पायेंगो? यह प्रेम तो निराकार-निगुण ब्रह्मा के प्रति है। प्रेमश्रयी कवि 'सूफी' विचारधारा से प्रभावित रहे हैं, अतः इसको 'सूफी काव्यधारा' नाम भी दिया गया है। सूफी भावधारा में प्रेम प्रत्यक्ष के प्रति न होकर प्रछ्छन्न (परोक्ष) के प्रति होता है।

सूफी सम्प्रदाय --- प्रेममार्गी काव्यधारा के आधारभूत 'सूफी' दर्शन को समझना समीचीन है। 'सूफी' शब्द को युनानी शब्द 'सोफोस' से सम्बन्धित माना गया है जिसका अर्थ है 'ज्ञानी'। अंग्रेजी के 'फिलासफी' में भी यही शब्द अनस्युत है। अप्रत्यक्ष विराट सत्ता के प्रति लगाव का भाव बिना ज्ञान के सम्भव कहाँ?

'सूफी' शब्द को कुछ लोग 'सूफ' से बना बताते हैं, जिसका अर्थ है 'सफेद ऊन का बना हुआ'। सूफी फकीर सरल त्यागपूर्ण जीवन अपनाते हुए मोटे सफेद ऊन के कपड़े पहनते थे और परमात्मा-प्रेम में मग्न रहते थे, इसलिए उनको 'सूफी' कहा जाता था। 'सूफी' परमात्मा प्राप्ति का साधन प्रेम ही मानते हैं। वे परमात्मा को माशूक और स्वयं को ुसका आशिक मानते हैं। सूफी मत का चलन मुहम्मद साहब के प्रायः दो सौ वर्ष बाद हुआ। सूफी लोग पीर (गुरु) को अधिक महत्ता देते थे। वे ईश्वर और जीव का सम्बन्ध भय का नहीं वरन् प्रेम का मानते थे। उनका झुकाव सर्वेश्वरवाद की ओर था। वे संगीत के प्रेमी थे। इन सब बातों के कारण वे कट्टर मुसलमानों की अपेक्षा हिन्दू धर्म के अधिक निकट थे। कट्टरपन्थियों ने मन्सूर को 'अनलहक' (मैं सच्चाई या ईश्वर हूँ) कहने के कारण सूली का दण्ड दिलवाया था। भारत में सूफी सम्प्रदाय का आरम्भ सिन्ध में हुआ माना जाता है।

7. प्रेममार्गी काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

1. प्रेममार्गी कवियों की प्रेमगाथाएँ भारतीय चरित्र-काव्यों की सर्ग-बद्ध शैली पर न होकर फारसी की मसनवियों के ढंग पर रची गयी हैं। इनमें ईश्वर-वन्दना, पैगम्बर की स्तुति, तत्कालीन बादशाह की प्रशंसा के साथ कथा का आरम्भ किया गया है।
2. इनकी भाषा अवधी, जिसमें लोकप्रचलित श्बदों का बाहुल्य है।
3. इनकी रचना दोहा-चौपाइयों में हुई है। चौपाई छन्द अवधी के लिए विशेष उपयुक्त है। प्रबन्धात्मकाव्य के लिए यह शैली उपयुक्त मानी गयी।
4. ये कथाएँ प्रायः हिन्दू जीवन से सम्बन्ध रखती हैं और इनमें भौतिक प्रेम द्वारा ईश्वरीय प्रेम का प्रतिपादन किया गया है।ॉ
5. इनके लिखने वाले प्रायः वे मुसलमान थे जिनको हिन्दू धर्म का भी थोड़ा-बहुत ज्ञान था।
6. ये लोग किसी सम्मप्रदाय विशेष का खण्डन-मण्डन तो नहीं करते थे, फिर भी मुसलमान धर्म की ओर अधिक झुके हुए थे।

7. इन काव्यों में प्रेम-सौन्दर्य की प्रधानता है। परमात्मा यहाँ 'माशूक' (प्रियतमा) होने से अनिंद्य सुन्दर है और उसके प्रति'अशिक' (प्रेमी) के मन में अघाध प्रेम है।

8. प्रेम में विरह (वियोग) पक्ष को प्रधानता दी गयी है।

8. प्रेममार्गी शाखा के कवियों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

प्रेममार्गी परम्मरा वैसा तो ऊषा-अनिरुद्ध की कथा से चली आती है, किन्तु उसका विकसित रुप नि मुसलमान कवियों में ही दिखायी देता है। 'पद्यावत' में चार कथाओं का उल्लेख है। वह इस प्रकार हैं:

विक्रम धँसा प्रेम के बारा। सपनावति कहँ गयउ पतारा ।।

मछूपाछ मुगधावति लागी। गगनपूर होडगा वैरागी ।।

राजकुंवर कंचनपुर गयऊ। मिरगावति कहँ जोगी भयऊ ।।

साधे कुंवर खण्डावति जोगू। मधुमालति कर कीन्ह वियोगू ।।

प्रेमावति कहँ सुरवर साधा। ऊषा लागि अनिरुध वर बाँधा ।।

उपर्युक्त चौपाइयों में जायसी से पूर्व के चार काव्य ग्रन्थों का उल्लेख है --- 'मुग्धावती', मृगावती', 'मधुमालती' और 'प्रेमावती' इनमें से मृगावती और मधुमालती का पता चल गया है, शेष दो ग्रन्थ अभी नहीं मिले हैं।

1. **कुतुबन -** ये शेरशाह के पिता हुसैनशाह के दरबार में रहते थे।ये चिश्ती वंश के शेख बुरहान के शिष्य थे। इनकी पुस्तक 'मृगावती' जिसका उल्लेख जायसी ने किया है, हिजरी में लिखी गयी थी। इसी पुस्तक में चन्द्रगिरि के राजा गणपतिदेव के राजकुमार और कज्जनपूर की राजकुमारी की प्रेमकथा का वर्णन है। मृगावती उड़ने की विद्या में निपुण थी। वह राजा को छोड़कर कहीं उड़ गयी थी। राजा उसके वियोग में योगी हो गया, और उसकी खोज में निकल पझ। इसी बीच में उसने एक राक्षस के चंगुल से बचाई हुई कन्या (रुक्मिन) से विवाह कयि। अन्त में उसका मृगावती से मिलन हो गया । वह दोनों रानियों को लेकर अपने देश को लौट आया। राजा के हाथी से गिर कर मार जाने पर दोनों रानियाँ सती हो गयीं। कथा के बीच-बीच में प्रेममार्ग की कठिनाइयों का अच्छ वर्णन है, जो साधना के लिए बड़ा उपदेशप्रद है। इसमं रहस्य से भरे हुए कई स्थान हैं।

2. **मंझन -** 'मधुमालती' इन्हीं का गन्थ है। इसकी कथा 'मृगावती' से अधिक रुचिकर है। इस ग्रन्थ में कनेसर नगर के राजा सूरजभान के पुत्र राजकुमार मनोहर का महारस नगर की राजकुमारी मधुमालती के साथ प्रेम और पारस्परिक वियोग की कथा है। पहले नायक को अप्सराओं द्वारा मधुमालती के साथ प्रेम और पारस्परिक वियोग की कंता है। पहले नायक को अप्सराऐओं द्वारा मधुमालती की चित्रसारी में पहुँचाया जाता है। वे एक-दूसरे पर मोहित हो जाते हैं, किन्तु वे शीघ्र ही अलग हो जाते हैं। इस प्रकार, एक बार मिलन के पश्चात् विरह होता परन्तु अन्त में फिर मिलन हो जाता है। इसमें प्रेमा ौर ताराचन्द का त्याग अत्यन्त सराहनीय है इसमें विरह का अच्छा महत्व दिखाया गया है। इसकी एक उक्ति जो संस्कृत के एक श्लोक का अनुवाद है, यहाँ दी जाती हैः

रतन के सागर सागरहिं, गज मोती गज कोइ।
चन्दन की बन-बन ऊपजै, विरह कि तन-तन होई।।

मूल श्लोकः

शैले-शैले न माणिक्यं, मौक्तिंक न गजे गजे।
साधवो ने हि सर्वत्र, चन्दनं न वने वने ।।

इस ग्रन्थ में विरह-कथा के साथ आध्यात्मिक तथ्यों का भी निरुपण बड़े सुन्दर ढंग से हुआ है।

3. **मलिक मुहम्मद जायसी -** ये महाकवि प्रेममार्गी कवियों के प्रतिनिधि माने गये हैं। इनका जन्म गाजीपुर में होना बतलाया जाता है। जायसी ने अपने 'आखिरी कलाम' में अपना जन्म सन् 1423 में बतलाया है। तीस वर्ष की अवस्था में ये कविता करने लगे थे।

भा अवतार मोर नौ सदी। तीस बरस ऊपर कवि बदी ।।

इनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'पद्यावत' का रचना-काल सन् 1557 है। 'सन नौ सौ सैंतालीस' अहा, कथा आरम्भ बैन कवि कहा'। ये चेचक के प्रकोप के कारण एक आँख से वंचति हो गये थे। इसी कारण अपनी पुसत्क 'जायसी' में एक आँख का होना गौरव की बात बतलाई है, तथा शुक्राचार्य से अपनी तुलना की है। ये पीछे से 'जायस' (रायबरेली) में रहने लगे थे, इसी से ये जायसी कहलाये।

जायसी प्रसिद्ध सूफी फकीर शेख मोहदी (महीउद्दीन) के शिष्य थे। गुरु मोहदी सेवक में सेवा'। यद्यपि इनकी इस्लाम धर्म में पुरी आस्था थी, तथापि इन्होंने हिन्दू देवताओं का आदर के साथ उल्लेख किया है। केवल एक जगह रतनसेन के मुख से मूर्तिबूजा की अवश्य बुराई करायी है। किन्तु नौराश्य में प्रायः ऐसा हो जाता है कि लोग देवताओं को कौसने लगते हैं।

इनकी तीन पुस्तकें है -- 'पद्मावत' अकरावट और 'आखिरी कलाम'। इनमें 'पद्मावत' सर्वाधिक प्रसिद्ध है और इनकी मुख्याति का स्थायी आधार भी। इसमें राजा रतनेसन और सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम का वर्णन है। इन दोनों का योग हीरामन तोता ने कराया है। इस कथा में दोनों ओर से प्रेम की पीर दिखलायी गयी है। इसमें राजा की पहली रानी नागमती के वियोग का भी अच्छा अंकन हुआ है। इस कथा से प्रेम-साधना द्वारा ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग दिखलाया गया है। यहकथा अधिकांश में ऐतिहासिक है। कवि-कल्पाना के अनुसार इसमें हेरफेर अवश्य किया गया। पूर्वार्द्ध कल्पित है, किन्तु उत्तरार्द्ध का बहुत कुछ हेतिहासिक आधार है। पूर्वार्द्ध का भी बहुत कुछ अंश जनश्रुतियों पर अवलम्बित है। भौतिक प्रेम के साथ अध्यात्मिक प्रेम की भी झलक मिलती है। जायसी ने स्वयं इस कथा को आध्यात्मिक रुप दिया है, इससे इसकी कथा को कुछ विद्वान 'समासोक्ति परक', तो कुछ 'अन्योक्तिपरक' मानते हैं। स्वयं कवि ने कहा हैः

तन चित उर, मन राजा कीन्हा ।

हिय, सिंघल बुधि पदमिनि चीन्हा ।।

गुरु सूआ जेहि पंथ दिखावा ।

बिन गुरु जगत को निरगुन पावा ।।

नागमती यह दुनियाँ धन्धा ।

बाँचा सोई न पहि चित बन्धा ।।

राघव दूत सोई सैतानू ।

माया अलादीन सुलतानू ।।

जायसी का यह ग्रन्थ प्रबन्ध-काव्य की दृष्टि से बहुत अच्छा गिना जाती है। यद्यापि प्रेमगाथाओं में इसका पहला स्थान है, परन्तु प्रबन्ध-काव्यों में 'रामचरितमानस' का बाद दूसरा है।

जाससी का विरह-वर्णन बड़ा विशद है। इन्होंने विरहग्रस्त प्रेमी और प्रेमिका के साथ सारे संसार की सहानुभूति दिखलायी है और सब चराचर, पशु-पक्षी आदि को विरह-वेदना से व्याप्त बताया है। गेहूँ का हृदय भी विरह के कारण फटा हुआ है और कौआ विरह के कारण काला है। कहीं-कहीं इनका विरह-वर्णन अत्युक्तियाँ विरह की विषम वेदना के संकेत रूप प्रतीत होती हैं, उनमें शब्दों का चमत्कार नहीं। जायसी की अधिकांश अत्युक्तियाँ उत्प्रेक्षा-सूचक 'जन', 'मानो' आदि

अव्ययों कारण वास्तविक जगत की न होकर कल्पना की बात रहा जाती है। जहाँ पर जायसी ने अत्युक्ति को घटना का रूप दिया है (जैसे पक्षी द्वारा नागमती की चिट्टी ले जाते समय का वर्णन) वहाँ वे बिहारी की भाँति हास्यास्पद बन गये हैं। इसमें मुसलमानी काल के विरह-वर्णन की बीभत्सता भी आ गयी है। हर जगह रक्त के आँसू गिरते हैं। इसमें हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों का समन्वय है। इनके विरह में अत्युक्ति अवश्य है किन्तु, इसके क्साथ ही, इसमें अनुभूति की तीव्रता भी परिलक्षित होती है।

जायसी बहुश्रुत थे। उन्होंने ज्योतिष, हठयोग और शतरंज आदि का अच्छा ज्ञान दिखलाया है। यद्यापि जायसी ने हिन्दू कथाओं के वर्णन में भूल की है, जैसे इन्द्र का निवास कैलास बतलाया है और चन्द्रमा को स्त्री कहा है, तथापि इनको हिन्दू धर्म का ज्ञान बहुत अच्छा था।

जायसी ने अपने ग्रन्थ ठेठ अवधी भाषा में लिखे हैं। इनकी अलंकार-योजना बड़ी सुन्दर है। इनके अलंकार अलंकारों के उदाहरणस्वरुप नहीं लिके गये हैं, वरन् भावों के साथ गुँथे हुए हैं। जायसी के 'पद्यावत'`` ऊपर की भाँति सात अर्द्धालयिों के बाद दोहा है। 'रामचरितमानस' में आठ अर्द्धालियों के बाद दोहा रखा गया है। दो अर्द्धालियों को मिलाकर एक चौपाई होती है। 'पद्यावत' की भाषा बोलचलन की पूर्वी अवधी है। 'रामचतिरमानस' की भाषा पश्चिमी अवधी है, और वह अपेक्षकृत अधिक साहित्यिक है।

'पद्यावत' जायसी की अक्षय कीर्ति का अमर आधार है। जायसी इसी के कारण हिन्दू के अमर कवियों में एक हैं।

4. **उसमान -** इनकी 'चित्रावली' लिखी गयी थी। इसमें नेपाल के राजकुमार सुजानकुमार का चित्रावली के साथ विवाह का वर्णन है। इसमें राजा का पूर्वानुराग चित्र-दर्शन से हुआ था। इसमें यात्राओं का अच्छा वर्णन है। कथा बिल्कुल काल्पनिक मालूम होती है, जैसा कवि ने स्वयं स्वीकार किया है - 'कथा एक मैं हिए उपाई, कहतु मीठ औ सुनत सुहाई।' जायसी की भाँति इनके काव्य में भी कहीं-कहीं आध्यात्मिक व्यंजनाएँ हैं:

पावहि खोज तुम्हारा सो, जेहि दिखरावहु पन्थ ।

कहा होय जोगी भये, औ बहु पढ़े गरन्थ ।।

तुलसीदास जी ने भी कहा है 'सो जानिहि जेहि देहु जनाई' । ये कवि साह निजामुद्दीन चिश्ती की परम्परा में ते। इन्होंने हाजी बाबा से दीक्षा ली थी। इन्होंने अपना उपनाम 'मान' लिखा है। ये जहाँगीर के समय में थे और गाजीपुरवासी थे।

5. **नूर मुहम्मद -** सन् 1744 में इनकी 'इन्द्रावती' तथा सन् 1764 में 'अनुराग बाँसुरी' लिखी गयी। 'इन्द्रवती' के नायक द्वारा ब्रह्मरप नायिका के निवास स्थान 'अगमपुर' की यात्रा करायी गयी है, जसि तक पहुँचने वाले मार्ग में रुप, शब्द, सुगन्ध, स्वाद और स्पर्श नामक पाँच गहन वन पहले बड़े हैं फिर अन्य दो 'अभिलाषा' और 'नाम स्मरण' से सम्बन्धित बताये गये हैं। इन सातों गहन गम्भीर वनों से गुजर कर ही साधक राजकुँवर 'अमरपुर' में जा पाता है।

अपने दूसरे प्रेमाख्यानक काव्य 'अनुराग बाँसुरी' में भी कवि ने प्रतीकों के सहारे कथा को प्रस्तुत किया है। 'सर्वमंगला' नाम की नायिका को पाने के लिए 'अन्त-करण नामक नायक 'स्नेह गुरु' से प्रोत्साहन पाकर 'स्नेहनगर' के लिए प्रस्थान करता है। 'अन्त-करण' नायक के दो मुख्य साथी 'संकल्प' और 'विकल्प' वर्णित हुए हैं, उसके तीन अन्य सहयोगी 'बुद्धि', चित्त' और 'अहांकार' बताये गये है। नूर मुहम्मद के ये दोनों काव्य काव्यात्मक दृष्टि से भी उत्कृष्ट माने जाते हैं।

अन्य कवि - प्रेममार्गी परम्परा के अन्य कवियों में असाइत (हंसावली), कवि जान (रत्नावती, कामलता, मधुकर मालती), शेख नबी (ज्ञानदीप) मुल्ला दाउद (चंदायन), रंजन (प्रेमवन), कासिस शाह (हंस जवाहिर) आदि के नाम बी उल्लेखनीय हैं। (दासों या दामोदर, ईश्वरदास, गणपति,पुहकर, मोहनदास ऐसे कवि हुए जिन्होंने हिन्दू, प्रेमाख्यानक काव्यों की रचना की। शेखानिसार की 'यूपुफ-जुलेखा' और ख्वाजा अहमद की 'नूरजहाँ' भी इस परम्परा की प्रसिद्ध कृतियाँ मानी जाती हैं।

8. **सगुण भक्ति काव्यधारा का सामान्य परिचय लिखिए।**

उ. भारत भक्तिप्रधान देश रहा है और यहाँ सदियों से भक्ति के दोनों रुप --निर्गुण और सगुण --प्रचलति रहे हैं। संस्कृत में दोनों भक्ति पद्धतियों पर प्रचुर परिणाम में काव्य रचा गया है। भक्तों द्वारा जो भक्ति आन्दोलन उत्तर भारत में प्रारम्भ हुआ, उसके विकास में निर्गुण भक्तिधारा से अधिक सगुण भक्तिधारा का महत्तव माना जाता है। निर्गुण भक्ति के उपासक यदि संत कहलाये तो भक्तों की संज्ञा सगुणवादियों को ही दी गयी।

सगुण भक्ति का आधार - निराकार ब्रह्मा जो सर्वव्याप्त तत्व और सम्पूर्ण सृष्टि का मूल कारण है, वह संसार में व्याप्त अनाचारों और अत्याचारियों का नाश करने तथा सनातन सत्यादशों की स्थापना के लिए अपनी माया शक्ति संसार में साकार-सगुण रुप में अवतार लेता है। इस प्रकार सगुण भक्ति में ब्रह्मा मूर्त रुप में अवतार लेकर भक्तों को त्राण लिदाता है।

निर्गुण ब्रह्म के मूर्त रुप अवतार हैं। यह अवतारवाद ही सगुण भक्तिधारा का मूलाधार है। अवतारवाद के मूल में जहाँ एक ओर लोकरक्षण या लोकमंगल की भावना काम कर ही थी, वहीं दूसरीओर भक्तों को आनंदमय करे के लिए लोकरंजन की भावना भी काम करती है। यें दोनों भावनाएँ ही जीवन के सत्यं, शिवं और सुन्दरम की रक्षा करने में सक्षम हैं। यही कारण है कि सगुण भक्तिधारा के कवियों ने माधुर्य भाव को मुख्यता दी है, साथ ही, आराध्य देव का शक्ति के अजस्त्र स्त्रोत और भण्डार के रुप में वर्णन किया है।

सगुण ब्रह्म के लोकरक्षक रुप में आराध्यदेव राम रहे तो लोकरंजन के अधिष्ठाता कृष्णा बने। रामोपासना में सर्वप्रमुख कवि तुलसीरादस हुए तो कृष्णोपासक कवियों में सर्वोपरि सूरदास स्वीकार गये।

सगुण भक्तिमार्ग की पृष्ठभूमि - भारतवर्ष में ईश्वर-प्राप्ति या सद्‌गति के ज्ञान, भक्ति और कर्म - ये तीन मार्ग माने गये हैं। ये तीन मार्ग आदिकाल से चले आये हैं, किन्तु कभी किसी की प्रधानता रही तो कक्षीकिसी की। भक्तिमार्ग मानव प्रकृति के अनुकूल होने के कारम लोकप्रिय रहा है। प्रचीनकाल में यह 'भागवत धर्म' का नाम से प्रख्यात था। इसी को महाभारत में 'पाँचरात्र धर्म' और 'सात्वत धर्म' भी कहा है। 'श्रीमद्‌भगवत्-गीता' में भक्ति और शराणागति के भाव प्राचुर्य के साथ पाये जाते है। देवर्षि नारद भागवत धर्म के मुख्य आचार्य माने गये हैं। इन्होंने अपने भक्ति-सूत्रों में भक्ति-सूत्रों में भक्ति को ज्ञान की अपेक्षा प्रधानता दी है।

वैदिक कर्मकाण्ड के हिंसावाद की प्रतिक्रियास्वरुप बौद्ध धर्म का उदय हुआ। बौद्ध धर्म की कठिन लौह-श्रृंखला लोगों को बन्धनस्वरुप प्रतीत होने लगी, और मानव हृदय की आवश्यकताओं ने महायान शाखा में भक्तिमार्ग का प्रवेश करा दिया। धीरे-धीरे बौद्ध धर्म का सिक्का जमा किन्तू उसी के साथ-साथ कर्मकाण्ड और तन्त्रवाद का भी बोलबाला हो गया, अतः फिर सुधार की आवश्यकता हुई। केरल में श्री शंकराचार्य का जन्म हुआ। शंकराचार्य ने बौद्धों तथा मण्डन मिश्र आदि कर्मकाण्डियों से शास्त्रार्थ कर अपने 'ब्रह्मां सत्य जगन्मिथ्या' वाले मायावाद का प्रतिपदान किया। विद्‌तमण्डली में उसका बड़ा आदर हुआ, और भारतवर्ष के धार्मिक विचारों पर उसकी गहरी छाप पड़ी ----यहाँ तक कि परम श्रृंगारी कवि बिहारी भी उसके प्रभाव से मुक्तन रह सकेः

मैं समुझ्यौ निरधार, यह जग कांचों काँच सो ।
एकै रुप अपार, प्रतिबिम्बित लखियतु जहाँ ।।

शंकरवेदान्त ने बौद्ध धर्म की कमी को तो पूरा कर दिया, किन्तू वह मानव हृदय को पुरा सन्तोष न दे सका। दक्षिण भारत में भगवत धर्म की परम्परा आलवार सन्तों की वाणी में प्राचीन काल से चली आ रही थी। आलवार सन्तों ने अपनी भक्ति-भावना की व्यंजना तमिल भाषा में की थी। उनके पश्चात कुछ आचार्य भी हुए जिन्होंने अपने भावों का संस्कृत में प्रकाशन किया। इन आचार्यो में नाथमुनि तथा यामुनाचार्य प्रमुख हैं।

रामानुजाचार्य - ने संसार की सत्ता स्थापित कर विशिष्टाद्वैत सम्प्रदाय चलाया। उन्होंने अपने गुरु यामुनाचार्य की अन्तिम अभिलाषा का पालन करते हुए ब्रह्मसूत्र पर श्री भाष्य की रचना की और जगत की सत्यता तथा ब्रह्मा की सगुणता का प्रामाणिक निरुपण किया। रामानुजाचार्य के अनुसार निर्गुण ब्रह्मा का अर्थ है प्राकिृतिक गुणों ----सत्व, रज, एवं तम-से रहित ब्रह्मा, इसलिए वह गुणाती एवं प्रकृति से परिवर्ती माना गया है। किन्तु उसमें अनन्त ज्ञान, शक्ति,तेज आदि गुण नित्य रुप से रहते हैं। रामानुजाचार्य ने भक्ति पर विशेष बल दिया और ज्ञान ए' कर्म को उसका अंग बताया। उन्होंने भगवान के प्रति स्वयं शरणागति का अनुष्ठान करके शारणागति को भी मोक्ष-प्राप्ति का एक स्वतन्त्र उपाय सिद्ध किया। पीछे के आचार्यो ने शरणागति अतवा प्रापत्ति को अत्याधिक मुख्यत दिया। शरणागति में भगवान पर अपनी रक्षा का भारसमार्पित करके महाविश्वासपूर्वक अपने को भगवान के अधीन कर देना पड़ता है।

श्री रामनुज ने नारायण को परब्रह्मा या परम तत्व माना है। नारायण अथवा उनके अवतारी रुपों - राम, कृष्ण आदि -----की उपासना को स्वीकार किया है।

श्री रामानुज अत्यन्त उदार प्रकृति के थे। उनके अनुसार भगवान की उपासना के लिए किसी भी जाति का व्यक्ति अधिकारी होता है। आलवार सन्तो में सभी जाति के व्यक्ति हैं, जिनका रामानुज ने गुरु समान ही आदर किाय। किन्तु सामाजिक या लौकिक जीवन में रामानुज ने जाति-पाँति के शास्त्र - विधान को स्वीकर किया।

रामानुजीय शिष्य-परम्परा की पाँचवीं पीढ़ी में रामानन्द जी ने भक्ति का द्वार सबके लिए खोल दिया। उन्होंने कबीर आदि मुसलमानों तथा रैदास आदि अछूतों को भी वैष्णव धर्म में आश्रय दिया। अनेक सन्त रामानन्द से प्रभावित हुए हैं। उनके सम्प्रदान में कबीर जैसे निर्गुणवादी और तुलसी जैसे सगुणवादी शामिल हैं। पीपा, सेना, रैदास, मलूक आदि सभी सन्त रामानन्द स्वामी के ऋणी हैं। रामानन्द ने लोगों को राम-मन्त्र से दीक्षा दी। उनके सम्प्रदाय में राम ने नारायण का स्थान ले लिया। रामानन्दीय शिष्य-परम्परा में गोस्वामी तुलसीदास सातवीं पीढ़ी में माने जाते हैं।

जिस प्रकार रामानन्दीय सम्प्राय में, जो 'रामावत सम्प्रदाय' के नाम से भी प्रख्यात है, रामोपासना की प्रधानता रही, उसी प्रकार श्री मध्वाचार्य, श्री वल्लभाचार्य श्री चैतन्य महाप्रभु तथा श्री निम्बार्काचार्य (१२ वी शताब्दी) के सम्प्रदायों में कृष्णोपासना की मुख्यता रही। श्री मध्वाचार्य ने द्वैतवाद की (जिसकी भक्ति -भावना के लिए आवश्यकता थी) स्थापना की। श्री चैतन्य महाप्रभु ने भी अधिकतर उन्हीं के सिद्धान्तों को माना, और नाम-संकीर्तन पर अधिक बल दिया। उनकी भक्ति में प्रेमोन्मत्तता अधिक थी।

श्री वल्लाभाचार्य विष्णुस्वामी से प्रभावित थे। उन्होंने शुद्धाद्वैत की स्थापना की। उन्होंने गोपाल-कृष्णा की वात्सल्य-भाव से उपासना की। सूरदास जी (अष्टछाप के प्रमुख कवि) इसी सम्प्रदाय के थे। श्री निम्बार्काचार्य ने द्वैताद्वैत अथवा भेदाभेद का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। श्री हितहरिवंशजी ने श्री राधिकाजी की उपासना को प्राधान्य देकर श्री राधावल्लभ सम्प्रदाय की स्थापना की। महाराष्ट्र में समर्थ रामदास, तुकाराम, नामदेव, ज्ञानेश्वर आदि सन्तों और महात्माओं ने अपनी रचनाओं द्वारा मराठी भाषा के साहित्य की श्रीवृद्धि की। इन लोगों की कुछ कविताएँ हिन्दी भाषा में भी है। पंजाब में गुरु नानक ने सिक्ख सम्प्रदाय की स्थापना कर पंजाबी भाषा में भक्ति का स्त्रोत बहाया।

9. सगुण भक्त कवियों की विशेषताएँ लिखिए।

उ.

1. भक्त कवि वैष्णव थे। और विष्णु भगवान के सगुण और साकार रुप ---जो रामाकृष्णादि अवतारों में व्यक्त हुआ था ----- के उपासक थे। वे उनको ब्रह्मा के ऊपर मानते थे। सन्त कवि निर्गुण ब्रह्मा के उपासक थे। प्रेममार्गी कवियों का उपास्य सन्तों के ब्रह्मा की अपेक्ष अधिक सगुण था, किन्तु साकार नहीं था। मुसलमान और ईसाइयों का खुदा सगुण तो हैं, किन्तु राम-कृष्णा की भाँति साकार नहीं है।

2. अपने इष्टदेव का गुणागान तथा उसकी लीलाओं का वर्णन करना वे एक धार्मिक कर्तव्य समझते थे। उसमें उनके हृदय का उल्लास और उसके कारण आत्म-निवेदन भी सम्मिलित रहता था।

3. ये लोग कविता के अभिव्यक्ति का साधन-मात्र मानते थे, उसको साध्य कभी नहीं बनाया। वे कविता को काव्य-कला के लिए कभी नहीं करते थे, जबकि रीतिकालीन कवि कविता में कला को ही मुख्यता देते थे।

4. ये लोग राजश्रय की परवाह नहीं करते थे। जो लिखते थे, स्वान्तःसुखाया या लोकहिताय लिखते थे, इसीलिए वैष्णव भक्त कवि सच्चे अर्थो में जनता के कवि थे। इस बात में सन्त और कुछ- कुछ सूफी कवि उनसे समानता रखते थे। रीतिकालीन कवियों में यह बात नहीं थी। वे लोग अपने आश्रयदाताओं के लिए कविता करते थे।

5. ये भक्त कवि अपने कर्मो और गुणों की अपेक्षा भगवान की कृपा को अधिक महता देते थे।

6. शील-सौन्दर्य के उपासक ये कवि अपने - अपने आराध्य प्रभु में इन्हीं गुणों को साकार करके बखान करते थे।

10. रामभक्ति धारा का सामान्य परिचय लिखते हुए उनकी विशेषताएँ भी लिखिए।

उ. **सामान्य परिचय -** जैसा पिछले अध्याय में किये गये विवेचन से स्पष्ट है, लोकरक्षण और लोकरंजन हेतु ब्रह्मा रुप में अवतार धारण करता है। लोकरक्षण और लोकमंगल का साकार अवतार श्रीराम के रुप में हुआ। रामकथा का आधार मूल रुप से वाल्मीकि रामायण ही रही। रामभक्ति को धारा के रुप में प्रवहमान करने का श्रेय रामानंद जी के प्रयत्नों को ही दिया जायेगा। रामानंद जी ने बैकुण्ठ बिहारी विष्णु की उपासना से अधिक विष्णु के अवतार श्रीराम की लौकिक लीलाओं का महत्व दिया। रामानंद जी के शिष्यों की संख्यता बहुत थी जिनमें कबीर, रैदास के नाम भी आते हैं, लेकिन इनकी रामभक्ति को सर्वव्यापक बनाने में तुलसीदास का काम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

तुलसीदास से पूर्व राम के अवतारी रुप को चित्रित करने वालों में विष्णुदास और ईश्वरदास के नाम विशेष रुप से उल्लेख्य हैं। बाद में अग्रदास और नाभादास के नाम भी रामभक्ति धारा में महत्वपूर्ण है। अग्रदास की ‘रामाष्टयाम’ और ‘राम ध्यान मंजरी’ तथा ताभादास कृत ‘अष्टयाम’ रामोपासना के मह्तवपूर्ण काव्यग्रन्थ हैं।

तुलसीदास के पश्चात् इस काव्यधारा में प्राणचंद चौहान, हृदयराम, केशवदास, सेनापति, प्रियदास कलानिधि, महाराज विश्वनाथ सिंह, रघुनाथ सिंह आदि के नाम भी महत्वपूर्ण हैं।

रामभक्ति काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ :

1. मर्यादा पुरुषोत्तम, लोकरक्षक और लोकमंगल के विधायक के रुप में श्रीराम की प्रतिष्ठापना करना मुख्य उद्देश्य रहा।

2. राम को शक्ति, शील और सौंदर्य के समन्वित और सजीव साकार रु में प्रस्तुत किया।
3. राम को आराध्य मानते हुए भी वैष्णव, शैव, शाक्त और स्मार्त सभी मतों को सम्मान देते हुए समन्वय के मार्ग को अपनाया।
4. भक्ति के साथ इन भक्त कवियों ने कर्म और ज्ञान की भी प्रतिष्ठा की। इनके राम तो सतत कर्म के ही प्रतीक हैं, अतः इन्हें कर्मवाद का समर्थक मानना युक्तिसंगत होगा।
5. प्रबन्ध काव्य रचने में ही इस धारा के कवि अधिक सचेष्ट रहे।
6. भावपक्ष में इन्होंने श्रृंगार एवं भक्ति रसों के साथ करुण, रौद्र, वीर आदि अन्य रसों का भी तन्मयकारी चित्रण किया है।
7. विविध भाषा प्रकारों के साथ इस धारा के कवियों ने सभी प्रचलित छन्द-शैलियों को अपनाने का प्रयास किया। छन्दों केवैविध्य के साथ इनमें अलंकार-वैविध्य और सौष्ठव भी सराहनीय रुप में परिलक्षित होता है।
8. इस धारा के कवियों ने एक विशिष्ट आदर्श और उद्देश्य को लेकर काव्य-रचना की है - --- असद् पर सदु की विजय का घोष इनका मुख्य उद्देश्य है।

सुमेरु कवि गोस्वामी तुलसीदास

रामोपासक कवियों में ही नहीं वरन् हिन्दी के अन्यान्य कवियों में गोस्वामी तुलसीदार का स्थान सुमेरु पर्वत की भाँति माना जाता है। विश्वकवि के रुप में तुलसी विख्यात हैं।

तुलसीदास जी का जीवन परिचय

जीवन-परिचय - तुलीसदास का जन्म सन् 1540 ई. के लगभग बाँदा जिले (उत्तर प्रदेश) के राजापर गाँव में माना जाता है। कुछ विद्वान इनका जन्म-स्थान सोरों,जिला एटा (उत्तर प्रदेश) मानते हैं। इनके पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। पैदा होते ही माता की मृत्यु हो जाने से इनके पिता ने इन्हें अशुभ जानकर त्याग दिया था। इससे इनका बचपन कष्टमय बीता। भक्त नरहरिसादस की देख-रेख में तलसीदास ने शिक्षा प्राप्त की। बड़े होने पर दीनबन्धु पाठक की पुत्री रत्नावली से विवाह हुआ था। तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली को बहुत प्रेम करते थे। कहा जाता है कि एक दिन इनकी पत्नी बिना कहे अपने पिता के घर चली गई थी। तुलसी उससे मिलने ुसी दिन रात्रि को उसके घर पहुँचे। यह बात उनकी पत्नी को अच्छी नहीं लगी। उसने तुलसी को कट्ट शब्द कहे, जिन्हें सुनकर तुलसी ने घर

त्याग दिया और वैराग्य ले लिया। वे काशी में रहने लगे, जहाँ उन्होंने संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों का खूब अध्ययन किया। सन् 1623 ई. में इनका देहावसान वाराणसी के अस्सी घाट में हुआ।

रचनाएँ - तुलसीदास की प्रतिभा बहुमुखी थी। 'रामचरितमानस', 'विनय-पत्रिका','कवितावली', 'गीतावली', 'होदावली', 'कृष्णगीतावली' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। 'रामचरितमानस' तुलसीदास का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का संसार की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

भाषा-शैली - तुलसीदास ने अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं में काव्य-रचना की है। दोनों भाषाओं पर इनका समान अधिकार था। इनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है। कहीं-कहीं अरबी, फारसी, गुजराती आदि भाषाओं के शब्द भी इनकी रचनाओं में मिलते हैं। भाव, भाषा और छन्द का सुन्दर समन्वय इनके काव्य में हुआ है।

विचारधारा - तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि थे। इन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम राम की दास्य भाव से उपासना की है। राम के चरित-गान के द्वारा तुलसी ने ऐसे आदर्श को प्रस्तुत किया है, जिससे सभी को जीवन-निर्माण की मिलती है। रामकथा के द्वारा तुलसी ने जहाँ भावपूर्ण स्थलों का वर्णन किया है, वहाँ वे समन्वय के द्वारा युग-निर्माण भी कर सके हैं।

तुलसी-प्रतिनिधि कवि - गोस्वामी जी ने अपने समय की जनता के हृदय से हृदय मिलाकर उसके आन्तरिक भावों की अभिव्यक्ति की है। उनकी कविता में हिन्दू धर्म की पूरी मर्यदा उत्रर आयी है। ऐसा कोई रस नहीं जिसका उनके काव्य में पूर्ण पारिपाक न हुआ हो, ऐसा कोई भाव नहीं जिसकी सुन्दर व्यंजना न हुई हो। साथ ही, उन्होंने उस समय के प्रचलित काव्य -विषय - राम और कृष्ण दोनों --पर ही लिखा, और अधिकारपूर्वक लिखा है। उन्होंने उस समय की दोनों काव्य - भाषाओं -पूर्वो अवधी (बरवै रामयण', रामललानहुछू' आदि में), पश्चिमी अवधी (रामचरितमानस'), ब्रजभाषा (गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका) में पूर्ण सफलतापूर्वक रचनाएँ कीं। उन्होंने बुन्देलखण्डी को भी बहुत कुछ अपनाया,जैसा कि 'जायबी' 'कीबी' आदि क्रियाओं से स्पष्ट हैं।

तुलसी ने छन्द की रचना की सभी प्रणालियों को अपनाया, जैसे (क) वीरगाथाकाल की छप्पय पद्धति जिसको उन्होंने 'रामचरितमानस' के युद्ध-वर्णन में अपनाया है। (ख) विद्यापति और सुरदास की गीत-पद्धाति जिसका परिचय हमें 'राम-कीदावली' और 'कृष्ण-गीतावली' में मिलता है। (ग) गंग आदि भाटों की कवित्त-सवैया पद्धति।इस पद्धति में 'कवितावली' लिखी गयी है, जिसमें भगवान की राजश्री के साथ यश-वर्णन भी है। (घ) कबीरदास जी की बानी की नीति सम्बन्धी दोहा-पद्धति जो अपभ्रंश काल से चली आयी थी। इस पद्धति का प्रयोग गोस्वामी जी ने अपनी 'दोहावली' में किया है। (ङ)जायसी के दोहे-चौपाई वाली प्रबन्ध-पद्धति जिसको गोस्वामी जी ने रामचरितमानस में अलंकृत किया है। यहीं तक

नहीं, वे प्रबन्ध-काव्य, स्फुट-काव्य, गीत-काव्य किसी को बिना अपनाये न रहे। इन शैलियों का रामचरित के वर्णन में प्रयोग कर उनका अत्यन्त परिमार्जित और निखरा हुआ रुप वे उपस्थिति कर सके। अतः भाषा, भाव, शैली एवं छन्द-रचना के विषय में विचार करने पर हम निस्संकोच भाव से कह सकते हैं कि तुलसीदास अपने समय के प्रतिनिधि कवि थे। सूरदास केवल ब्रजभाषा को ही अपना सके और केवल गीत-पद्धति पर रचना कर सके। वे प्रेम और वात्सल्य को छोड़ अन्य किसी भाव को सफलतापूर्वक व्यक्त न कर सके। परन्तु तुलसी की प्रतिभा सर्वोन्मुखी रहीष और उन्होंने रही, और उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रकाशित किया, तथा उस समय की धार्मिक जनता के भावों को भली प्रकार व्यक्त किया।

तुलसी का महत्व -तुलसी ने अपने काव्य में भक्ति के साथ शील, आचार, मर्यादा और लोक-संग्रह का सन्देश सुनाकर हिन्दू जाति में अपूर्व दृढ़ता उत्पन्न कर दी। उन्होंने वर्ण-व्यवस्था का पक्ष लेकर हिन्दू समाज के लिए एक अभेद्य दुर्ग बना दिया, और हिन्दूओं में मुसलमान धर्म के प्रचार को रोका। गोस्वामी जी ने हिन्दू धर्म के मूल सिद्धान्तों को भाषा में अवतीर्ण कर उनका समाज में प्रचार किया, और शैव तथा वैष्णव सम्प्रदाय के पारस्परिक मतभदों के दूर कर उनको और भी संगठित कर दिया। संस्कृत के दुरुह होने के कारण उसके द्वारा हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों को इतना व्यापक बनाना कठिन था, इसलिए उन्होंने संस्कृत प्राप्त करने का लोभ संवरण कर हिन्दी भाषा को अपनाया। हिन्दी में लिखने के कारण उनको पण्डित समाज के विरोध का सामना करना पड़ा, किन्तु उन्होंने उसकी परवाह न की। वे उत्तम भाव चाहते थे, भाषा के पीछे नहीं पड़े थे। वे इस सम्बन्ध में बड़े उदार और प्रगतिशील थे। उनका सिद्धान्त थाः

का भाषा का संस्कृत, भाव चाहिए साँच ।
काम जो आवे कामरी, का लै करें कमाँच ।।

दोहावली

तुलसी साहित्यिक और संस्कृतिक दोनों ही दृष्टियों से बेजोड़ हैं। 'रामचरितमानस' और 'विनयपत्रिका' साहित्यतिक दृष्टि से ही अनुपम नहीं ठहरतीं वरन् भारत की सांस्कृतिक विरासत में भी ये बेजोड़ सिद्ध होती हैं। साहित्य-संस्कृति के इसी संगम के कारण तुलसी की पहुँच हर गली और हर घर तक हो सकी है। इसीलिए वे एक ओर जहाँ साहित्य समाज में सर्वाधिक सम्मान के अधिकारी बन सके हैं, वहीं दूसरी ओर वे व्यापक समाज में सर्वोधिक लोकप्रिय व्यक्तित्व के रुप में भी समादृत हो सके हैं।

10. रामभक्ति काव्यधारा के अन्य प्रमुख कवियों के बारे में जानकारी दीजिए।

1. **स्वामी अग्रदास** - ये रामानंद जी की शिष्य-परम्परा में प्रमुख स्वामी कृष्णदास पयहारी के शिष्य थे। ये अच्छे कवियों में गिने जाते है। इनकी रचनाएँ प्रांजल भाषा में है। नाभादास जी इन्हीं के शिष्य थे। इनकी रचित चार पुस्तकें -- 'रामाष्टयाम', 'राम ध्यान मंजरी', हितोपदेश, उपखाणाँ बाधजी, और कुण्डलयाँ -- उपलब्ध हैं। अगअली नाम से भी इन्होंने जो रचनाएँ कीं उनसे माधुर्य भाव की उपासना को बल मिला। यही कारण है, उनकी 'रामष्टयाम' रचना में राम के ऐश्वर्य-वर्णन के साथ उनकी द्वादसलीलाओं में संयोग रति आदि का वर्णन भी मिलता है।

2. **नाभादस -** तुलसीदास के बाद रामभक्ति काव्यधारो में नाभादास जी का नाम बडे आदर से लिया जाता है। इनका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'भक्तमाल' सं.1642 में रचित माना जाता है। इस ग्रन्थ में 326 छप्पयों में दो सौ भक्तों के चरित्र आये हैं। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इस ग्रन्थ की प्रंशसा में लिखा है कि यह ऐसा अपूर्व ग्रन्थ है कि परवर्तीकाल में इसकी एक परम्परा चल पड़ी।

   नाभादास जी ने अपने गुरु अग्रदास जी की प्रेरणा से 'भक्तमाल' नाम का जो ग्रन्थ लिखा इसमें उन्होंने साम्प्रदायिक भेदभाव को छोड़कर सभी भक्तों का यश-वर्णन किया है। भक्तों में इस ग्रन्थ का बड़ा मान है। इसका बंगला भाषा में भी अनुवाद हुआ है। इसके वर्णन सूत्र रूप में हैं। इनसे भक्तों के जीवन पर प्रकाश बहुत थोड़ा पड़ता है, किन्तु इस परजो प्रियादास की टीका है वह बड़ी विस्तृत है, और उसके द्वारा 'भक्तमाल' में जो कमी है उसकी पूर्ति हो जाती है। नाभादस जी तुलसीदास जी के समकालीन थे, और इनसे तुलसीदास जी की भेंट होना भी बताया जाता है। इनके 'अष्टयाम' सम्बन्धी दो ग्रन्थ और बताये जाते हैं --- एक अवधी में दोहा-चौपाइयों में लिखा है, और दूसरा ब्रजभाषा पद्य में।

3. **प्राणचन्द चौहान** ---हृदयराम जी ने भीरामचरित नाटक के रुप में वर्णन किया है। ये काव्य कथोपकथन के रुप में होने का कारण नाटक कहे जाते हैं, अन्यथा इनमें नाटकीय तत्व बहुत कम है। प्राणाचन्द ने 'रामायण महानाटक' लिखा। यह नाटक पद्यात्मक हैं। इसमें संवादों के रुप में रामकथा वर्णित हुई है।

4. **हृदयराम** --- ये पंजाब में पैदा हुए थे और इनके पिता का नाम कृष्णदास था। ये राम भक्त थे। इन्होंने संस्कृत नाटक 'हनुमान्नाटक' के आधार पर 'भाषा हनुमान्नाटक' के आधार पर 'भाषा हनुमन्नाटक' लिखा जो उस काल के लिखे नाटकों में सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ। इसमें कवित - सवैय छन्दों में अच्छे संवाद है ---- उनकी कविता अच्छी कोटि की बन बड़ी है।

11. कृष्णभक्ति काव्यधारा का सामान्य परिचय लिखिए।

उ. दक्षिण के आलवार भक्तों ने सातवीं-आठवीं शती में कृष्णभक्ति का प्रबलता से प्रचार -प्रसार किया। कृष्णभक्ति को सर्वोधिक महत्व प्रदान करने में 'श्रीमद्‌भगवत पुराण' का बड़ा श्रेय है। इस प्रसंग में संस्कृत के सुललित कवि जयदेव के 'गीत गोविन्द' का भी बड़ा महत्व है। संस्कृत के साथ प्राकृतों के साहित्य में भी कृष्णाभक्ति काव्य की परम्परा मिलती है। दसवीं शती के बाद जिन आचार्यो ने भक्ति आन्दोलन के बल दिया उनमें निम्बकाचार्य, बल्लभाचार्य, चैतन्य आदि ने प्रचार में अधिक रुचि दिखायी।

कृष्णभक्ति और गीत काव्य - कृष्ण-भक्ति शाखा के काव्य का विकास प्रायः मुक्तक के रुप में ही हुआ है, और अष्टछाप के भक्त कवियों की संगीत-लहरी में ही हमको ुसका पूरा-पूरा आनन्द मिलता है। यद्यापि कुछ कवियों ने 'रामायण' के अनुकरण में 'कृष्णचन्द्रिका' कार्य में यथेष्ट सफलता प्राप्त न कर सके। इसका यही कारण मालूम होताहै कि यद्यापि कृष्णा भगवान के लोकरंजक ौर लोकरक्षक, दोनों ही रूपों में लोगों की रुचि अधिक आकर्षित हुई, श्रीकष्ण में ऐश्वर्य की अपेक्षा माधुर्य का प्राधान्य है। इसका संगीतमय पदों में ही अच्छी प्रकार से वर्णन हो सकता था। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्रजी के जीवन की-सी अनेकरुपता में अष्टछाप के कवियों का मन न रम सका। इसी कारण प्रबन्ध काव्य लिए ये उचित सामाग्री उपस्थित करने में असमर्थ रहे।

कृष्ण-काव्य पर प्रभाव - कृष्ण-काव्य के दो प्रभाव स्पष्ट रुप से लक्षित होते हैं--- 1) वल्लभाचार्य की बालकृष्ण की उपासना-प्रधान भक्ति-पद्धति, और 2) जयदेव, विद्यापति,चण्डीदास आदि भक्त कवियों की गीत-काव्य पद्धति। महाकवि जयदेव का 'गीत गोविन्द' संस्कृत गीत-काव्य का बड़ा सुन्दर ग्रन्थ है जो स्वर और ताल के साथ गाया जा सकता ह। उन्होंने गीत-काव्य के द्वारा स्त्री-पुरुष की साधारण प्रेमलीलाओं में सहज आकर्षण रखने वाले मनुष्यों के चित्त को अपनी कोमलकान्त पदावली द्वारा राधा-कृष्ण की दिव्य लीलाओं महप्रभु द्वारा बंगाल के इन गेय पदों का वृन्दावन में भी प्रचार हुआ। जयदेव ने विलास-कला- कौतुहल की शक्कर के सहारे हरि-स्मरण की सहारे हरि-स्मरण की औषधि को सांसारिक लोगों के गले के नीचे उतारना चाहा था। उनका कथन अग्रांकित हैः

यदि हरिस्मरण सरसे मनो, यदिविलासकलासू कुतूहलम् ।
मधुरकोमलकान्त-पदावली, श्रुणु तदा जयदेवसरस्वतीम्

उनकी कोमलकान्त पदावली का भी एक उदाहरण देखिये:

मधुकर निकट करम्बित कोकिल कूजित कुज्ज कुीटीरे ।।

कृष्णभक्त श्रृंगारी कवियों के उद्दम श्रृंगार - वर्णन के माध्यम से मुष्यों की रागात्मक वृत्तियों का आश्रय लेकर भगवान का सम्मरण कराया है। भक्तों का हृदय तो वासना-कर्दम से अछूता रहा होगा (कुछ लोग उनके अवचेतन में वासना चाहे मान लें) क्योंकि भक्ति -भावना वासना को दबाये रखती होगी। किन्तु इतर मनुष्यों के लिए ऐसा नहीं कहा जा सकता। रीतिकाल में हरि-स्मरण तो नाममात्र को रह रह गया, किन्तु शक्कर की चाट पड़ गयी। हरि-स्मरण की रसायन की अपेक्षा विलास-कला-कौतूहल की चाशनी अधिक प्रिय लगी। उन लोगों को तो प्रसाधन ही साध्य बन गया।

वल्लभ सम्प्रदाय और अष्ठछाप के कवि - महाप्रभु वल्लभाचार्य ने जिस कृष्णभक्ति का प्रचार किया उससे विशाल जनसमुदाय तो प्रभावित हुआ हो, अनेक कवि भी प्रभावित होकर उनके शिष्य बन गये । उन्हीं की प्रेरणा से सूरदास जी ने भगवान के सगुण रुप का गान किया था। उन्होंने कीर्तन पर्वत पर श्रीनाथजी के मन्दिर की स्थापना की। इस मन्दिर में विधिवत्त पूजन, भजन, भोग, कीर्तन आदि की व्यवस्था के लिए उनके पुष्टिमार्ग के कुछ शिष्य रहा करते थे। वल्लाभाचार्य जी के पश्चात् उनके पुत्र गोसाई विट्ठलनाथ जी ने भी उक्त परम्परा को विकसित किया, और उन्होंने बी अपने चार प्रिय शिष्यों को श्रीनाथजी के मन्दिर के कार्य के लिए चुना। इस प्रकार

चार वल्लभाचार्य जी के तथा चार गोसाई विट्ठलनाथ जी के प्रिय शिष्यों द्वारा आठ प्रसिद्ध कृष्णभक्त कवियों को जो समुदाय बना वही 'अष्टछाप' के नाम से विख्यात है। 'अष्टछाप' के इन आठ कवियों के नाम इस प्रकार है --(1) सूरदास 2) कुम्भनदास 3) परमानन्ददास, 4) कृष्णदास, 5)गोविन्द स्वामी 6) नन्ददास 7) छीतस्वमी और 8) चतुर्भुजदास । इनमें पहले चार वल्लभाचार्य जी के और अन्तिम चार कवि गोसाई विट्ठलनाथ जी के शिष्य थे। इन अष्टछाप के कवियों में सूरदास का स्थान सर्वोपरि माना जाता है।

कृष्णभक्ति काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ

1. कृष्ण ही सर्वस्व हैं ----ब्रह्मा हैं. जगत् और जीव इस ब्रह्मरूप (कृष्ण) के सत् और चित अंश है। ब्रह्मा (कृष्ण) आनंद रुप हैं, उस आनंद को पाना ही जीवात्मा रुपी गोपियों का लक्ष्य है।
2. कृष्णभक्त कवि माधुर्य भाव की भक्ति की उपासना करते हैं।

3. कृष्णभक्त कवि माधुर्योपासना में विरह की तीव्रता को अनिवार्य माने हैं, इसीलिए इन कवियों ने गोपियों के विरह को --भ्रमरगीत प्रसंग को --- विशेष महत्व दिया है।

4. श्रृंगार रस को सर्वोपरि स्थान दिया है। श्रृंगारिक कविता होने से इनकी कविता में सर्वत्र सरसता का संचार मिलता है।

5. कृष्ण की बाल-किशोर -युवा काल की मधुर लीलाओं का मनोहारी अंकन हुआ है।

6. इन कवियों ने सखा भाव की भक्ति को ही अपनाया है।

7. पुष्टिमार्गीय सिद्धान्तों का अनुगमन करते हुए इन कवियों ने ब्रजभूमि, यमुना, मुरली, गोवंश आदि के प्रति अपना भक्ति भाव निवेदित किया है।

8. पद शैली (गीतिकाव्य) का अनुसरण कियाहै। संगीत की इन कवियों को कहरी और व्यापक समझ है।

9. ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।

10. अलंकारों के सहज, स्वाभाविक प्रयोग में इन कवियों की रुचि है।

11. मानव की रागात्मकता को परितोष देने में कृष्णभक्त का योगदान सराहनीय है।

12. कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवियों के बारे में लिखिए।

उ. कृष्ण-भक्ति काव्यधारा में अनगिनत कवियों ने स्नान होकर काव्यकालिन्दी को प्रवाहित किया है। वल्लभाचार्य और उनके पुत्र विट्ठलनाथ जी द्वारा स्थापित अष्टछाप के आठ प्रमुख कवियों के अतिरिक्त मीराबाई, नरोत्तमदास, रसखान, स्वामी हरिदास, आलस, ताज, श्रीभट्ट आदि अनेक कवियों ने इस काव्यधारा ने इस काव्यधारा को प्रवहमान रखने में अपना-अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अष्टछाप के कवि

1. भक्त शिरोमणि सूरदास

वल्लभाचार्य के शिष्य शिरोमणि पुष्टि मार्ग के जहज कहे जाते हैं

जीवन-परिचय - सूरदास का जन्म सन् 1478 ई. के आस-पास माना जाता है। इनका जन्मस्थान मथुरा-आगरा सड़क पर स्थित रुनकता नामक ग्राम माना जाता है। इनके पिता का नाम रामदास

था। ये सारस्वत ब्राह्मण थे। कुछ विद्वानों के मतानुसार सूदरदास चन्दरबरदाई के वंशज थे। सूरदास को कुछ विद्वान जन्मान्ध मानते थे। महाप्रभु बल्लभाचार्य इनके गुरु थे। महाप्रभु बल्लभाचार्य की आज्ञा से ही सूरदासजी श्रीनाथजी के मन्दिर में कीर्तन किया करते थे। प्रतिदिन एक पद बनाकर भगवत्-अर्पण करना इनका नियम था। आपका देहावसान सन् 1583 ई. के लगभग माना जाता है।

रचनाएँ - महाकवि सूरदास की लिखी हुई रचनाओं की संख्या 25 बतलाई जाती है, परन्तु उनमें से तीन ग्रन्थ ही सूर की प्रामाणिक रचनाएँ हैं- 'सूरसागर', 'सुर सारावली' और 'साहित्य-लहरी'। 'सूरसागर' इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है और यही सूरदास की अमर कीर्ति का आधार है। इस ग्रन्थ के विषय में प्रसिद्ध है कि इसमें सवा लाख पद हैं,किन्तु अभि तक उसके लगभग पाँच हजार पद ही प्राप्त हो सके हैं। 'सूरसागर' में सूरदास ने कृष्ण-लीला के वभिन्न प्रसंगों का मार्मिक वर्णन किया है।

भाषा-शैली - सूरदास की भाषा ब्रजभाषा है, जो साहित्यिक होते हुए भी बोल-चाल की भाषा की बहुत समीप है। इन्होंने शब्दों को तोड़ा-मरोड़ा भी है और साथ ही इनकी भाषा में व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियाँ भी हैं। भाषा में मुहावरों का प्रयोग भी हुआ है। सूरदास ने कोमल-कान्त शब्दावली को अपनाकर गेय पद लिखे हैं।उनकी कविता में प्रसाद और माधुर्य गुण की प्रधानता है। कूट काव्य शैली में सूर ने दृष्ट कूट पद भी लिखे हैं, जो जटिल हैं।

विचारधारा - सूरदासजी भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा की कृष्णकाव्य शाखा के कर्वश्रेष्ठ कवि हैं। आपने कृष्ण की सखा भाव से उपासना की है। पुष्टिंमार्गीय भक्ति में विश्वास रखकर आपने कृष्ण-कृपा को ही सर्वोपरि माना और कृष्ण के लोक-रंजक रुप का वर्णन किया। कृष्ण के बाल-लीला वर्णन में तो सूरदासजी अद्विितीय हैं।

रस - सूरदास जी कविता में यद्यापि सभी रसों का पुट मिलता है, तथापि उसमें श्रृंगार, वात्सल्य और शान्त की ही मुख्यता है। ये तीनों रस मनुष्य जीवन की तीनों अवस्थाओं से सम्बन्ध रखते है। वात्सल्य का सम्बन्ध बाल्यावस्था से है, श्रृंगार का यौवानावस्था से और शान्त का वृद्धावस्था से। श्रृंगार-जीवन में वे किसी कवि से पीछे नहीं है। वात्सल्य रस के सम्बन्ध में यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि कोई भी कवि उनकी छाया भी नहीं छू पाता, और शान्त रस में शायद तुलसी से पीछ रह जाते हैं, किन्तु बहुत पीछे नहीं। उनकी विनय में एक निजीपन है , जो उसे एक विशेष माधुर्य प्रदान करा देता है। 'सूरदास द्वारे ठाड़ो, आँधरो भिखारी' में उनकी शारीरिक दुर्बलता से सामंजस्य रखता हुआ कैसा दैन्याव है।

उनका वात्सल्य वर्णन एक प्रकार से बाल मनोविज्ञान का माधुर्यपूर्ण अध्यन है। भगवान कृष्ण की बाललीलाओं का ऐसा सुन्दर, सरल और सरस वर्णन है कि पुथ्वी पर स्वर्ग अवतरित हो जाता है। यद्यपि सूर ने कृष्ण को 'हरि' कहकर उनका देवत्व -स्वीकार किया है (और इसी भक्ति - भावना के कारण उनके वर्णनों में इतनी सरललता आ गयी है) तथापि ये वर्णन ऐसे हैं कि बिना भक्ति-भावना वाला मनुष्य भी इनको पढ़कर भावमय हो जाता है, और सूर के स्वर में स्वर मिलाकर कह उठता है, ''जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ सो नन्द भामिनि पावै।''

सुर का श्रृंगार वर्णन भी बड़े महत्व का है। उसमें कवि-परम्परा का पालन मात्र नहीं है वरन् उसमें जीवन की सवीवता और पूर्णता लक्षिता होती है। कृष्ण और गोपियों का श्रृंगारएक व्यापक जीवन का अंग माना जाता है और इसीलिए उनका वियोग एक विशेष तीव्रता धारण कर लेता है। सूर का 'भ्रमरगीत' वियोग श्रृंगार का ही उत्कृष्ठ ग्रन्थ नहीं है वरन् उसमें सगुण और निर्गुणवाद का भी सुन्दर काव्यमय विवेचन है। इसके माध्यम से सूर ने निर्गुणवाद पर सगुणावाद की विजय दिखायी है। 'भ्रमरगीत' वियोग प्रसंग के इन पदों में जहाँ एक ओर गोपियों के मार्मिक उद्‌गार हैं, वहाँ दूसरी ओर पुष्टिमार्गीय भक्ति सिद्धान्तों का सुन्दर रीति से प्रतिपादन भी हो गया है। गोपियों के व्यंग्य और उपालम्भ उनकी सजीवता के परिचायक हैं। 'सूरसागर' वात्सल्य व दाम्पत्य-प्रेम का लहराता हुआ सागर है। उसमें भाव लहराते हुए दिखालायी पड़ते हैं। भावों की सम्पन्नता के अनुकूल ही उनकी संगीतमयी भाषा है, जिसके प्रभाव में अलंकारों ने बाधा नहीं डाली है। भावपक्ष और कलापक्ष का उसमें सुन्दर सन्तुलन हुआ है। राधा-कृष्णा का प्रेम भी जीवन व्यापार के बीच ही उपस्थित हुआ है। सूर के प्रेम-काव्य में लोक-जीवन की अवहेलना नहीं हुई है, उसमें बाललीला और यौवनलीला में बड़ा सुन्दर तारतम्यमय विकास दिखाया गया है। बंगाली कवियों की भाँति सूर ने राधिका को परकीया के रुप में नहीं दिखाया है। सूर के श्रृंगार और वात्सल्य भक्ति की ही अंगर बनकर आये हैं। उनके वर्णन में भक्ति का निजी हृदयोल्लास झाँकता हुआ ही नहीं वरन् उफनता हुआ दिखायी देता है।

भाषा - सूर की भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा हैष जिसमें कहीं-कहीं संस्कृत का भी पुट है, किन्तु अधिक नहीं। साहित्यिक होते हुए भी वह बोलचाल की भाषा के अधिक निकटहै, और उसमें उसका चलतापन भी है। कहीं-कहीं चलन से उतरे हुए ब्रजभाषा के टेठ ग्रामीण शब्द भी आ गये हैं। उनकी भाषा में माधुर्य गुण पूर्णतया विद्यमान है। उन्होंने ब्रजभाषा की प्रगति के अनुकूल वर्णो को कोमल बनाया है, जैसे 'व' का 'ब', 'ण' का 'न' कर दिया है। सूर के शब्दों में बडी सुन्दर

व्यंजना रहती है। योग का तिरस्कार करने के लिए उसे 'मोट औ खेप' कहा है, जिससे एकदम उसकी अल्पमूल्यता, स्थूलता और निर्रकता का चित्र उपस्थित हो जाता है। सूर ने मुहावरों का भी बड़ा सार्थक प्रयोग किया है (खोटीखाई', न्हात खसे जनि वार) सूर की भाषा में पूर्वी प्रयोग,जैसे मोर, हमार, कीन आदि भी यत्र-तत्र मिलते हैं। कहीं-कहीं गहिबी आदि बुन्देलखण्डी प्रयोग भी आ गये हैं। एक-आध पंजाबी शब्द भी जैसे प्यारी, महँगी के अर्थ में आ गया है।

भक्ति भावना - जैसा कि ऊपर कहा गया है, सूरदास जी की दीक्षा वल्लभ सम्प्रदाय की है। उनकी उपासना बालकृष्ण की थी, और भक्ति सखा-भाव की । कुछ लोग उनको उद्धव जी का अवतार मानते हैं। इस आधार पर श्रद्धेय मिश्रबन्धुओं का यह विचार है कि सूरदास बड़े अक्खड़ थे, इसलिए वे अपने भगवान को गोपियों के मुख से खरी-खोटी कहलाने में नहीं चुके। जिन प्रसंगों में भगवान को खरी-खोटी सुनायी गयी हैं वे श्रृंगार और वात्सल्य के हैं। उनमें प्रेमधिक्य के कारण खरा-खोटा कहा ही जाता है। यशोदा के लिए तो मथुरा में पराक्रम दिखाने वाल कृष्ण 'छगन-मगन' और 'ललित लड़ैते' ही बने रहते हैं। इसमें अक्खड़पन की कोई बात नहीं है। तुलसीदास जी की भक्ति भावना में दास्य भाव का प्रभाव ऐसा बढ़ा-चढ़ा है कि वे उन प्रसंगों को आने ही नहीं देते जिनमें कोई खरी-खोटी कहे। उनका श्रृंगार बड़ा मर्यादित है। उसमें उपालम्भ और मान की गुंजायश नहीं रहती। रामचन्द्र जी की हीनता दिखाये जाने के भय से उन्होंने लव-कुश काण्ड नहीं लिखा। तुलसी का वात्सल्य भी कहीं-कहीं अवश्य उनकी दास्य भावना से प्रभावित हो गया है। सूरदास जी ने जहाँ विनय की है वहाँ वे भी दीनता और हीनता दिखाने में तुलसीदास जी से पीछे नहीं। देखिए।

प्रभू हौं सब पतितनि कौ टीकौ ।
मोहि छाँड़ि तुम और उधारे, मिटै पूल क्यों जी कौ।
कोऊ न समरथ अध करिबे को, खेंचि कहत हों लीकौ ।।
जैसे ही राखहु तैसे हि रहिहौं ।।
कमल नयन धनश्याम मनोहर,अनुचर भयौ रहौं।
सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि, अनुचर चरन गहौं ।।

कृष्णभक्ति धारा के अन्य प्रमुख कवि

नन्ददास - इनके जन्म संवत के सम्बन्ध में बड़ा मतभेद है। डॉ. श्यामप्रसाद मानते हैं। प्रभुदयाल जी मीतल पं. कण्ठमणि शास्त्रि के आधार पर मानते हैं। गोस्वामी गोकुलनाथजी ने अपने 'दो-सौ बावन वैष्णवनकी वार्ता' में इनको गोस्वामी तुलसीदास जी का भाई बताया है। गोस्वामी जी के ही अनुकरण ें इन्होंने 'श्रीमद्‌भगवत्' की कथा पद्य में कथा पद्य में लिखी है। नन्ददास के ही साथ वृन्दावन जाने पर तुलसीदास जी ने श्रीकृष्ण की मूर्ति के सामने यह प्रसिद्ध दोहा कहा था।

कर मुरली उर माल पट, भले बने हो नाथ।

तुलसी मस्तक तब नवै, धनुषबान लेहु हाथ ।।

तुलसीदास और नन्ददास और के भाई-भाई होने का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता। तुलसीदास के भाई होने की बात 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' पर अवलम्बित है। 'भक्तमाल' में इनको चन्द्रहास का भाई कहा गया है ---- 'चन्द्रहास अग्रज सुहुद, परम प्रेम-पथ में पगे, और 'गोसाईचरित' में इनको तुलसीदास गुरुभाई बताया गया है। --- शिक्षा गुरु बन्धु भये तिहिते' इसलिए यह बात अनिश्चित - सी हो जाती है। सोरों की सामग्री के अनुसार नन्ददास जी तुलसीदास जी के चचेरे भाई और गुरुबाई दोनों ही ठहरते हैं। वे सोरों पास रामपुर ग्राम में रहते थे, जिनका नाम उन्होंने पीछे से श्यमपुर कर दिया था। सोरों में एक परिवार है जो अपने को नन्ददास जी का वंशज मानता है। रामपुर निवासी होने का उल्लेख 'भक्तमाल' में भी है। अष्टछाप के सभी कवियों में सूरदास जी के बाद यही सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इनके लिए कहा जाता है --- ''और कवि गाढ़िया, नन्ददास जडिया।'' इन्होंने एक -एक पद को काट-छाँट कर उसे नगीना का-सा सौन्दर्य प्रदान किया है। शब्दों के चयन और संगटन तथा उनमें ध्वन्यात्मक अर्थ-गाम्भीर्य भरने में ये सिद्धहस्त हैं। इनकी 'रास-पंचाध्यायी' बहुत प्रसिद्ध है। इसमें भगवान की रासलीला का बड़ा सुन्दर, प्रवाहमय और सजीव भाष में वर्णन है। उसकी उत्साहपूर्ण गति का चित्र-सा हमारे सामने उपस्थित हो जाता है, देखिएः

छवि सों निर्तनि, पटकनि, लटकनि, मण्लड डोलनि।

कोटि अमृत सम मुसकनि, मंजुलता थेई-थेई बोलनि ।।

इस उद्धरण में नन्ददास ट वर्ग प्रधान ओज गुण को भी श्रृंगार का सहायक बनाने में सफल हुए हैं।

नन्ददास जी ने 'रास-पंचाध्यायी' को लौकिक श्रृंगार के रुप में नहीं लिखा है। वे रासलीला को गोलोक की नित्य लीला का ही अंग मानते हैं ---''नित्य रास रमनीय नित्य गोपी जन वल्लभ। '' इस दृष्टिकोण से कम से कम भक्तों के लिए नन्ददास के श्रृंगारिक वर्णनों की ऐन्द्रिकता उद्वेगजानक नहीं होती । लौकिक दृष्टि से भी 'रस - पंचाध्यायी' के वर्णन बड़े सजीव और सरस हैं। इनकी भाषा में अनुप्रास और पद-विन्यास का विशेष सौन्दर्य है। सूरदास जी ने चलती हुई भाषा का स्वाभाविक माधुर्य दिखाया है, और नन्दादस जी ने उसे शब्दालंकारों से विभूषित कर दिया है।

ग्रन्थ - इनके 'पंचाध्यायी' के अतिरिक्त 1. भ्रमरगीत 2. अनेकार्थमंजरी 3. मनस मंजरी, नाम-माला, 4. रस-मंजरी ,5. श्याम-सगाई 6. रुक्मिणी-मंगल 7. भाषा दशम स्कन्ध आदि बहुत - से ग्रन्थ प्रयाग विश्वविद्यालय के संग्रह से प्रकाशित हो गये हैं। इनमें 'भ्रमरगीत' अधिक लोकप्रिय है। इसमें भावकता के साथ दार्शानिक तार्किकता का प्राधान्य है। जहाँ सूरदास जी की गोपियाँ अपने स्त्रियोचित सरलतापूर्ण सरल निजी अनुभव की तीव्रता के सामने उद्धव के तर्कों को ठहरने नहीं देतीं वहाँ नन्ददास जी की गोपियों में बुद्धिवाद का बाहुल्य है। उन्होंने अद्धव को दर्शन की ही तर्क-भूमि में पछाड़ने का प्रयत्न किया है। उनमें भावुकता और हास्य-व्यंग्य की भी कमी नहीं है। देखिए।

जो उनके गुन नाहि, और गुन भये कहाँ ते ।

बीज बिना तरु जमें, मोहितुम कहौ कहाँ ते ।।

वा गुन की परछाँह ही, माया दर्पन बीच ।

गुन ते गुन न्यारे भये, अमल वारि मिलि कीच ।।

3. **परमानन्ददास -** रचना के विस्तार और काव्य भी उत्कृष्टता की दृष्टि से अष्टछाप के कवियों में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। ये कन्नौज के रहने वाले थे, गोस्वामी विट्ठलनाथ की दीक्षा लेने से पूर्व ये भी सूरदास जी की भाँति शिष्य और सेवक बनाते थे और स्वामी कहलाते थे। बाल्यकाल से ही इनकी रुचि भावगद् भक्ति की ओर थी। इन्होंने विवाह नहीं किया। इनके रचे हुए छह ग्रन्थ बतलाये जाते हैं --1. 'परमानन्द-सागर' 2. परमानन्दजी के पद 3. दान-लीला 4. उद्धव -लीला 5. धृव-चरित्र, तथा 6. संस्कृत-रत्नमाला

यद्यपि इन्होंने भगवान कृष्णा की बाललीलाओं का विशद् वर्णन किया है, तथापि इनके विरह-वर्णन सम्बन्धी पद भी बड़े उत्कृष्ट माने जाते हैं। एक उदाहरण नीचे दिया जाता है।

ब्रज के बिरही लोग बिचारे।

बिन गोपाल ठगे से ठाड़े, अति दुर्बल तन हारे ।।

मात जसोदा पन्थ निहारित, निरखत साँजा सकारे।

जो कोउ कान्ह कह बोलत, अँखियन बहत पनारे।।

ये मथुरा काजर की रेखा, निकसे ते कारे ।

परमानन्द स्वामी बिन ऐसे , ज्यों चन्दा बनि तारे ।।

4. **कृष्णदास -** ये जाति के शुद्र थे और गुजरात के रहने वाले थे। महाप्रभु वल्लभाचार्य के सुयोग्य शिष्य और कृपापात्र होने के कारण ये मन्दिर के मुखिया बना दिये गये थे। इनके 'जुगल मान चरित' के अतिरिक्त 'भ्रमरगीत' और 'प्रेमतत्व निरुपण' नाम के दो ग्रन्थ और बताये जाते हैं। मुख्यतःराधाकृष्ण की श्रृंगारी लीला के पद ही इन्होंने रचे थे।

5. **कुम्भनदास -** अष्टछाप के प्रायः सभी कवि अपनी ईश-अनन्यता और तन्मयता के लिए प्रसद्धि हैं। ये अच्छे गायक थे, और ब्रजभाषा पर पूर्ण अधिकार रखते थे। ये लोग हृदय की अनुभूति से प्रेरित हो अपने भावों को संगीतमयी भाषा में अभ्व्यिंजित करते थे। इनकी रचनाएँ स्वान्तःसुखाय होती थीं। ये राज्यश्रय नहीं चाहते थे। अकबर बादशाह द्वारा निमन्त्रण के अनुकूल न था। नीचे के पद से प्रकट ोता है कि उनको दरबार में जाने से कितनी ग्लानि हुई थी।

सन्तन कहा सीकरी सों काम ।

अवत जात पनहियाँ टूटीं, बिसरि गयो हरि नाम ।

जिनको मुख देखत दुख उपजत, कवि परी सलाम।।

6. **छीत स्वामी -** इन्होंने बीरबल द्वारा गोस्वामी विट्ठलनाथ के देवत्व में सन्देह प्रकट किये जाने पर उनकी पुरोहित - वृत्ति त्याग दी थी। ये इतने भावुक थे कि यमुना-जल में पैर देने के अपराध के भय से उसमें प्रवेश नहीं करते थे। रेती में लोटा करते थे और कूप के जल से नहाते थे।

अष्टछाप के कवियों की वाणी मे भगवद भक्ति के अतिरिक्त श्रीकृष्ण के चरणारविन्द से पवित्र की हुई ब्रजभूमि के प्रति भी विशेष श्रद्धा प्रकट होती है। देखिए यह पदः

हे विघना । तो सों अँचरा पसारि माँगों,

जन्म-जन्म दीजो मोहि याही ब्रज बसिबो ।।

7. **चतुर्भुजदासदास -** ये कुम्भनदास के पुत्र और विट्ठलनाथ जी के शिष्य थे। इनके रचित तीन ग्रन्थ 'भक्तिप्रताप' द्वादश यश और हितजू को मंगल प्राप्य हैं। गृहस्य जीवन बिताते हुए ही ये श्रीनाथ जी की सेवा में लीन रहे थे।

8. **गोविन्द स्वामी -**यह तो ब्रज को छोड़कर बैकुण्ठ भी नहीं जाना चाहतेः

कहा करें बैकुण्ठहिं जाय ।

जहँ नहिं कुंज लता, अलि, कोकिल, मन्द सुगन्ध न वायु बहाय।

नहिं वहाँ सुनियत स्त्रवनन वंशी धुनि, कृष्ण न मुरलि अधर लगाय।।

सारस हंस मोर नहिं बोलत, तहँ को बसिबौ कौन सुहाय।

गोविन्द प्रभु गोपी चरनन की ब्रज-रज तजि वहँ जाय बलाय।।

ब्रज की महिमा के साथ यहाँ प्राकृतिक दृश्य का वर्णन भी अच्छा है। थोड़े-बहुत हेरफेर के साथ परमानन्द का भी ऐसा ही एक पद है।

अन्य कृष्णभक्त कवि

जैसा ऊपर कहा जा चुका है, अष्टछाप के कवि वल्लभ सम्प्रदाय के थे। इनके अतिरिक्त चार और वैष्णव सम्प्रदाय को मुख्यता दी जाती है। वे इस प्रकार है ---1. राधावल्लभीय सम्प्रदाय, 2. गौड़िया सम्प्रदाय 3. पट्टी सम्प्रदाय और 4. निम्बार्क सम्प्रदाय । इन सम्प्रदायों ने भी बड़े-बडे रसिक और भावुक कवियों को जन्म दिया है। उनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया जाता है।

1. **हितहरिवंश -**ये राधावल्लभीय सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे, और इनका जन्म मथुरा के निकट बाद ग्राम में हुआ था। कहा जाता है कि स्वयं राधिका जी ने ही इनको मन्त्र-दीक्षा दी थी। इनके सम्प्रदाय में राधिका जी को स्वयं भगवान से ही अधिक प्रधानता दी गयी है, क्योंकि भगवान अपनी प्रकृति के ही वशी भूत रहते हैं। राधवल्लभीय सम्प्रदाय में सखी और किंकरी भाव का प्राधान्य है। अन्य गोपियाँ राधा जी की सखी और नौकरानी के रुप में आती है। इनके 'हित चौरासी' नाम के चौरासी पद भाषा के संगीतमय प्रवाह और माधुर्य के कारण बहुत ही श्रेष्ठ और आकर्षक हैं। अपनी रचा के माधुर्य के कारण ये श्रीकृष्ण के वंश के अवतार कहे जाते हैं। इन्होंने 'राधा-सुधानिधि' नामक एक संस्कृत का ग्रन्थ भी लिखा है। धुवदास जी और वृन्दावन चाचा भी इन्हीं के सम्प्रदाय के थे। हितहरिवंश जी की कविता का एक उदाहरण यहाँ दिया जा रहा हैः

आज बन नीको रास बनायो ।
पूलिन पवित्र सुभग जमुना तट, मोहन बेनु बजाये।
कल कंन किंकिन नुपुर धुनि, सुनि खग मृग सचु पायो।।
जुबतिन मण्डल मध्य श्यामघन, सारंग राग जमायो।
ताल मृदंग उपंग मुरन ढप, मिलि रसासिन्धु बढायो।।
अभिनय निपुन लटकि लट लोचन, भृकुटि आनन्द नचायो।
ततथेई ततथेई धरत नवल गति, पति बृजराज रिझायो।।
सकल उदार नृपति चूड़ामणि, सुख वारिद बरसायो।
हित हरिवंश रसिक राधापति, जन वितान जग छायो।।

2. **हित वृन्दावनदस --** ये हित सम्प्रदाय के प्रमुख कवियों में से हैं। ये भक्त-प्रवर महाराज नागरीदास के भाई के यहाँ बहुत दिन तक रहे थे। फिर उन्होंने हित सम्प्रदाय में दीक्षा ले ली थी। ये सम्प्रदाय में वृन्दावन चाचा के नाम से प्रख्यात है, और इनकी वाणी चाचाजी की वाणी कहलाती है, जिसका विस्तार चार लाख पदों का बतलाया जाता है। इन्होंने भगवान की लीलाओं का बड़ा विशद् वर्णन किया है, और इनकी पद-योजना बड़ी लालित्यपूर्ण है। इनकी ब्रजभाषा बड़ी सरल, प्रवाहिमयी और सुख्यस्थित है। इनके छोट-बड़े ग्रन्थ बतलाये जाते हैं। इनकी वाणी का छतरपुर राज्य के पुस्तकालयमें अच्छा संग्रह था। कुछ उदाहरण देखिए:

लसत भाल विसाल ऊपर, तिलक नगनि जराय ।
मनहूँ चढ़े विमान ग्रह गन ससिहि भेटत जाय
मन्द मुस्कनि दसनन दमकति यामिनी दुति हरी
वृन्दावन हित रुप स्वामिनि कौन विधि रचि करी।।

प्रीतम, तुम तो दृगनि बसत हौ ।
कहा मेरों से है, पूछत हौ, कै चतुराई करि जु हँसत हौ?
लीजै परखि स्वरुप आपनौ, पुनरिन में तुमही जु लसत हौ?
वृन्दावनहित रुप रसिक तुम, कुज्ज लड़ावत हिय हुलसत हौ।।

3. **गदाधर भट्ट --** ये गौड़िया सम्प्रदाय के कवियों में प्रमुख हैं। ये दक्षिणात्य ब्राह्मण थे और संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। इनकी भाषा में संस्कृत का प्रभाव अधिक दिखायी पड़ता है। इन्होंने श्रीकृष्ण की वन्दना के साथ नन्द और यशोदाकी भी वन्दना की है। इन्होंने होली तथा झूला झुलने के बड़े सजीव वर्णन किये हैं। देखिएः

मिलि खेलें फाग वल्लभी बाला ।
संग खरे रस रंग भरे, वनरंग त्रिभंगी लाला ।।
बाजति बाँसुरि चंग उपंग, पखावज आवज ताला।
कावत गारी दे दे ब्रजनारी, मनोहर गीत रसाला।।
सींचत रंगनि अंग भरे, बढ़यौ प्रेम प्रवाह विशाल।
नैनसैन खुर रेनु उड़ी नभ, छायौ अबीर गुलाला।।

4. **ललित किशोरी और ललित माधुरी** --इन महानुभावों का वृन्दावनस्थ मन्दिर 'साहजी साहब के मन्दिर' के नाम से प्रख्यात है। ये इस सम्प्रदाय के अच्छे कवि थे। ये लोग लखनऊ के निवासी होते हुए भी ब्रजभाषा में अच्छी कविता करते थे। यहाँ हम दोनों का एक-एक दोहा उदाहरण स्वरूप देते हैं:

कदम कुज्ज ह्वैहौं कबै, श्री वृन्दावन माँहि ।
ललित किशोरी लाड़िले, विहरेंगे तिहि छाँहि ।। - ललित किशोरी
श्री वृन्दावन सहज ही ललित माथुरी रुप ।
ललित त्रिभंगी भामिनी, नित्य बिहार अनूप।। - ललित माधुरी

5. **हरिराम व्यास** --इनका भी कुछ दिनों गौड़िया सम्प्रदाय से सम्बन्ध रहा। फिर ये राधावल्लभीय सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये। ब्रज के प्रति इन भक्तों की अत्यधिक श्रद्धा थी --''वृन्दावन के रुख हमारे माता-पिता सुत-बन्धु।'' सूरदास जी पहले ही अपना ब्रज-प्रेम प्रकट कर चुके हैं, देखिएः

ऐसे ही बसिये ब्रज - बीथिनि
साधुन के पनवारे चुनि-चुनि, उदर पोषिए सीथिन ।
धूरिनि में के बीन चिनगरा, रक्षा कीजै सीतिन ।।

6. **हरिदास** --- ये जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। ये महात्मा पहले तो निम्बार्क सम्प्रदाय के थे, इपर उन्होंने स्वतन्त्र टटी समप्रदाय के नाम से एक मठ स्थापित किया। ये गाने में बड़े निपुण थे और स्वयं तानसेन के भी गुरु थे। इनका काव्य संगीत में बाँधा हुआ और राग-रागानियों में गाने योग्य है। इनमें कला और पाण्डित्य की मात्रा कम है, किन्तु भाव बड़े उत्कृष्ट हैं। 'स्वामी हरिदास जी के पद', स्वामी हरिदास बानी' आदि संग्रहों हमें इनके पद संग्रहित हैं।

7. **मीराबाई** --इनका जन्म पुराने जोधपुर राज्यन्तर्गत मेवाड़ में हुआ बताया जाता है ---'मेड़ितिया घर जन्म लियौ है, मीरा नाम कहायो। 'जोधपुर राज्य के बसाने वाले राव जोदाजी इनके पितामह थे, और राजा रत्नसिंह की ये पुत्री थीं। इनके बालकपन से ही गिरधारीलाला का इष्ट हे गयाथा, और ये अपने को उन्हीं से विवाहित समझती थीं। इनका सांसारिक विवाह भोजराज जी से हुआ था। किन्तु थोड़े हीदिनों के पश्चात्त इनके पतिदेव की मृत्यु हो गयी। ये साधुओं के सत्संग में अपना जीवन व्यतीत करना चाहती थीं। किन्तु इनके घर के लोग इस बात से नाराज थे। कहा जाता है कि इनको भगवान के चरणामृत के धोखे से विषपान कराया गया था, किन्तु इन पर उसका कुछ असर न हुआ --''राणाजी ने भेज विष का प्याला,सो अमृत कर पीज्यो जी।'' तुलसीदास जी से भी इनका पत्र-व्यवहार होना बताया जाता है। गोस्वामी जी का निम्नलिखित पद इनके ही पत्र के उत्तर में लिखा हुआ कहा जाता हैः

जाके प्रिय न राम बैदेही ।

तजिए ताहि कोटि बैरी सम, यद्यापि परम सनेही ।।

परन्तु इस घटना की वास्तविकता में लोग सन्देह करते हैं। तुलसी के जीवन के सम्बन्ध में हम हस बात की विवेचना कर चुके हैं। मीरा के बनाये हुए चार ग्रन्थ कहे जाते हैं----1. निसीजी का मायरा, 2. गीत-गोविन्द टीका, 3. राग-गोविन्द और 4. राग सोरठ के पद। इन्होंने रैदास को अपना गुरु बतलाया हैः

'गुरु मिलिया रैदास, दीन्ही ज्ञान की गुटकी'

रैदास जी का मीरा से साक्षात्कार होना तो सम्भव नहीं प्रतीत होता है। इनका देहावसान मीरा के जन्म के आसपास में हो गया था। अष्टछाप के कृष्णदास ने मीरा को वल्लभ सम्प्रदाय में लाने का प्रयत्न किया था जो विफल हुआ। उन्होंने महाप्रभु के लिए इसी कारण मीरा की दी हुई भेंट स्वीकार नहीं की थी। सम्भव है, उनका भगवान कृष्ण से अपना सीधा माधुर्य का सम्बन्ध हो जिससे वे गुरु की आवश्यकता न समझती हों।

इनकी वाणी का गुराच में बहुत आदर हैं। इनके पद कुछ राजस्थानी में है और कुछ शुद्ध ब्रजभाषा में। जो पद इन्होंने लिखे हैं वे तन्मयता से भरे हुए हैं। इनकी प्रेम-पीड़ा में निजीपन अधिक है। इन्होंने गोपयिों का विरह-वर्णन न कर स्वयं अपना विरह-निवेदन किया है। इनके पदों से इनकी तीव्रतानुभूति का परिचय मिलता है। मीरा ने अपनी तन्मयता के कारण ही इतनी ख्याति प्राप्त की है और निजीपन अधिक है। इन्होंने गोपियों का विरह-वर्णन न कर स्वयं अपना विरह-निवेदन किया है। इनके पदों से इनकी तीव्रतानुभूति का परिचय मिलता है। मीरा ने अपनी तन्मयता के कारण ही इतनी ख्याती प्राप्त की है और हृदय की तीव्र संवेदना के कारण ही इनकी वाणी में इतना बल आ सका है। इनके पदों के कुछ उदाहरण देखिए:

बसो मेरे नैनन में नन्दलाल ।

मोहनि मूरित साँवरी सूरति, नैना बने बिसाल ।।

मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, अरुन तिलक दिये भाल।

अधर सुधारस मुरली राजति, उर बैजन्ती माल ।।

मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई, भक्त बछल गोपाल ।।

स्याम, मन चाकर राखो जी।

चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरसन पासूँ ।।

चाकरी में दरसन पाऊ, सुमिरन पाऊँ खरची ।

भाव भगति जागीरी पाऊँ,तानूँ बार्ता सरसी ।।

दूसरे पद में मीरा के प्रेम जी निजी उमंग झलक रही है। इसी की छाया लेकर कवि-सम्राट रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी 'Gardener' नाम की कविता की, जिसमें बागवान रानी से उनके यहाँ नौकरी करने की प्रार्थना करता है। वेतन पूछे जाने पर वह कहता है, एक माला नित्य समर्पित करने का अधिकार, जो मीरा के 'सुमिरन पाऊ खरची' (जेबखर्च) का ही भाव है।

8. **रसखान**--ये हिन्दी के मुसलमान कवियों में बहुत प्रसिद्ध है। ये जाति के पठान थे, और इनका शाही खानदान से सम्बन्ध था --''छिनहि बादसा-बंस की ठसक छाँड़ि रसखान।'' इन्होंने वल्लभ सम्प्रदाय में गोस्वामी विट्टलनाथ से दीक्षा ली थी। इनका उल्लेख 'दो-सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में हुआ है। प्रारंभिक जीवन में ये एक लड़के पर आसक्त थे। किन्तु पीछे से इनका भौतिक प्रेम-

कृष्ण-प्रेम में परिणत होगया। इनकी दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं --- 'प्रेम वाटिक और 'सुजान रसखान'। इन्होंने अपने ग्रन्थो में प्रेम का बड़ा ही सुन्दर स्वरूप दिया है। इन्होंने एकांगी और निःस्वार्थ प्रेम को ही प्रेम का आदर्श माना है। इन्होंने गेय पद न लिखकर ऐसे सुन्दर कवित्त और सवैये लिखे हैं कि इनकी सुन्दरता के कारण सवैये रसखान के ही नाम पुकारे जाने लगे। वास्तव में इनके सवैये रस की खान हैं। रसखान में चलती हूई शुद्ध ब्रजभाषा का अच्छा नमूना मिलता है। इन्होंने अपनी कविता में चलन के बाहर के शब्दों का प्रयोग नहीं किया है। इनका ब्रजभूमि से बड़ा प्रेम था। आगे के सवैये से इनका प्रेम लबालब भरा हुआ दिखायी पड़ता हैः

मनुष हौं तो वहीं रसखान, बसौं ब्रज-गोकुल गाँव के ग्वरन।

जो पशु हों तो कहा बसु मेरो, चरौं नित नन्द की धेनु मझारन ।।

पहान हौं तो वही गिरि को, जु धर्यो कर छत्र पुरन्दर धारन।

इनके उपालम्भ बड़े सुन्दर है, देखिएः

दानी भये नित माँगत दान,

सुनौ जुपै कंस तो बाँधि के जैहो ।

रोकत हौ मग में 'रसखान'

पसारत हाथ घनौ दुख पैहौ ।।

टूटै छरा बछरादिक गोधन,

जो धन है सु सबै धन दैहौ ।

जैहै अभूषन काहु सखी कौ,

तो मोल छला के लला न बिकैहौ ।।

रसखान भी सूरदास की भाँति वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित थे और सखा-भाव की उपासना करते थे। तभी तो इनके इन उपलाम्भों में इतनी स्वतन्त्रता और अक्खड़पन की भावना है। भारतेन्दु जी ने ठीक ही कहा है ---''इन मुसलमान हरिजनन पै, कोटिक हिन्दू वारिए।''

9. **घनानन्द** --यद्यापि काल -विभाग से इनकी गाणना रीतिकाल के कवियों में की जाती है, तथापि इनका कृष्णोपासक भक्त कवियों के साथ उल्लेख करना अनुपयुक्त न होगा। रीतिकाल की बँधी-बँधाई कविता की धारा में घनानन्द जैसे स्वच्छन्द कवि का होना एक विस्मय की है बात है। प्रेम की पीर का जैसा मार्मिक चित्रण इन्होंने किया है, वैसा रीतिकाल में तो अन्यत्र दुर्लभ है। इनकी कविता में रीतिकालीन परिपाटी की अपेक्षा निजीपन और हृदय का उल्लास अधिक है। इनकी कविता में लौकिक प्रेम का पुट अधिक है, तथापि वह रीतिप्रेरित न होकर भावप्रेरित है। इनमें भक्तों जैसी त्याग-वृत्ति भी है, और अन्त में ये सब छोड़कर ब्रज में ही बस गये थे। (रीतिकाल के अंतर्गत इनका विवेचन होगा।)

कृष्ण-भक्त कवियों की यह महता रही कि इनके कारण ब्रजभाषा का रुप निखरा और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी यहाँ तक कि मुगल दरबारों में भी इनकी चर्चा होने लगी, फलतः अकबरी दरबार कवियों का आश्रय-स्थान बन गया। इन राजाश्रित कवियों ने भक्ति के अतिरिक्त श्रृंगार और नीति आदि अन्य विषयों में पर भी फुटकर रचनाएँ कीं। अकबरी दरबार के कवियों में रहीम, गंग, नरहरि, बीरबल और टोडरमल विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं।

इस काल के कवियों में अकबर और जहाँगीर के जीवन के उछल-कूद की छाप मिलती है। यद्यपि कहीं-कहीं करुण क्रन्दन की छाया दिखलायी देती है, तथापि वह और रंगों में इतनी मिल जाती है कि उसका गहरा प्रभाव नहीं पड़ने पाता।

रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

1. चंदबरदाई

1. **पृथ्वीराज रासो और चंदबरदाईः** 'आचार्य रामचन्दर शुक्ल ने चंदबरदाई को हिन्दी के प्रथम महाकवि तथा पृथ्वीराज रासो को प्रथम हिन्दी महाकाव्य माना है। उन्होंने चंद को पृथ्वीराज चौहान का सामंत तथा राजकवि माना है। चंदबरदाई का जन्म लाहोर में 1168 में हुआ था। वे भट्ट जाति के जगान नामक गोत्र के थे। वे षट्भाषा, व्याकरण, काव्य, छंदरशास्त्र, ज्योतिष, पुराण आदि में प्रवीण थे। वे सभा, युद्ध, आखेट तथा यात्रा में सदैव पृथ्वीराज के साथ रहते थे। उनकी तथा पृथ्वीराज को मुहम्मद गोरी गजनी ले गया था तब चंदबरदाई ने अपने पुत्र जल्हण को ग्रन्थ पूर्ण करने का कार्य सौंप दिया तथा गजनी की ओर प्रयाण किया।

   गजनी पहुँच चंदबरदाई ने पृथ्वीराज चौहान को मुक्त करवाने के लिए शब्द भेदी बाण पृथ्वीराज द्वारा चलाने की योजना बनाई। उसमें गोरी की मृत्यु हुई। तत्पश्चात् दोनों ने आत्मोत्सर्ग किया।

   पृथ्वीराज रासो - अबू में एक यज्ञ हुआ उससे चार क्षत्रिय कुलों की उत्पत्ति हुई चौहान, तोमर, गृहलोत तथा सोलंकी। अतः चौहान अग्निवंशी माने जाते हैं। अजमेर में चौहान, दिल्ली में तोमर तथा कनौज में गहरवारों का राज्य था। अजमेर में अर्णोराज के पश्चात् उनके पुत्र सोमेश्वर राजा बने। उनका विवाह दिल्ली के तोमर राजा अनंगपाल की पुत्री कमला से हुआ। उनके पुत्र का नाम पृथ्वीराज था। राजा अनंगपाल की दूसरी पुत्री सुंदरी का विवाह कनौज के राजा विजयपाल से हुआ। उनके पुत्र का नाम जयचंद था। राजा अनंगापाल ने पृथ्वीराज को गोद लिया अतः वह अजमेर तथा दिल्ली का शासक बना। इसके कारण जयचंद के मन में वैमनस्य की भावना उत्पन्न हुई। उसकी पुत्री संयोगिता के स्वयंवर में पृथ्वीराज को आमंत्रित नहीं किया गया। उसे अपमानित करने के लिए द्वार पर द्वारपाल के रुप में उसकी प्रतिमा स्थापित की गई। संयोगिता की वरमाला स्वीकार करने के लिए पृथ्वीराज का अकस्मात् आगमन के प्रतिक्षोध के रुप में जयचंद ने गोरी से संधि की। गोरी ने सात बार अजमेर पर आक्रमण किया किंतु वह उसमें पराजित हुआ। जयचंद ने घर का भेदी बनकर छल से गोरी को भेद बताया। जिससे पृथ्वीराज को बंदी बनाया गया तथा गजनी ले जाकर उसकी नेत्रज्योति को नष्ट किया गया।

   काव्य सौंदर्य - काशी नगरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित यह ढाई हजार पृष्ठों का विशालप ग्रंथ है। यह एक महाकाव्य है जिसका नायक पृथ्वीराज चौहान है। इसके 69 सर्ग हैं जिसे समय कहा

गया है। इसमें पृथ्वीराज की वंशावली, जीवन, युद्ध, विवाह आदि का प्रभावी चित्रण किया गया है। इसमें चंदबरदाई स्वयं कलम और तलवार के धनी होने के कारण युद्धभूमि पर पृथ्वीराज की वीरता के अनेक चित्र उन्होंने साकार किए हैं। इसमें उनकी स्वामिनिष्ठा तथा आदर दर्शित होता है। वीररस के साथ विवाह आदि अवसरों का जो वर्णन किया गया है उसमें वस्तु वर्णन में नगरों, वनों, सरोवरों तथा किलों का भव्य चित्रण किया गया है। यह पिंगल शैली में लिखा गया है तथा इसमें कवित्त, सवैया, छप्पय,दोहा आदि छंदों का प्रयोग किया गया है।

2. सूरदास

जीवन-परिचय - सूरदास का जन्म सन् 1478 ई. के आस-पास माना जाता है। इनका जन्मस्थान मथुरा-आगरा सड़क पर स्थित रुनकता नामक ग्राम माना जाता है। इनके पिता का नाम रामदास था। ये सारस्वत ब्राह्मण थे। कुछ विद्वानों के मतानुसार सूदरदास चन्दरबरदाई के वंशज थे। सूरदास को कुछ विद्वान जन्मान्ध मानते थे। महाप्रभु बल्लभाचार्य इनके गुरु थे। महाप्रभु बल्लभाचार्य की आज्ञा से ही सूरदासजी श्रीनाथजी के मन्दिर में कीर्तन किया करते थे। प्रतिदिन एक पद बनाकर भगवत्-अर्पण करना इनका नियम था। आपका देहावसान सन् 1583 ई. के लगभग माना जाता है।

रचनाएँ - महाकवि सूरदास की लिखी हुई रचनाओं की संख्या 25 बतलाई जाती है, परन्तु उनमें से तीन ग्रन्थ ही सूर की प्रामाणिक रचनाएँ हैं- 'सूरसागर', 'सुर सारावली' और 'साहित्य-लहरी'। 'सूरसागर' इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है और यही सूरदास की अमर कीर्ति का आधार है। इस ग्रन्थ के विषय में प्रसिद्ध है कि इसमें सवा लाख पद हैं,किन्तु अभि तक उसके लगभग पाँच हजार पद ही प्राप्त हो सके हैं। 'सूरसागर' में सूरदास ने कृष्ण-लीला के वभिन्न प्रसंगों का मार्मिक वर्णन किया है।

भाषा-शैली - सूरदास की भाषा ब्रजभाषा है, जो साहित्यिक होते हुए भी बोल-चाल की भाषा की बहुत समीप है। इन्होंने शब्दों को तोड़ा-मरोड़ा भी है और साथ ही इनकी भाषा में व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियाँ भी हैं। भाषा में मुहावरों का प्रयोग भी हुआ है। सूरदास ने कोमल-कान्त शब्दावली को अपनाकर गेय पद लिखे हैं।उनकी कविता में प्रसाद और माधुर्य गुण की प्रधानता है। कूट काव्य शैली में सूर ने दृष्ट कूट पद भी लिखे हैं, जो जटिल हैं।

विचारधारा - सूरदासजी भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा की कृष्णकाव्य शाखा के कर्वश्रेष्ठ कवि हैं। आपने कृष्ण की सखा भाव से उपासना की है। पुष्टिंमार्गीय भक्ति में विश्वास रखकर आपने कृष्ण-कृपा को ही सर्वोपरि माना और कृष्ण के लोक-रंजक रुप का वर्णन किया। कृष्ण के बाल-लीला वर्णन में तो सूरदासजी अद्वितीय हैं।

3. तुलसीदास

जीवन-परिचय - तुलीसदास का जन्म सन् 1540 ई. के लगभग बाँदा जिले (उत्तर प्रदेश) के राजापर गाँव में माना जाता है। कुछ विद्वान इनका जन्म-स्थान सोरों,जिला एटा (उत्तर प्रदेश) मानते हैं। इनके पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। पैदा होते ही माता की मृत्यु हो जाने से इनके पिता ने इन्हें अशुभ जानकर त्याग दिया था। इससे इनका बचपन कष्टमय बीता। भक्त नरहरिसादस की देख-रेख में तलसीदास ने शिक्षा प्राप्त की। बड़े होने पर दीनबन्धु पाठक की पुत्री रत्नावली से विवाह हुआ था। तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली को बहुत प्रेम करते थे। कहा जाता है कि एक दिन इनकी पत्नी बिना कहे अपने पिता के घर चली गई थी। तुलसी उससे मिलने ुसी दिन रात्रि को उसके घर पहुँचे। यह बात उनकी पत्नी को अच्छी नहीं लगी। उसने तुलसी को कट्ट शब्द कहे, जिन्हें सुनकर तुलसी ने घर त्याग दिया और वैराग्य ले लिया। वे काशी में रहने लगे, जहाँ उन्होंने संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों का खूब अध्ययन किया। सन् 1623 ई. में इनका देहावसान वाराणसी के अस्सी घाट में हुआ।

रचनाएँ - तुलसीदास की प्रतिभा बहुमुखी थी। 'रामचरितमानस', 'विनय-पत्रिका','कवितावली', 'गीतावली', 'होदावली', 'कृष्णगीतावली' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। 'रामचरितमानस' तुलसीदास का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का संसार की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

भाषा-शैली - तुलसीदास ने अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं में काव्य-रचना की है। दोनों भाषाओं पर इनका समान अधिकार था। इनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है। कहीं-कहीं अरबी, फारसी, गुजराती आदि भाषाओं के शब्द भी इनकी रचनाओं में मिलते हैं। भाव, भाषा और छन्द का सुन्दर समन्वय इनके काव्य में हुआ है।

विचारधारा - तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि थे। इन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम राम की दास्य भाव से उपासना की है। राम के चरित-गान के द्वारा तुलसी ने ऐसे आदर्श को प्रस्तुत किया है, जिससे सभी को जीवन-निर्माण की मिलती है। रामकथा के द्वारा तुलसी ने जहाँ भावपूर्ण स्थलों का वर्णन किया है, वहाँ वे समन्वय के द्वारा युग-निर्माण भी कर सके हैं।

4. सुमित्रानन्दन पन्त

जीवन-परिचय - श्री सुमित्रानन्दन पन्त का असली नाम गोसाई दत्त है। आपका जन्म 1900 ई. में अल्मोड़ा (उत्तर प्रदेश) जिले के कौसानी ग्राम में हूआ था। पन्तजी के पिता गंगादत्त पन्त वहाँ की 'टी स्टेट' के कोषाध्यक्ष थे। इन्होंने काशी से हाईस्कूल की परीक्षा पास की और पि- प्रयाग में पढ़ने चले गए। सन् 1921 ई. के असहयोग आन्दोलन के कारण आपने पढ़ाई छोड़ दी और घर पर ही संस्कृति, बँगला, अंग्रेजी आदि भाषाओं का गम्भीर अध्ययन किया। पर्वतीय प्रदेश के निवासी होने के कारण पन्तजी बचपन से प्रकृति के उपासक रहे हैं। प्रकृति के प्रति अतिशय अनुराग ने ही इन्हें प्रकृति का 'सुकुमार कवि' बना दिया।

रचनाएँ - पन्त जी अपने विद्यार्थी-जीवन में ही काव्य-रचना करने लगे थे। 'पल्लव', 'वीणा', 'ग्रन्थि', 'युगान्त', ग्रास्या, 'स्वर्ण-किरण' स्वर्णधूलि' 'उत्तरा' 'युगपथ' खादी के फूल, कला और चाँद, सौवर्ण आदि इनकी काव्य रचनाएँ हैं। लोकायतन आपका महाकाव्य है। 'पल्लविनी' तथा आधुनिक कवि में इनकी चुनी हुई रचनाओं का संग्रह हुआ है। 'कला और बूढा चाँद' पर आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार, 'लोकायतन' पर 'सोवियत-भूमि' का 'नेहरू पुरस्कार' तथा 'चिदम्बरा' पर भारतीय ज्ञानपीठ का एक लाख रुपए का पुरस्कार मिला है। भारत-सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' अलंकार से सम्मानित किया है।

भाषा शैली - पन्तजी ने कोमलकान्त पदावली का प्रयोग करके खड़ीबोली को सरसता और मधुरता प्रदान की है। आपकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है। इनकी भाषा चित्रमयी, अलंकृत तथा संगीतमयी है, जिसमें गीत-शैली की सभी विशेषताएँ हैं। सुन्दर प्रतीक-योजना भी पन्तजी की भाषा का एक अन्य गुण है।

विचारधारा - पन्तजी अपने समय के अनेक महापुरुषों के निकट संम्पर्क में रहे हैं। आधुनिक हिन्दी काव्यधारा के क्रम-विकास के आप प्रतिनिधि कवि हैं। प्रारम्भ में छायावाद की चित्रमयी भाषा और प्रकृति प्रेम से पूर्ण कविताएँ आपने लिखीं। इसके उपरान्त प्रगतिवाद (शोषितों के प्रति सहनाुभूति) तथा अरविन्द-दर्शन (आध्यात्मिकता) से प्रेरित होकर आपने अनेक रचनाएँ की हैं। लोक-जीवन और आध्यात्मिक जीवन का समन्वय आपकी कविता का प्रमुख स्वर है।

5. भारतेंदु हरिश्चन्द्र

भारतेंदु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रवर्तक कहा जाता है। उन्होंने हिन्दी भाषा तथा साहित्य के सर्वांगीण विकास के लिए अथक प्रयास किया। नवजागरण के अग्रदूत भारतेंदु ने अपने साहित्य के माध्यम से जनता की चेतना को उद्‌बुद्ध किया। उनका समय सन् 1850 से 1885 ई. रहा है। उनके पिता बाबू गोपालचंद्र 'गिरिधरदास' अपने समय के प्रसिद्ध कवि थे। अल्पायु में ही कवित्व प्रतिभा और सर्वतोमुखी रचना-क्षमता के कारण तत्कालीन साहित्यकारों ने 1880 ई. में उन्हें 'भारतेंदु' की उपाधि से सम्मानित किया था। भारतेंदु जनवादी साहित्य के निर्माता थे। वे स्वदेशी आंदोलन के समर्थक होने के साथ-साथ समाज सुधारक भी थे। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीयता तथा समाज सुधार के लिए नहीं दिशा प्रादन की। उनकी कविताएँ भक्ति, श्रृंगार, देश-प्रेम, सामाजिक परिवेश, प्रकृति आदि विविध विषय-विभूषित हैं। वे स्त्री-शिक्षा, विधवा विवाह तथा स्वदेशी वस्तुओं के समर्थक थे। सामाजिक परिवेश से संबंधित अस्पृश्यता, रूढ़ियाँ, आर्थिक शोषण आदि का उन्होंने विरोध किया। वे भारत के सांस्कृतिक पुनरत्थान के अग्रदूत थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति का गौरवगान किया है। जिस समय अंग्रेजों का तथा अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य देश पर छाया था। उस समय उन्होंने राष्ट्रीयता का तथा स्वतंत्रता का स्वर अपनी कविता में मुखरित किया था।

सब तजि गहौ स्वतंत्रता, नहिं चुप लातै खाव।
राजा करैं सो न्याव है, पासा परे सो दाँव।।

उन्होंने 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' मानकर हिंदी को गौरबान्वित बनाने का प्रयास किया। भारतेंदु ने भक्ति से आपुरित रचनाएँ कीं, किन्तु उनका साध्य सदैव देश, जाति और भाषा की प्रगति रहा। उन्हें हिंदी साहित्य का प्रथम यथार्थवादी कवि माना जाता है।

भारतेंदु हरिशचंद्र ने भावक्षेत्र में नवीन योगदान के साथ कला तथा शैली में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने भावानुसारिणी सरल गद्यशैली का प्रणयन किया। उन्होंने विदेशी एवं अन्य भारतीय

भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद करने की परंपरा आरंभ की। ब्रजभाषा के साथ उर्दू तथा खड़ीबोली में रचना करने का श्रेय उन्हें प्राप्त है। कविता वर्द्धिनी सभा आदि साहित्यिक गोष्ठयों की स्थापना कर हिंदी कवियों को नूतन प्रेरणा दी। उन्होंने काव्य में ग्रामगीतों का प्रयोग कर हिंदी काव्यधारा को नया मोड़ दिया। उन्होंने हिंदी गद्य को नाटक, निबंध आदि नई विधाएँ प्रदान कीं। उनका साहित्यिक योगदान इस प्रकार है -

काव्यः- प्रेम मालिका, प्रेम सरोवर, प्रेम फुलवारी, वर्षा-विनोद, विनय-प्रेम-पचासा आदि।

नाटकः- वैदिकी हिंसा न भवत्ति, चंद्रावली, भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अँधेरनगरी, विषस्य विषमौषधम्, प्रेम जोगिनी।

अनुवादः- कर्पूर मंजरी, विद्यासुंदर, सत्य हरिश्चन्द्र, भारत जननी।

संपादन -पत्रिकाएँः- कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र चंद्रिका। भारतेंदु के आगमन से हिंदी का आधुनिक रुप निश्चित हुआ। प्राचीन एवं नवीन का अद्‌भुत सामंजस्य उनके साहित्य की प्रमुख विशेषता है। अतः आधुनिक हिंदी साहित्य में नई एवं स्वस्थ चेतना के केंद्रबिंदु, जन्मदाता तथा युगांतरकारी साहित्यकार के रुप में वे स्मरणीय रहेंगे।

कहैंगे सबै ही नैन नीर भरि-भरि पीछे
प्यारे हरिश्चंद की कहानी रह जायगी।

6. मैथिलीशरण गुप्त

जीवन-परिचय - राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई. में चिरगाँव, जिला झाँसी (उत्तर पेदेश)के एक प्रतिष्ठित वैष्णव परिवार में हुआ। इनके पिता श्री रामचरण 'कनकलता' भी बड़े अच्छे कवि थे। गुप्ताजी बचपन से ही कविता करने लगे थे। उन्हें अपने पिता से कवि बनने का आशीर्वाद भी मिला था। इनका मन स्कूल के सीमित पाठ्यक्रम में नहीं लग पाया। अतः इन्होंने अपने घर पर ही हिन्दी, संस्कृति तथा बँगला साहित्य का अध्ययन किया। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदीजी की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से इनकी लेखनी को बल मिला। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन ने आपको 'साकेत' पर मंगला प्रसाद पारितोषिक देकर सम्मानित किया। आगरा विश्वविद्यालय ने आपकी साहित्यिक सेवाओं पर 'डी.लिट्'

की मानद उपाधि प्रदान की। राष्ट्रपति द्वारा मनोहित होकर राज्यसभा के भी आप अनेक वर्षों तक सदस्य रहे। भारत सरकार ने आपको 'पद्मविभूषण' की उपाधि से अलंकृत भी किया था। 12 दिसम्बर, 1964 ई. को आपका देहावसान हो गया।

रचनाएँ - गुप्तजी ने द्विवेदी-युग से लिखना आरम्भ कर दिया था और वे अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक लिखते ही रहे। आपने छोटे-बड़े अनेक काव्य-ग्रन्थों की रचना की है, पर आपकी अपनी ख्याति के मुख्याधार 'साकेत', 'द्वापर', 'जयभारत', 'विष्णुप्रिया', 'भारत-भारती', 'जयद्रथ वध', सिद्धराज', 'यशोधरा', पंचवटी' हैं। आपने 'मेघनाथ वध' तथा 'उमर खय्याम की रुपाइयाँ' आदि ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद भी किया।

भाषा-शैली - गुप्तजी ने सरल बोलचाल की खड़ीबोली में काव्य रचना की है। संस्कृत तथा ग्राम्य भाषाओं के शब्दों का भी अपने पर्याप्त प्रयोग किया है। आपने मुख्यतः प्रबन्ध काव्य शैली को ही अपनाया है। इतिवृत्तात्मक काव्य में संवाद-योजना से आपका काव्य सुन्दर बन पड़ा है।

विचारधारा - गुप्तजी की कविता राष्ट्रिय एवं सांस्कृतिक है। इन्होंने भारत के गौरवमय अतीत का श्रद्धापूर्वक गुणगान किया है। राम-प्रेम, भारतीय संस्कृति, देशभक्ति, मानवता का सन्देश तथा नारी-महत्ता आदि विषयों को आपने प्रमुख रुप से अपने काव्य में स्वर दिया है।

7. रामधारीसिंह 'दिनकर'

जीवन-परिचय - 'दिनकर' जी का जन्म सन् 1908 ई. में हुआ। ये बिहार प्रदेश के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक ग्राम के निवासी थे। आरम्भिक शिक्षा इन्होंने घर ही पर प्राप्त की। तत्पश्चात् पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. (ऑनर्स) की परीक्षा पास की। आपने सब-रजिस्ट्रार के रुप में अपना जीवन आरम्भ किया। कुछ समय तक मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिन्दी के आचार्य भी रहे। भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के रुप में भी आपने कार्य किया। भारतीय संसद में राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत सदस्य रहे। पेरिस के विश्व-कवि सम्मेलन में आपने भारत का प्रतिनिधित्व भी किया था। भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार बोर्ड के अध्यक्ष पद पर रहकर भी आपने कार्य किया। आपको 'कुरुक्षेत्र' महाकाव्य पर तीन पुरस्कार मिले। 'संस्कुति के चार अध्याय' नामक पुस्तक पर साहित्य-अकादमी का पुरस्कार भी मिला। पर भारतीय ज्ञानपीठ का एक लाख रुपए का पुरस्कार आपको 'उर्वशी' काव्य पर मिला। भारत-सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से भी सम्मानित किया था। अप्रैल सन् 1947 में हृदयगति रुक जाने से मद्रास में आपका स्वर्गवास हो गया।

रचनाएँ - 'दिनकर' जी ने विद्यार्थी-जीवन से ही कविता लिखना आरम्भ कर दिया था। 'रेणुका', 'द्वन्द्वगीत', 'हुंकार', 'धूप-छाँह', 'सामधेनी', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी','नीलकुसुम', 'सीप और शंख', 'कोयला और कवित्व', 'उर्वशी', 'परशुराम की प्रतीज्ञा', 'हारे को हरि नाम', 'बापू' आदि आपकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं। 'मिट्टी की ओर', 'अर्धनारीश्वर', शुद्ध कविता की खोज, 'संस्कृति के चार अध्याय' आदि आपके आलोचनात्मक ग्रन्थ हैं।

भाषा-शैली - 'दिनकर' जी की भाषा शुद्ध खड़ीबोली है। उनका शब्द चयन बड़ा ही सुन्दर तथा भावानुरुप है। भाषा में सजीवता है, ओज है। इसलिए वाणी में वीरतापूर्ण हुंकार के साथ-साथ क्रान्ति का आह्वान भी है। संस्कृत की तत्सम शब्दावली के साथ ही अरबी-फारसी के शब्दों का भी इन्होंने प्रयोग किया है। कहावतों - मुहावरों की सुन्दर छटा भी इनके काव्य में वर्तमान है। प्रबन्ध तथा मुक्तक दोनों ही शैलियों में आपने रचनाएँ की हैं।

विचारधारा - राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावनाएँ 'दिनकर' के काव्य में कूट-कूटकर भरी हुई हैं। वे क्रान्तिकारी होने के साथ-साथ समाजसेवी एवं सुधारवादी भी हैं। अतीत का गौरव, आर्थिक विषमता और शोषण के प्रति हुंकार तथा दलित-पीड़ित मानवता के प्रति सहानुभूति आपके काव्य में पाई जाती है।

Unit - III: (A) सामान्य निबन्ध

1. साहित्य और समाज

'साहित्य' शब्द की व्युत्पत्ति सहित शब्द से हुई है। 'साहित्य' शब्द के दो अर्थ हैं - 'स' अर्थात् साथ साथ और हित अर्थात् कल्याण। इस दृष्टिकोण से साहित्य शब्द से अभिप्राय यह हुआ कि साहित्य वह ऐसी लिखित सामग्री है, जिसके शब्द और अर्थ में लोकरहित भी भावना सन्निहित रहती है। अर्थ के लिए विस्तारपूर्वक लिखित सामग्री के साहित्य शब्द का प्रयोग प्रचलित है, जैसे-इतिहास-साहित्य, राजनीति साहित्य, विज्ञान साहित्य, पत्र साहित्य आदि। इस प्रकार साहित्य से साहित्यकार की भावनाएँ समस्त जगत के साथ रागात्मक का सम्बन्ध स्थापित करती हुई परस्पर सहयोग, मेलमिलाप और सौन्दर्यमयी चेतना जगती हुई आनन्द प्रदायक होती है। इससे रोचकता और ललकता उत्पन्न होती है। साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। समाज की गतिविधियों से साहित्य अवश्य प्रभावित होता है। साहित्यकार समाज का चेतन और जागरूक प्राणी होता है। वह समाज के प्रभाव से अनभिज्ञ और अछूता न रहकर उसका भोक्ता और अभिन्न अंग होता है। इसलिए वह समाज का कुशल चित्रकार होता है। उसके साहित्य में समाज का विम्ब प्रतिबिम्ब रूप दिखाई पड़ता है। समाज का सम्पूर्ण अंग यथार्थ और वास्तविक रूप में प्रस्तुत होकर मर्मस्पर्शी हो उठता है। यही नहीं समाज का अनागत रूप भी काल्पनिक रूप में ही हमें संकेत करता हुआ आगाह करता है। इस दृष्टिकोण से साहित्य और समाज का परस्पर सम्बन्ध एक दूसरे पर निर्भर करता हुआ स्पष्ट होता है।

'साहित्य समाज का दर्पण' ऐसा कहने का अर्थ यही है कि साहित्य समाज का न केवल कुशल चित्र है, अपितु समाज के प्रति उसका दायित्व भी है। वह सामाजिक दायित्वों का बहन करता हुआ उनको अपेक्षित रूप में निबाहने में अपनी अधिक से अधिक और आवश्यक से आवश्यक भूमिका अदा करता है। समाज में फैली हुई अनैतिकता, अराजकता, निरंकुशता जैसे अवांछनीय और असामाजिक तत्वों के दुष्प्रभाव को बड़े ही मर्मस्पर्शी रूप में सामने लाता है। इससे ऐसे तत्वों के प्रति घृणा, कटुता, दूरी और अलगाव की दृष्टि डालते हुए इन्हें हतोत्साहित किया जा सके।

साहित्यकार ऐसा कदम उठाते हुए ही जीवन के शाश्वत मूल्यों और आश्वयकताओं को अपेक्षित रूप में समाज को प्रदान करने लगता है। हिन्दी साहित्य का आदिकाल से रचित प्रायः सभी रचनाओं द्वारा तत्कालीन समाज जाति की परिस्थिति, विचार और कार्य व्यापार की पूरी जानकारी प्राप्त होती है। पराभव के द्वार पर पहुँचा हुआ हिन्दू समाज किस तरह मुस्लिम आग्रमणों से शिकस्त होकर अपनी सभ्यता और

संस्कृति की रक्षा करने में अपने आपको असमर्थ पा रहा था, जिससे हमें गुलामी की बेड़ी में बँध जाना पड़ा था। इसी तरह से रीतिकालीन विलासी जीवन से हम अपनी विकृतावस्था से किस तरह अज्ञानान्धकार में भटक रहे थे। आदिकाल का चित्र हमारी आँखों के सामने उस काल के साहित्यावलोकन से आने लगता है।

समाज और साहित्यक विषय साहित्य और समाज के ही समान तो लगता है, लेकिन दोनों में परस्पर भिन्नता है। साहित्य और समाज और समाज और साहित्य को ध्यान से देखने पर एक गम्भीर तथ्य यह निकलता है कि साहित्य जहाँ समाज का दर्पण हैं, वहीं यह भी है कि समाज साहित्य का दर्पण है। साहित्य के द्वारा समाज का निर्माण होता है, अर्थात् साहित्य में जो कुछ है वही समाज में भी है और शेष को होना है। साहित्य का भक्तिकाल इसकी पुष्टि करता है। तत्कलीन समाज की हीन और पराभव की परिस्थिति को सबल और आशामय संचार का ज्वर उठाती हुई भक्ति काव्यमयी रचनाओं ने अपना एक अभूतपूर्व इतिहास स्थापित किया। इसीलिए यह कहना अक्षरशः सत्य है कि यदि साहित्य वास्तव में केवल समाज का दर्पण होता, तो कवि या साहित्यकार समाज की विसंगतियों या विडम्बनाओं पर कटु प्रहान नहीं करता। फिर उसे यथेष्ट और अपेक्षित दिशाबोध देने के लिए प्रयद्नशील भी नहीं होता। इसलिए जब कोई कवि या साहित्यकार समाज की अवांछनीयता या त्रुटियों को देखता है, उसे अनावश्यक समझता है और उसका शिरोच्छेदन कर आमूलचूल परिवर्तन के लिए दिशा निर्देश को एकमात्र विकल्प मानता है, तब वह इसके लिए सत्साहित्य का सृजन करना अपना सर्वप्रथम कर्त्तव्य समझता है और ऐसा करके वह विधाता का पद प्राप्त करता है, क्योंकि और आवश्यक समाज की रचना का सुझाव अपनी रचनाओं के दिया करता है।

समाज के प्रति साहित्यकार का दायित्व आशा का संचार करना, उत्साह और कर्त्वयबोध का दिशा देना आदि है, आदि कवि से लेकर आज के जागरूक और चेतनाशील साहित्यकारों की यही गौरवशाली परम्परा रही है। समाज की रूपरेखा को कल्याण और सुखद पथ पर प्रस्तुत करने से सत् साहित्य का रचनाकार कभी पीठ नहीं दिखाता है। वह सामाजिक विषमता रूपी समर में विजयी होने के लिए कलमरूपी तलवार के धारदार बनाए रखने में कभी गाफिल नहीं होता है।

2. विद्यार्थी और राजनीति

विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण समय होता है। इस काल में विद्यार्थी जिन विषयों का अध्ययन करता है अथवा जिन नैतिक मूल्यों को वह आत्मसात् करता है वही जीवन मूल्य उसके भविष्य निर्माण का आधार बनते हैं। पुस्तकों के अध्ययन से उसे ज्ञान की प्राप्ति होती है परंतु इसके अतिरिक्त अनेक बाह्य कारक भी उसकी जीवन-प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। विभिन्न प्रकार के आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक परिवेश उसके जीवन पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभाव डालते हैं। विद्यार्थी जीवन में प्राप्त अनुभव व ज्ञान ही आगे चलकर उसके व्यक्तित्व के निर्माण हेतु प्रमुख कारक का रूप लेते हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः जहाँ वह निवास करता है उसके आस-पास होने वाली घटनाओं के प्रभाव से वह स्वयं को अलग नहीं रख सकता है। उस राष्ट्र की राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक परिस्थितियाँ उसके जीवन पर प्रभाव डालती हैं। सामान्य तौर पर लोगों की यह धारण है कि विद्यार्ती जीवन में राजनीति का समावेश नहीं होना चाहिए।

प्राचीन काल में यह विषय केवल राज परिवारों तक ही सीमित हुआ करता था। राजनीति विषय की शिक्षा केवल राज दरबार सदस्यों तक ही सीमित थी परंतु समय के साथ इसके स्वरूप में परिवर्तन आया है। अब यह किसी वर्ग विशेष तक सीमित नहीं रह गया है। अब कोई भी विद्यार्थी चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या संप्रदाय का हो इस विषय को प्रमुख विषय के रूप में ले सकता है। स्वतंत्रता के पश्चात् विगत पाँच दशकों में देश की राजनीति के स्वरूप में अत्यधिक परिवर्तन देखने को मिला है। आज राजनीति स्वार्थी लोगों से भरी पड़ी है। ऐसे लोग अपने स्वार्थ को ही सर्वोपरि मानते हैं, देश की सुरक्षा व सम्मान उनकी प्राथमिकता नहीं होती है। विभिन्न अपराधों में लिप्त लोग भी आज देश के महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं। भारतीय नागरिक होने के कारण हमारा यह दायित्व बनता है कि हम देश की राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण को रोकें। विद्यार्थियों को यदि राजनीति के मूल सिद्धांतों की जानकारी होगी, तभी वे देश के नागरिक होने का कर्तव्य भली-भाँति निभा सकते हैं। गाँधी जी एक कुशल राजनीतिज्ञ थे, हालाँकि वे साथ-साथ एक संत और समाज-सुधारक भी थे. आज के विद्यार्थियों को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

राजनीति में अपराधी तत्वों के समावेश को रोकने के लिए यह आवश्यक है कि हम विद्यार्थी जीवन से ही छात्रों को राजनीति की शिक्षा प्रदान करें। शिक्षकों का यह दायित्व बनता है कि वह छात्रों को वास्तविक राजनीतिक परिस्थितियों से अवगत करएँ ताकि वे बड़े होकर सही तथा गलत की पहचान कर सकें। सभी विद्यार्थियों का यह कर्तव्य बनता है कि वह राष्ट्रहित को ही सर्वोपरि समझें। यदि वे 18 वर्ष से अधिक आयु के हैं तो अपने मताधिकार का प्रयोग बड़ी ही सावधानी व विवेक से करें तथा अपने आस-पास के

समस्त लोगों को भी सही व योग्य व्यक्ति को ही अपना मत देने हेतु प्रेरित करें। विद्यार्थी स्वयं अपने मतों के मूल्य समझे तथा दूसरों को भी इसकी महत्ता बताएँ, सिसे राष्ट्र के शासन की बागडोर गलत हाथों में न पड़ने पाए।

विद्यार्थियों को अपनी शिक्षा प्राप्ति के दौरान ऐसी राजनीतिक गलिविधियों में भाग लेने से बचना चाहिए जिनसे उनकी सामूहिक शिक्षा बाधित हो। आज के चतुर राजनीतिज्ञ अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु विद्यार्थियों को मोहरा बनाते है। उन्हें तोड़-फोड़ तथा अन्य हिंसात्मक गतिविधियों के लिए उकसाया जाता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों का अमूल्य समय नष्ट हो जाता है। महाविद्यालयों की छात्र राजनीति में प्रवेश करने का अर्थ इतना है कि सबी छात्र लोकतंत्र की मूल भावना को समझें तथा साथ-साथ राजनीतिक के उच्छ मापदंडों को आत्मसात् कर आवश्यकता पड़े तो राजनीति में प्रवेश लेकर राष्ट्र निर्माण की ओर कदम उठाएँ। छात्र हमारे समाज के युवा वर्गों का सही अर्थों में तभी प्रतिनिधित्व कर सकते हैं जब वे योग्यता संपन्न और चरित्रवान् हों।

3. विज्ञान वरदान है या अभिशाप

विज्ञान का अर्थ विशेष ज्ञान। यह युग विज्ञान का है। विज्ञान ने मानव जीवन को पूर्ण रुप से बदल दिया है। विज्ञान ने यातायात के साधन जुड़ाकर समय और दूरी पर विजय प्राप्त किया है। संपूर्ण विश्व घर के आँगन के समान बन गया है। विज्ञान के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की काया ही पलट गयी है। इस प्रकार विज्ञान मानव-जाति के लिए वरदान स्वरुप है। लेकिन जब से प्रथम विश्व युद्ध हुआ है तब से वह विचार लोगों के हृदय में घर कर गया है कि विश्व में अशांति का कारण एक मात्र विज्ञान है। युद्धों को बढ़ावा देने के लिए विज्ञान ने भयंकर अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण किया है,जिससे मानव जाति के लिए बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया है। निकट भविष्य में अंतरिक्ष युद्ध भी संभव हो सकेंगे, जिससे मानव-जाति के समूल मिट जाने का बहुत बड़ा खतरा है। इस प्रकार विज्ञान को वरदान के साथ अभिशाप भी माना जाने लगा है।

विज्ञान ने यातायात के साधनों में कल्पनातीत प्रगति की है, जिससे समय और दूरी की समस्या समाप्त हो गयी है। आज संपूर्ण मानव-समाज मिलकर एक हो गया है। राष्ट्रवाद और जातिवाद की भावनाएँ मिट चुकी है। आपसी सहयोग और सहानुभूति की भावना उत्पन्न हो गयी है। विश्व के किसी भी कोने में यदि कोई विशेष घटना घटित होती हैतो कुछ ही देर में उसका समाचार संपूर्ण विश्व में फैल जाता है । मोटर, बस, रेल, हवाई-जाहज, समाचार पत्र आदि से विज्ञान ने मनुष्य की कई समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है। चिकित्सा, कृषि, उद्योग-धंधे, अंतरिक्ष आदि क्षेत्रों में विज्ञान ने महत्वपूर्ण कार्य किया है।

विज्ञान का दूसरा रुप विनाशकारी है। विज्ञान ने कई मारक अस्त्रों का निर्माण कर मानव-जाति के लिए संकट उत्पन्न किया है। इस कारण मानव-सभ्यता का भविष्य अंधकारमय दिखाई पड रहा है। अणुबम से संसार का नाश हो सकता है। वैज्ञानिक उन्नति के कारण मनुष्य का नैतिक पतन हुआ जा रहा है। ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट आदि दुर्गुण हृदय में समाते जा रहे है। वैज्ञानिक सुविधाओं का कारण आज मनुष्य आलसी बन गया है। मशीनों ने घर के उद्योग धंधे नष्ट कर दिये हैं। जिससे दिन प्रतिदिन बेकारी बढ़ती जा रही है।

विज्ञान में असीम शक्ति है। उसका उपयोग मानव - कल्याण के लिए भी किया जा सकता है और संहार के लिए भी। अणुशक्ति के दुरुपयोग से विश्व को श्मशान के रुप में बदला जा सकता है और उसके सदुपयोग से धरती स्वर्ग भी बन सकती है।

4. आधुनिक शिक्षा और नारी

एक ऐसा समय था जब लोग स्त्री-शिक्षा के लिए पुकार मचाते थे लोगों के सामने गिङगिङाते थे कि हमारे समाज में स्त्री को शिक्षा मिलना चाहिए । अगर स्त्री शिक्षित रहेगी तो परिवार शिक्षित रहेगा परिवार से समाज और समाज और समाज से पूरे राष्ट्र । अगर समाज की नारियाँ अशिक्षित रहेंगी तो उनके पुरूष किस प्रकार सभ्य, उन्नशिल और सभ्य कहला सकते हैं ।

परंतु यह समाज पुरूष प्रधान समाज हैं । सदियों से हीं पुरूष नारियों के आवाज को दबाते रहे हैं । नारी में अनेक प्रतिभाएँ बिद्यमान हैं, लेकिन वो उसे उभार नहीं पाती है, क्योंकि यह समाज उसे आगे बढ़ने नहीं देते थे ।

नारी को उसके मानवीय अधिकारों से बंचित किया जाता रहा है । उसे दमन का विरोध करने का शिक्षा को प्रगति का राष्ट्र के विकास में सहयोग देने का अधिकार नहीं था ।

अब नारी को हर अधिकार प्राप्त है । हर क्षेत्र में वो आगे बढ़ रही है क्योंकि अबकी नारी आधुनिक नारी है ।

आधुनिक युग में नारी शिक्षा, साहित्य, चिकित्सा, विज्ञान अनेक क्षेत्रों में नारी अपनी प्रतिमा सिद्ध कर रही है ।

आधुनिक शिक्षा, ने नारी को पुरूष के बराबर लाकर खडे कर दिएं है ।

शिक्षित महिला धरों की सभी समस्याओं का समाधान कर सकती है ।

आधुनिक नारी हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ कदम-से-कदम मिलाकर काम करने में शदम हैं । स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रिय विकास सें मदद करता है । आर्थिक विकास और एक राष्ट्र को सफल बनाने के लिए नारी शिक्षा अत्यंत जरूरी है ।

इस तरह से देखा गया है, कि आधुनिक शिक्षा और नारी का संबंध जुड गया है, नारी काफी आगे बढ चुकी है ।

आधुनिक युग की नारी घर की चारदीवारी में कैद नहीं हैं । वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है ।

पुरूष केवल नारी को भोग-विलास का साधन मानते थे उन पुरूष - समाज के सामने वह प्रमाणित करके दिखा रही है, कि नारी में अनेक प्रतिभाएँ हैं और वह किसी भी दृष्टिकोण से पुरूष से पीछे नहीं हैं ।

सबकुछ के बावजूद एक तरफ जहाँ नारी आगे बढ चुकी हैं वहीं अपने स्वतंत्रता का दुरूपयोग भी की है, जो दुखद है ।

नारी ने अंग प्रदर्शन को आधुनिकता मानकर भारतीय समाज को दूषित किया हैं ।

नारी को शिक्षित होना समाज और राष्ट्र के लिए अनिवार्य है, परन्तु आधुनिकता के नाम पर नारी को समाज का वातावरण दूषित करने का अधिकार नहीं दिया जाना चाहिए ।

वास्तव में नारी समाज को एक-जूट में बाँधकर रखने के लिए बना है ।

5. शिक्षा पर भूमंडलीकरण का प्रभाव

भारत देश पर भूमंडलीकरण का अवश्य प्रभाव है । चाहे विकसित देश हो, कि विकासशील, आज राजनीतिक व आर्थिक प्रसंगों में उसका प्रस्ताव और क्रियान्वयन का उल्लेख आता ही रहता है । कुछ लोग इसकी निन्दा करके, उसे पश्चिमी देशों का चाल बताते हैं । वे उसे साम्राज्यवाद या अमेरिकावाद कहते हुए उसे खतरनाक सिद्ध करने का प्रयास करते हैं । लेकिन और कुछ लोग इसका समर्थन करते हुए इसे तरक्की का एक मात्र रास्ता कहते हैं । इससे विश्व में उत्पादन के तरीकों में स्पर्धा पैदा होती है और सांथ - साथ कुछ देशों में निरंकुशता का जन्म भी होता है।

भूमंडलीकरण के आज संसार में दो मज़बूत पक्ष उपस्थित हुए हैं । पहला पक्ष कहता है कि यह एक मिथ्या - तथ्य है । यहाँ के अर्थशास्त्रियों का कहना है कि बाजार पहले ही एक दूसरे से बंधा हुआ है । यह जिस तरह से आर्थिक अंतर्ग्रथन करता है, वह पुराने के मुकाबले में हीनतर है । उनका कहना है कि अति भूमंडलीकरण समर्थकों की मान्याताएँ इसलिए दोषपूर्ण हैं कि वे राष्ट्रवादी सरकारों की सहनशीलता की शक्ति को नीचा करके आंकते है जो कि अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को निर्यामत करती है । अतंर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचने के लिए चाहे विकसित देश हो कि पिछड़े देश, अपने राष्ट्रीय सरोकारों पर भी निर्भर रहते हैं ।

भूमंडलीकरण के विरोंध में यह भी तर्क चल रहा हैं कि दुनिया के कुछ क्षेत्रों में हाशियाकरण बढ़ रहा है । जो भी व्यापार या भाव समुदाय की वृद्धि हो रही है, उसका बहुत बड़ा भाग उत्तरी समूहों मे आपस में होता है । दक्षिणी समूह को अधिक नहीं मिलता । ज्यादातर विदेशी निवेशों के केन्द्र पश्चिमी देश हैं । इससे दुनिया में गरीबी और अमीरी का नया विभाजन पैदा हो रहा है । यह एक नये प्रकार की शासन संस्था को जन्म दे रहा है ।

भूमंडलीकरण की आलोचना करते हुए वे यह तर्क उठा रहे हैं कि यह आर्थिक स्थिति तत्ववाद और आक्रमक राष्ट्रवाद को बढ़ाती है । इससे एक ओर भूमंडल सभ्यता बन तो नहीं रहती बल्कि सभ्यता मूलक समूहों और सांस्कृतिक जातीय समूहों में बंटवारा हो रहा है । भूमंडल की सभ्यताओं और सांस्कृतिक जातीय समूहों में बंटवारा हो रहा है । भूमंडल की सभ्यताओं और संस्कृतियों में असमानताएँ बढ़ती जाती हैं ।

भूमंडलीकरण के समर्थकों का यह तर्क है कि आज समय की सबसे बड़ी चालाक शक्ति है भूमंडलीकरण । यही समस्त आधुनिक समाजों को क्षिप्रगति प्रदान करता है और एक नयी विश्व व्यव्स्था को बनाता है । इससे ही दुनियाभर के देश राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपना स्थान उच्च करने के लिए दौड रहे हैं ।

दुनिया के सारे देश पूरा या अंशतः एक न एक मानी में भूमंडलीय प्रक्रिया के भाग ही हैं । ये नये सीमांत हैं जिनसे समाजों का भाग्य तय होता है । भले ही एक विश्व समाज न बना हो लेकिन सब एक दूसरे से ज्यादा घनीभूत ढंग से जुड़े हुए और उनके बीच अंतरनिर्भरता बढ़ती जा रही है । इसका

फलस्वरूप स्थिति ऐसी हो गयी कि पूराना नला आता उत्तर - दक्षिण का विभाजन अब नये अंतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन को जन्म दे रहा है ।

वित्तीय व्यवस्था और उत्पादन परस्पर अंतर्ग्रथित हो रहे हैं । देशों का राष्ट्रीय आर्थिक अवधि उनके राष्ट्रीयसीमांतों से मेल नहीं खाता । भूमंडलीकरण वास्तव में सत्ता और उसके कार्यो में परिवर्तन ला रहा है । वित्तीय से लेकर पर्यावरणीय संरचानाओं तक भिन्न - भिन्न समुदाय एक दूसरे से अपने आप जोड़ रही हैं । इस प्रकार यह प्रक्रिया सार्वभौमिकता, सीमांतता और राज्य-सत्ता के बीच के बन्धनों को खोल रही हैं । इसके कारण हैं । इस प्रकार्य की आधारभूत शक्ति नया पूँजीवाल है । इसकी वित्तीय चंचल पूँजी, तकनीकी क्रान्ति, बाजारी शक्तियौं विचारधाराएं और राजनीतिक निर्णय एक जटिल संरचना में इसे सम्भला करते हैं । यद्यपि ज्यादातर भूमंडलीकरण का बाजार से जोड़कर ही देना जाता है और उसकी आलोचना की जाती है लेकिन यह सबकु यान्त्रिक नज़र आती है । यह प्रक्रिया न उतनी इकहरी हैं और सरल हैं । इसके पीछे आर्थिक, सांस्कृति, राजनीतिक शक्तियाँ करती हैं । इसके समझने के लिए आधुनिकता की बहस और उत्तर समस्याओं का समझना जरूरी है ।

भूमंडलीकरण से ही विश्व प्रशासन की बात आयी । अंतर्राष्ट्रीय कानून अस्तित्व में आये । विश्व बाजार बना । तकनीक के आदान-प्रदान की बात आई । अंतर्निर्भरता बढ़ी । विदेश गमन बढ गया । प्रवासीपन और विस्थापना बढ़ी । बड़ी संख्या में लोग एक देश से दूसरे देश को आते जाते हैं । बहुराष्ट्रीय निगमों का जोर बढा । ही एक देश में दूसरे देश की सास्कृतिक छायाएँ बिझ गयीं । संचार और आवागमन में नये मार्ग खुल गये । टेलीफोन, कम्प्यूटर, और ग्लोबल केबल का आविष्कार हुआ । विभिन्न देशों के बीच स्पर्धा, सहयोग और विचारात्मक एकता ने स्थान ले लिया । कहने का यहाँ तात्पर्य यह है कि भूमंडलीकरण की अबाध प्रक्रिया एक विराट ऐतिहासिक प्रक्रिया है जिसे स्वीकार करना या नकारना हमें ही निर्णय करना चाहिए।

भारत भूमंडलीकरण के प्रति आकर्षक है या अनासक्त है, यह बताना मुशिकल है । एक और साम्राज्यवादी साजिश और उपभोक्तावादी संस्कृति बताते हुए वह कुछ क्षेत्रों में भूमंडलीकरण के बाजार में जाने के उत्सुक हो रहा है । यहाँ के कुछ लोग एक ओर उसकी मलाई खाना चाहते हैं और दूसरी और उसके लिए संरचनात्मक तैयारी का परिचय नहीं देते । कोई-कोई उसे इतिहास की पतनशील अवस्था मानकर चलते है । यहाँ आधुनिकतावादी विचार धारा का समर्थन थोड़ा ही मिलता है ।

निष्कर्ष में हम यह बताते हैं कि हर राष्ट्रीय और अंतरष्ट्रिीय घटना अनंत जटिलताएँ लिए आती है। यदि हम उसका एक सिरा खोलेंगे तो इकहरेपन से काम नहीं चलता। विश्व के नये ढंग के खुलने-बनने-बिगड़ने और तकनीक एवं सूचना के तेज, संचार व विकास ने मीडिया के निर्णयक हो उठने से ऐसे बोधों को जन्म दिया है जिन्हें बेहद अंतर्विरोधी किन्तु बेहद आकर्षक एवं अनिवार्य कहा जा सकता है। हमारे अपने समाज की आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक प्रक्रिया में जो नयापन दिखाई देता आता है, उसको समझने के लिए अब पुराने रास्ते नाकाफी नजर आते हैं । इस अत्याधुनिक काल में हमें नया दृष्टिकोण जाहिए ।

6. जीवन में स्वच्छता का महत्व

स्वच्छता एक क्रिया है जिससे हमारा शरीर, दिमाग, कपड़े, घर, आसपास और कार्यक्षेत्र साफ और शुद्ध रहते है। हमारे मानसिक और स्वास्थ्य के लिए साफ-सफाई बहुत जरुरी है। अपने आसपास के क्षेत्रों और पर्यायवरण की सफाई सामाजिक और बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए बहुत जरुरी है। हमें साफ-सफाई को अपनी आदत में लाना चाहिए और गंदगी को हमेशा के लिए हर जगह से हटा देना चाहिए क्योंकि गंदगी वह ज़ड़ है जो कई बीमारियों को जन्म देती है। जो रोज नहीं नहाता, गंदे कपड़े पहनता हो अपने घर या आसपास के वातावरण को गंदा रखता है तो वो हमेशा बीमार रहता है। गंदगी से आसपास के क्षेत्रों में कई तरह के कीटाणु, बैक्टेरिया वाइरस तथा फंगस आदि पैदा होते है जो बीमारियों को जन्म देते हैं।

जिन लोगों की गंदी आदतें होती हैं वो भी खतरनाक और जानलेवा बीमारियाों को फैलाते हैं। संक्रमित रोग बड़े क्षेत्रों में फैलाते हैं और लोगों को बीमार करते हैं कई बार तो इससे मौत भी हो जाती है। इसलिए, हमें नियमित तौर पर अपनी स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। हम जब भी कुछ खाने जाएँ तो अपने हाथों को साबुन से धो लें। हमें अपने शरीर और चेहरे को तीव्र गंदगी से बचाना चाहिए। अपने शारिरिक और मानसिक स्वास्थ के लिये हमें बिल्कुल साफ-सुथरे कपड़े पहनने चाहिए। स्वच्छता से हमारा आत्म-विश्वास बढ़ता है और दूसरों का भी हम पर भरोसा बनता है। ये एक अच्छी आदत है जो हमें हमेशा खुश रखेगी। ये हमें समाज में बहुत गौरान्वित महसूस करवाएगी।

हमारे स्वस्थ्य जीवन शैली और जीवन के उत्तर स्तर को बनाए रखने के लिए स्वच्छता बहुत जरुरी है। ये व्यक्ति को प्रसिद्ध बनाने में अहम रोल निभाती है। पूरे भारत में आमजन के बीच स्वच्छता को प्रचारित व प्रसारित करने के लिए भरत की सरकार द्वारा कई सारे कार्यक्रम और सामाजिक कानून बनाए गये और लागू किये गये हैं। हमें बचपन से स्वच्छता की आदत को अपनाना चाहिये और पूरे जीवन भर उनका पालन करना चाहिए। एक व्यक्ति अच्छी आदत के साथ अपने पुरे विचारों और इच्छाओं को खत्म कर सकता है।

घर पर अपने आसपास में संक्रमण फैलने से बचाने और गंदगी के पूर्ण निपटान के लिए हमें ध्यान रखना चाहिए कि गंदगी को केवल कूड़ेदान में ही डाले। साफ-सफाई केवल एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि ये घर, समाज, समुदाय और देश के हर नागरिक की जिम्मेदारी है। हमें इसके महत्व और फायदो को समझाना चाहिए। हमें भारत को स्वच्छ रखने की कसम खानी चाहिये कि न तो हम खुद से गंदीगी करेंगे और किसी को करने देंगे।

(B) अनुवाद

Translation of Sentences from English to Hindi

AJOr dm³¶m| H$m {hÝXr ‘| AZdmX

1. Rama is an intelligent boy.
   am‘ à{V^mdmZ bS>H$m h¡
2. Sita sings.
   grVm JmVr h¡
3. Deepavali is the festival of lights.
   Xrnmdbr Xrnm| H$m Ë¶mhma h¡
4. Books are our best friends.
   nñVH$ h‘mar g~g AÀN>r {‘Ì h¡
5. Sea water is Saltish.
   g‘Ð H$m nmZr I mam hmVm h¡
6. Coconut water is sweet.
   Zm[a¶b H$m nmZr ‘rRm hmVm h¡
7. Peacock is beautiful bird.
   ‘ma gÝXa njr h¡
8. Knowledge is power.
   kmZ hr ep³V h¡
9. Health is wealth.
   ñdmñÏ¶ hr gn{Îm h¡
10. Tamarind is sour.
    B‘br I Å>r hmVr h¡
11. Milk is complete diet.
    XY nU Amhma h¡
12. Milk contains all essential nutrients.
    XY ‘| gma nmfH$ VËd {dÚ‘mZ hmV h¡
13. Good food, good health.
    AÀN>m ^mOZ, AÀN>m ñdmñÏ¶&

14. Contentment is greatest happiness.
gVmf hr na‘ gI h&

15. Give respect, take respect.
gå‘mZ Xr{OE, gå‘mZ br{OE&

16. Cow gives milk.
Jm¶ XY XVr h&

17. An Ox is useful in agricultural work.
~b H${f H$m¶ ‘| (Cn¶mJr hmVm h) H$m‘ AmVm h&

18. The king in cruel.
amOm H$a h&

19. The queen is kind-hearted.
amZr X¶mb h&

20. A scholar is respected everywhere.
{dÛmZ H$m gdÌ AmXa hmVm h&

21. A Lady-Scholar lectures well.
{dXfr AÀNm ì¶m»¶mZ XVr h&

22. Gardener waters plants.
‘mbr nmYm| H$m nmZr XVm h&

23. Lady-gardener plucks flowers.
‘m{bZ ’$b VmSVr h&

24. Washerman washes clothes.
Ym~r H$nS YmVm h&

25. Washerwoman dries clothes.
Ym{~Z H$nS gImVr h&

26. The Mountain is tall.
nhmS D$Mm h&

27. The hillocks are beautiful.
nhm{S¶m gÝXa h&

28. The old man is sick.
~Tm AmX‘r ~r‘ma h&

29. The old women is active.
~{T¶m g{H$¶ h&

30. Dog is a faithful animal.
H$Îm B‘mZXma/d’$mXma OmZda h&

31. Dogs are dangerous.
H$Îm IVaZmH$ hmV h&

32. The river is deep.
ZXr Jhar h&

33. Rivers are very useful.
Z{X¶m ~Sr Cn¶mJr hmVr h&

34. A child needs good food.
~ƒ H$m AÀNm ^mOZ Mm{hE&

35. Children play in the street.
~ƒ Jbr ‘ IbV h&

36. A book is a treasure house of knowledge.
nñVH$ kmZ H$m IOmZm h&

37. Books guide us.
nñVH$ h‘mam ‘mJXeZ H$aVr h&

38. Bread gives strength.
amQr VmH$V XVr h&

39. Breads are not grown on trees.
am{Q¶m nSm na Zht CJVt&

40. Fish swims in water.
‘Nbr nmZr ‘ VaVr h&

41. Fishes swim in water.
‘N{b¶m nmZr ‘ VaVr h&

42. Cat drinks milk.
{~ëbr XY nrVr h&

43. Cats hunt rats.
{~pëb¶m Mhm H$m {eH$ma H$aVr h&

44. A tree gives us shade.
dj/nS h‘ Nm¶m XVm h&

45. Trees keep the atmosphere cool.
dj/nS dmVmdaU H$m R>S>m aIV h&

46. India was a golden-bird.
^maV gmZ H$s {M{S>¶m Wm&

47. India is a developing country.
^maV EH$ {dH$mgerb Xe h&

48. India will become a powerful country.
^maV ep³Vembr Xe ~ZJm&

49. Thousands of birds live here.
¶hm hOmam| n j r ahV h&

50. Birds are singing.
n j r Jm ah h&

51. All the birds will fly-away.
gma n j r CS> Om¶|J&

52. Mohan ate bread.
‘mhZ Z amQr I m¶r&

53. Mohan eats bread.
‘mhZ amQr I mVm h&

54. Mohan will eat bread.
‘mhZ amQr I m¶Jm&

55. Rama killed Ravana.
am‘ Z amdU H$m ‘mam&

56. We celebrate Deepavali.
h‘ Xrdmbr ‘ZmV h&

57. Tomorrow we will go on picnic.
H$b h‘ dZ^mO na Om¶|J&

58. Ramesh is a brave boy.
a‘e gmhgr bS>H$m h&

59. Poet writes poetry.
H${d H${dVm {b I Vm h&

60. Farmer ploughs field.
{H$gmZ I V OmVVm h&

61. The thief ran-away.
Mma ^mJ J¶m&

62. Don’t waste time.
g‘¶ ~a~mX ‘V H$am&
63. Work hard to be successful.
g’$b hmZ H$ {bE n[a l‘ H$am&
64. Be kind to animals.
neAm H$ à{V X¶m^md a I m&
65. Time is precious.
g‘¶ ‘ë¶dmZ h&
66. Nature is the best teacher.
àH${V gdm©Îm‘ AÜ¶mnH$ h&
67. As you sow, so you reap.
Og ~mAm, dgm H$mQm&
68. Youth is the foundation of life.
¶mdZ OrdZ H$s ~{Z¶mX h&
69. Love your neighbour.
nSmgr g ß¶ma H$am&
70. Respect your teachers.
AÜ¶mnH$m H$m gå‘mZ H$am&
71. Be polite.
{dZ‘ ~Zm&
72. Discipline is the first step to success.
AZemgZ g’$bVm H$s nhbr grT>r h&
73. Beauty is truth.
gmX¶ hr gË¶ h&
74. Talk less, listen more.
H$‘ ~mbm, A{YH$ gZm&
75. Books are the treasured wealth of knowledge.
nñVH$ kmZ ê$nr gån{Îm H$ H$memJma h&
76. India is a democratic country.
^maV àOmVm{ÌH$ Xe h&
77. Motherland is the mother of all mothers.
‘mV^{‘ gmar ‘mVmAm H$s ‘mVm h&

78. Good habits build character.
AÀN¡r A¥mXV| g M[aÌ {Z{‘V h¡mVm h¢&

79. India is secular country.
^maV Y‘© {Zanj amîQ´ h¡&

80. Good books improve mental health.
AÀN¡r nñVH|$ ‘mZ{gH$ ñdmñÏ¶ ~T>mVr h¢&

81. Good books are like good food.
AÀN¡r nñVH|$ AÀN o ^mOZ Ogr hmVr h¢&

82. Good food is essential for good health.
AÀN o ñdmñÏ¶ H$ {bE AÀNm ^mOZ Oéar h¡&

83. Rights and duties go together.
A{YH$ma Ama H$V©ì¶ gmW-gmW MbV h¢&

84. Work is worship.
H$‘© hr nOm h¡&

85. Service to man is service to god.
‘mZd-gdm hr ‘mYd-gdm h¡&

86. Know yourself.
ñd¶ OmZm&

87. Practice makes man perfect.
Aä¶mg g ‘Zî¶ {ZnU ~ZVm h¡&

88. India is our motherland.
^maV h‘mar ‘mV^{‘ h¡&

89. All Indians are our brothers and sisters.
gma ^maVr¶ h‘ma ^mB-~hZ h¢&

90. India is a free Nation.
^maV ñdVÌ amîQ´ h¡&

91. On 15th August, 1947 we became free from British rule.
15 AJñV, 1947 H$m h‘ AJOm| hr hH$‘V g AmOmX (ñdVÌ) hE&

92. India is a soverign, democratic republic.
^maV gd à^Ëd - gånÞ, àOmVm{ÌH$ JUVÌ h¡&

93. India is a secular and socialistic country.
^maV Y‘© {Zanj Ama g‘mOdmXr Xe h¡&

94. According to our constitution, every citizen has equal rights.
h‘ma g{dYmZ H$ AZgma gma ZmJ[aH$m| H$m g‘mZ A{YH$ma àmá h&

95. Rights and duties are the two sides of one coin.
A{YH$ma Ama H$V©ì¶ EH$ hr {g³H$ H$ Xm nhb h&

96. Shahjahan Built Tajmahal.
emhOhm Z VmO‘hb ~Zm¶m&

97. Surdas wrote Sursagar.
gaXmg Z gagmJa {bI m&

98. Open the door.
{H$dmS> I mbm&

99. Eat fresh food for good health.
AÀN> ñdmñÏ¶ H$ {bE VmOm I mZm I mAm&

100. Write a letter.
nÌ {bI m&

101. The cat is drinking milk.
{~ëbr XY nr ahr h&

102. Who is singing?
H$mZ Jm ahm h?

103. Do not pluck flowers.
’$b ‘V VmS>m&

104. No Smoking, please !
H$n¶m Y‘nmZ ‘V H$am&

105. Cleanliness is godliness.
ñdÀN>Vm B©ídar¶Vm h&

106. Read good books.
AÀN>r {H$Vm~| nT>m&

107. Our soldiers are brave.
h‘ma {gnmhr dra h&

108. I can swim in the river.
‘ ZXr ‘| Va gH$Vm h&

109. No one should jump from Charminar.
Mma‘rZma g {H$gr H$m Zht H$XZm Mm{hE&

110. You can go now.
A~ V‘ Om gH$V hm&

111. I was not there when he came to my house.
O~ dh ‘a Ka Am¶m V~ ‘ Ka na Zht Wm&

112. We returned home to celebrate Deepavali.
Xrdmbr H$m Ë¶mhma ‘ZmZ H$ {bE h‘ Ka bmQ Am¶&

113. The honest man is always trusted.
B‘mZXma AmX‘r h‘em {dídgZr¶ hmVm h&

114. Country's progress depends on the states development.
amîQ H$s CÞ{V amÁ¶m H$ {dH$mg na {Z^a H$aVm h&

115. He worked so hard that his health broke down.
CgZ BVZr ‘hZV H$s, {H$ dh ~r‘ma nS J¶m&

116. I never knew the paper would be so easy.
‘P H$^r ‘mb‘ hr Z Wm {H$ àíZ - nÌ BVZm AmgmZ hmJm&

117. Our national song is "Vande Mataram".
""dÝX ‘mVZ‘'' h‘mam amîQr¶ JrV h&

118. Krishna was caught while eating butter.
H$Ýh¶m ‘³IZ ImV hE nH$S>m J¶m Wm&

119. Everest is the highest peak in the world.
{díd ‘ g~g D$Mm {eIa EdañQ h&

120. You might have heard the name of sant Kabirdas
Amn gV H$~raXmg H$m Zm‘ gZ hmJm&

121. He is a fine person except that he is not bold.
dh ~hV hr AÀNm AmX‘r h {H$ÝV gmhgr Zht h&

122. Although he is poor, yet he is honest.
¶Ú{n dh Jar~ h, VWm{n B‘mZXma h&

123. The temple is on the bank of the river.
ZXr H$ {H$Zma ‘{Xa h&

124. Rama might have eaten the bread.
am‘ Z amQr Im¶r hmJr&

125. According to our constitution, every citizen has equal right.
h‘ma g{dYmZ H$ AZgma gma ZmJ[aH$m H$m g‘mZ A{YH$ma àmá h&

126. Pratap Sinha became the Rana of Mewar after his father's death.
{nVm H$s 'mV H$ ~mX àVmn qgh 'dmS> H$ amUm ~Z&

127. India is a country of villages.
^maV Jmdm| H$m Xe h&

128. Ramzan is the festival of Muslims.
रमज़ान मुसलमानों का त्यौहार है।

129. Books are delightful companions.
{H$Vm~| gVîQ> H$aZdmbr gmWr h&

130. The elephant is a largest and strongest animal.
hmWr ~hV ~Sm Ama VmH$Vda OmZda h&

131. I read not only English but also Hindi.
' AJOr hr Zht ~ëH$s qhXr ^r nT>Vm h&

132. I shall go to Darjeeling in the summer.
' Ja{'¶m| '| Sm{OqbJ OmD$Jm&

133. I get up early in the morning.
' g~a hr CR>Vm h&

134. You must abstain from smoking.
Våh| YAm nrZm N>mS> XZm Mm{hE&

135. He is fond of mangoes.
Cg Am' ~hV ngÝX h&

136. We should sacrifice everything for the sake of our country.
h'| Xe H$ {bE g~ H$N> Ý¶mNmda H$aZm Mm{hE&

137. The Taj Mahal was built at a great cost.
~hV I M HaH VmO'hb H$m ~Zdm¶m J¶m Wm&

138. Gandhiji was born on October 2, 1869.
JmÝYrOr H$m OÝ' 2 A³V~a gZ 1869 B. H$m hAm Wm&

139. The Navchandi fair is held every year at Meerut.
'raQ> '| ha df ZdMÊS>r H$m CËgd hmVm h&

140. He was charged with theft.
Cg na Mmar H$m Amamn bJm¶m J¶m&

141. Nepal is to the North of India.
^maV H$s CÎma {Xem '| Znmb h&

142. Exercise is a panacea for all physical ailments.
H$gaV g^r ~r‘m[a¶m H$s Xdm h&
143. Now the patient is out of danger.
‘arO ˜Va g ~mha h&
144. Ramayan is a famous epic.
am‘m¶U EH$ à{gÕ JÝW h&
145. Unity is strength.
EH$Vm hr ~b h&
146. Barking dogs seldom bite.
Om JaOVm h dh ~agVm Zhr&
147. Health is wealth.
ñdmñÏ¶ hr gnÎmr h&
148. One nail drives out another.
H$mQ g H$mQm {ZH$bVm h&
149. Great cry, little wool.
ऊँची दूकान, फ़ीका पकवान।
150. Killing two birds with one stone.
EH$ nW Xm H$mO&
151. The elephant has a trunk.
hmWr H$m EH$ gS hmVm h&
152. Base ball is a national game of America.
~g~mb A‘[aH$m H$m amîQr¶ I b h&
153. Vidyasagar was a very generous and charitable man.
{dÚmgmJa AË¶V hr CXma Ama XmZr W&

* * *

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. and B.S.W

II Year III Semester Examination

November/December-2017

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - क (5 × 4 = 20 M)

ANSWERS

gMZm … {ZåZ{b{ I V '| g {H$Ýht nmM àíZm| H$ CÎma gjn '| Xr{OE& **(5 × 4 = 20 M)**

1. H$~raXmg H$ "Jé' gå~Yr {dMmam| na àH$me Sm{bE& **(Page No. 8, Q.No. 4)**
2. H$mÝhm AnZr '¶m g MmQr H$ ~ma '| ³¶m nN» ah| h? **(Out of Syllabus)**
3. '{WbreaU Já Z ZmOdmZm| g ³¶m H$aZ H$m H$hm h? **(Page No. 21, Q.No. 1)**
4. g^ÐmH$'mar MmhmZ Z AnZ ~MnZ H$m {H$g H$ Ûmam AZ^d {H$¶m Wm? **(Page No. 45, Q.No. 2)**
5. MÝX~aXmB H$V "nÏdramO amgm' JW H$m n[aM¶ Xr{OE& **(Page No. 54, Q.No. 5)**
6. g'$s à'm I¶r Ymam na àH$me Sm{bE?

उत्तरः

''सूफी'' संप्रदाय का संबंध अरब और ईरान के साथ माना गया है । 'सूफी' शब्द तत्कालीन मुसलमान फकीरों के लिए प्रयुक्त हुआ है। कहा जाता है कि जो लोग स्वच्छ, पवित्र और शुध्द आचारण के हैं वे सूफी माने गए हैं । सूफी प्रेम काव्य कोमल हृदय की सुंदर एवं सरस अभिव्यक्ति है । इस काव्य के कवि कोमल एवं मृदु स्वभाव के थे ।

सूफी मत को इस्लाम धर्म का प्रधान अंग स्वीकार किया गया है । इस मत में एक ही ईश्वर को माना गया है, जिसे 'हक' कहा गया है । सूफी ईश्वर को प्रेम के रूप में देखते हैं । इनकी साधना विरह की साधना है । इसी से जीव और परमात्मा का महामिलन होता है, जिसे 'अनलहक' कहा गया है ।

7. gJU H$îUH$mì¶ Ymam H$s {defVmE ~VmBE& **(Page No. 88, Q.No. 9)**
8. "{dkmZ … daXmZ ¶m A{^emn' {df¶ na qZ~Y {b{ I E& **(Page No. 123, निबन्ध - 3)**

खण्ड - ख (5 × 12 = 60 M)

gMZm … {ZåZ{b{ I V àíZm H$ CÎma {dñVma g {b{ I E& **(2 × 6 = 12)**

9. H$) '{Zfm OZ' Xb^ h, Xh Z ~maå~ma&
Vada ¶ '$b P{S nSçm, ~h[a Z bmJ Sma&& **(Page No. 3, दोहे - 3)**

I) gY 'Z gY dMZ, gYr g~ H$aV{V&
Vbgr gYr gH$b {~{Y, aKda à' àg{V&& **(Page No. 11, दोहे - 2)**

J) Om H$N nTm V' H$m¶ '| ^r gmW hr n[aUV H$am,
g~ ^³Vda à‡mX H$s {ZåZmp³V H$m 'Z '| Yam&
""H$m'ma '| hr ^mJdV Y'MaU H$a bm ¶hm'',
Za - OÝ' Xb^ Ama dh ^r A{YH$ ahVm h H$hm&& **(Page No. 20, दोहे - 2)**

K) Ahm! I bVm H$mZ ¶hm {ee qgh g,
Am¶-dÝX H$ gÝXa g I '¶ ^m½¶ gm
H$hVm h CgH$m bH$a {ZO JmX '| -
"I mb, I mb ' I, qgh--~mb, ' X I H$a
{JZ bJm Va XmVm H$m, h ^b,
X I Vm H$g ¶h H${Q b H$Rma h&' **(Page No. 33, दोहे - 1)**

10. **{H$gr EH$ H${dVm H$m gmame {b{ I E&** **1 × 12 = 12**

H$) ~mbbrbm& **(Out of Syllabus)**

I) OrdZ H$m A{YH$ma **(Out of Syllabus)**

J) 'am Z¶m ~MnZ& **(Page No. 45, कविता का सारांश)**

11. **{H$gr EH$ àíZ H$m CÎma Xr{OE&** **1 × 12 = 12**

H$) Am{XH$mbrZ H$mì¶ H$s {defVmAm| na àH$me Sm{bE& **(Page No. 52 Q.No. 4)**

I) am'^p³V Ymam H$s {defVmAm| H$m dUZ H$s{OE& **(Page No. 89, Q.No. 10)**

12. **{H$Ýht Xm H${d¶m| na {Q>ßnUr {b{ I E&** **2 × 6 = 12**

H$) ^maVÝX h[aíMÝÐ **(Page No. 115)**

I) gaXmg **(Page No. 112)**

J) g{'ÌmZXZ nV **(Page No. 114)**

K) am'Ymar qgh {XZH$a **(Page No. 117)**

13. **H$) {H$gr EH$ {df¶ na {Z~Y {b{IE&** **6 × 1 = 6**

1. gm{hË¶ Am¡a g'mO **(Page No. 119, निबंध - 1)**

2. AmY{ZH$ {ejm Am¡a Zmar **(Page No. 124, निबंध - 4)**

3. OrdZ '| ñdÀN>Vm H$m 'hËd **(Page No. 128, निबंध - 6)**

I) {ZåZ{b{IV dm³¶m| H$m {hÝXr '| AZdmX H$s{OE& **6 × 1 = 6**

Q1. A book is treasure house of knowledge.

CÎma: nñVH$ kmZ H$m ^ÊSma h&

Q2. Rights and duties are the two sides of one coin.

CÎma: A{YH$ma Am¡a H$Îmì¶ EH$ hr {g³H$ H$ Xm nhb h&

Q3. Service to man is service to god.

CÎma: 'mZd gdm hr 'mYd gdm h&

Q4. Trees keep the atmosphere cool.

CÎma: dj dmVmdaU H$m WSm aIV h&

Q5. A scholar is respected every where.

CÎma: {dÛmZ H$m gdÌ AmXa hmVm h&

Q6. India is a secular and socialistic country.

CÎma: ^maV EH$ Y' {Zanj Am¡a g'mOdmXr Xe h&

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT AND SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. and B.S.W

II Year III Semester (CBCS) Examination

November/December - 2018

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (5 × 4 = 20 M)

ANSWERS

सूचनाः निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. 'परोपकार के महत्व' को बताते हुए कबीरदास ने क्या उदाहरण दिए हैं?

उत्तर :

परोपकार के महत्व को बताते हुए कबीरदास ने यह उदाहरण दिया है कि -

सरवर तरवर संत जन, चौथा बरसे मेह ।

परमारथ के कारनें, चारों धारी देह ।।

कबीरदास कहते हैं कि सरोवर, वृक्ष, संतजन और चौथा मेह का बरसना, ये चारों परोपकार के लिए ही प्रकट होते हैं । इसी तरह संत भी परोपकारी होते हैं । उनके परोपकार से किसी की बराबरी नहीं हो सकती है ।

यही उदाहरण कबीरदास ने दिया है ।

2. तुलसीदास ने 'मीठे वचन' के बारे में क्या कहा है? **(Page No. 21, Q.No. 8)**

3. मैथिलीशरण गुप्त जी ने नौजवानों को कौन से दो मार्ग बताये हैं? **(Page No. 22, Q.No. 3)**

4. फुल और काँटा एक साथ पनपते हैं, लेकिन उनमें समानता क्यों नहीं होती ? **(Page No. 29, Q.No. 3)**

5. आदिकाल की परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए । **(Page No. 51, Q.No. 3)**

6. निर्गुण ज्ञानाश्रयी धारा का परिचय दीजिए ।

उत्तर :

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कबीर द्वारा प्रवर्तित भक्ति धारा को 'निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा' की संज्ञा से अभिहित किया । संत काव्य परंपरा का नाम दिया है । 'संत' शब्द की व्युत्पत्ति 'शांत' शब्द से मानी जाती है और उसका अर्थ निवृत्ति मार्गी या विरागी है । संत वह है जिसने सत् रूपी परमतत्व का अनुभव किया हो । उस काव्यधारा ने ईश्वरीय तत्व को जानने के लिए ज्ञान तत्व एवं भक्ति तत्व को प्रधानात दी । इसमें सत्व, रज, तम तीन गुणों से परे निर्गुण ईश्वर की उपासना को महत्व दिया है । और अपने पराये के भेद को मिटाकर आत्मोन्नति के पथ पर चलने की बात कही है । अपने हित के साथ जो दूसरों के हित का चिंतन करता है। ''जाति-पाति पूछो नाहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई'' के स्वर मुखरित करेन वाले संत कवि 'सर्वे भवन्ति सुखिनः को मानने वाले थे ।

7. सगुण रामभक्ति धारा पर प्रकाश डालिए । **(Page No. 89, Q.No. 10)**

8. 'जीवन में स्वच्छता का महत्व' विषय पर निबंध लिखिए । **(Page No. 128, निबंध - 6)**

खण्ड - 'ख' (5 × 12 = 60 M)

सूचनाः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए।

9. किन्ही <u>दो</u> की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए **(2 × 6 = 12 M)**

क) राम नाम के पंटतरै देबे कौ कछु नांहिं । **(Page No. 2, Q.No. 6)**
क्या लै गुर संतोखिए, हौंस रही मन मांहिं ।।

ख) तुलसी असमय के सखा, धीरत धरम बिबेक । **(Page No. 13, Q.No. 6)**
सहित साहस सत्यंव्रत, राम भरोसो एक ।।

ग) हे नवयुवाओं । देश भर की दृष्टि तुम पर ही लगी, **(Page No. 19, Q.No. 1)**
है मनुज जीवन की तुम्हीं में ज्योति सबसे जगमगी ।
दोगे न तुम तो कौन देगा योग देशोद्धार में?
देखो, कहाँ क्या हो रहा है आजकल संसार में ।।

घ) है जनम लेते जगह में एक ही, **(Page No. 26, Q.No. 1)**
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी
एक ही सी चाँदनी है डालता।

10. (क) किसी एक कविता का सारांश लिखिए। (1 × 12 = 12 M)

1. बाललीला **(Out of Syllabus)**
2. मेरा नया बचपन **(Page No. 45, कविता का सारांश)**
3. भारत **(Page No. 36, कविता का सारांश)**

11. किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए। (1 × 12 = 12 M)

क) आदिकालीन काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए चंदरबरदाई का परिचय दीजिए। **(Page No. 48, 110, Q.No. 1)**

अथवा

ख) कृष्णकाव्य धारा की विशेषताएँ बताते हुए सूरदास का परिचय दीजिए। **(Page No. 112, Q.No. 2)**

12. किन्हीं दो कवियों पर टिप्पणी लिखिए। (2 × 6 = 12 M)

क) कबीरदास **(Out of Syllabus)**
ख) तुलसीदास **(Page No. 113)**
ग) रामधारीसिंह दिनकर **(Page No. 117)**
घ) सुमित्रानन्दन पन्त **(Page No. 114)**

13. क) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। (6 × 1 = 6 M)

क) साहित्य और समाज **(Page No. 119, निबंध - 1)**
ख) विज्ञानः वरदान या अभिशाप **(Page No. 123, निबंध - 3)**
ग) आधुनिक शिक्षा और नारी **(Page No. 124, निबंध - 4)**

ख) निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। **(6 × 1 = 6 M)**

1. Ramayan is a famour epic. **(Page No. 140, Bit-144)**
2. Books are delightful companions **(Page No. 139, Bit-129)**
3. Unity is strength **(Page No. 157, Bit-145)**
4. The honest man is always trusted. **(Page No. 138, Bit-113)**
5. Countries progress depends on the states development. **(Page No. 138, Bit-114)**
6. Health is wealth. **(Page No. 140, Bit-147)**

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT AND SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. and B.S.W

II Year III Semester (CBCS) Examination

June/July - 2019

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (5 × 4 = 20 M)

ANSWERS

सूचनाः निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. **कबीरदास ने गुरू और शिष्य के संबंध को कैसे स्पष्ट किया है ?**

उत्तरः

कबीरदास ने 'गुरू और शिष्य' के संबंध को इस तरह से स्पष्ट किया है -

कबीर जी के अनुसार 'सबसे बड़ा तीर्थ गुरू हैं जिनके कृपा से फल अनायास ही प्राप्त हो जाता है, तथा उनका चरणामृत ही गंगाजल है'।

कबीर जी ने अपने इस दोहे में गुरू और शिष्य के रिश्ते को स्पष्ट करते हुए कहा है -

गूरू गोबिंद दोऊ खड़े, का के लागूं पाय ।

बलिहारी गुरू आपणे, गोबिंद दियो मिलाय ।

अर्थात् गुरु और गोबिंद एक साथ खड़े हों, तो किसे प्रणाम करना चाहिए, गुरू या गोबिंद को? ऐसी स्थिति में गुरू के श्री चरणों में शीश झुकाना उत्तम है। जिनके कृपा रूपी प्रसाद से गोबिंद के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

तथा उन्होंने ये भी कहा है कि -

गुरू कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट ।

अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहैं चोट ।

इस दोहे में कबीर ने गुरू और शिष्य के पवित्र संबंध को बताते हुए कहा है कि गुरू कुम्हार है और शिष्य मिट्टी के कच्चे घड़े के समान है । जिस तरह घड़े को सुंदर बनाने के लिए अंदर हाथ डालक सहारा भी देते हैं, तथा बाहर से थाप मारकर चिकना बनाते हैं, ठीक उसी प्रकार शिष्य के प्रति अंदर से प्रेम भावना रखते हुए कठोर अनुशासन में रखकर उसकी बुराइयों को दूर करके संसार में सम्मानजनक बनाते हैं ।

इसी तरह से कबीर दास ने गुरु और शिष्य के संबंध को स्पष्ट किया है ।

2. **चोटी नहीं बढ़ने पर कृष्ण अपनी माँ से क्या सवाल करते हैं ?** **(Out of Syllabus)**

3. **वीर बालक भरत की साहसिक गाथाओं पर प्रकाश डालिए ।** **(Page No. 36, Q.No. 1)**

4. **'फूल और काँटा' दोनों के गुण कैसे अलग हैं ?** **(Page No. 21, Q.No. 1)**

5. **आदिकालीन काव्य रचनाओं का उल्लेख कीजिए ।** **(Page No. 54, Q.No. 1)**

6. **संत काव्य की विशेषताएँ लिखिए ।**

उत्तर :

संत काव्य की विशेषताएँ -

- **संत काव्य भाव प्रधान है, कला प्रधान नहीं ।**
- **अद्वैतबाद दर्शन, रहस्यबाद की प्रधानता ।**
- **गुरू की महत्ता का प्रतिपादन तथा ज्ञान के महत्व का प्रतिपादन ।**
- **संत काव्य के कवियों ने आडंबरों का विरोध, कुरीतियों का विरोध तथा समाजिक कुरीतियों का कड़ा विरोध किया है ।**
- **नारी के प्रति असंतुलित एवं अतिवादी दृष्टिकोण, नाथपंथी का प्रभाव ।**
- **संत काव्य के कवियों की भाषा अपरिष्कृत एवं बोलचाल की भाषा है ।**
- **इस काव्य में शांत रस की प्रधानता, अनायास ही अलंकार का प्रयोग हुआ है ।**
- **संत कवि निर्गुण ब्रह्म में विश्वास रखते हैं ।**

7. अष्टछाप के कवियों के नाम बताइए ।

उत्तर :

वल्लभाचार्य द्वारा प्रचारित पुष्टि मार्ग में दीक्षीत होनेवाले सूरदास आदि अष्टछाप कवियों को श्रीनाथ मंदिर के अष्टद्वार कहा गया । वे प्रतिदिन गोवर्धन में श्रीनाथ मंदिर में कृष्ण के नैमित्तिक कर्मो पर मधुर पद बनाकर राधा कृष्ण की लीलाओं का गान करते थे । वे सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास तथा कृष्णदास, नंददास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, तथा चतुर्भुजदास थे ।

8. 'विद्यार्थी और राजनीति' पर अपने विचार लिखिए । **(Page No. 121, Q.No. 2)**

खण्ड - 'ख' (5 × 12 = 60 M)

सूचनाः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए।

9. किन्ही <u>दो</u> की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए **(2 × 6 = 12 M)**

क) एक भरोसो, एक बल, एक आस बिस्वास । **(Page No. 12, Q.No. 3)**
एक राम धन, स्याम हित, चातक तुलसीदास ।।

ख) दुनिया कैसी बावरी, पाथर पूजन जाय । **(Page No. 5, 6, Q.No. 8)**
घर की चाकी कोई न पूजे, जैहि का पीसा खाय ।।

ग) जो है समर्थ जो शक्तिमान **(Out of Syllabus)**
जीवन का है अधिकार उसे
समझो लाठी का बैल विश्व,
पूजता सभ्य संसार उसे ।

घ) ऊँच-नीच का ज्ञान नही था, छुआछूत किसने जानी । **(Page No. 39, Q.No. 1)**
बनी हुई थी, वह झोपड़ी और चीथड़ो में रानी ।।

10. (क) किसी एक कविता का सारांश लिखिए । (1 × 12 = 12 M)

1. बाललीला **(Out of Syllabus)**
2. नवयुवकों से **(Page No. 21, कविता का सारांश)**
3. मेरा नया बचपन **(Page No. 45, कविता का सारांश)**

11. किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए । (1 × 12 = 12 M)

क) हिन्दी साहित्य के काल विभाजन का उल्लेख करते हुए आदिकाल की परिस्थितियों को विस्तार से बताइए । **(Page No. 48, 49, 51 Q.No. 1, 3)**

अथवा

ख) 'भक्तिकाल' को स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है ? कथन पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर :

हिन्दी साहित्य के इतिहास मे १४ वी शताब्दी के मध्य से १६ वी शताब्दी के मध्य तक के काल को पूर्वमध्यकाल तथा भक्तिकाल की संज्ञा दी गई है । भक्तिकाल को 'स्वर्णयुग' कहा जाता है । इस काल के अमूल्य योगदान के संबंध मे मेरे विचार इस प्रकार है -

'भक्ति की स्वर्ण - भू पर मुखरित सत्साहित्य

युग - युग का कालुष्य मिटाना ही उसका उद्देश्य । - शुभदा

इस काल का साहित्य स्थायी है, शाखत है, सार्वभौम है तथा कालजयी है । इस युग में सूर, तुलसी, कबीर, जायसी आदि युगप्रर्वतक कवियों की दिव्यवाणी देश के कोने - कोने में अनुगूँलित हुई थी । उनके द्वारा दिए गए उपदेश उपयोगितावादी यथार्थवादी तथा व्यवहारवादी थे । इस काल का साहित्य भारतीय संस्कृति का दर्पण है । इसमें शाखत मानवीय मूल्यों की स्थापना हुई है । उस साहित्य की भूमि मानवतावाद है तथा इसमें लोकमंगल की भावना प्रधान है । यह साहित्य तत्कालीन नैराश्यपूर्ण जन हृदय मे जीवन के प्रति आस्था तथा ईश्वर के अस्तित्व के प्रति विश्वास निर्माण करता है । इस काव्य की यात्रा स्वान्तः सुरवाय से सर्वसुरवाय रही है ।

12. किन्हीं दो कवियों पर टिप्पणी लिखिए। **(2 × 6 = 12 M)**

क) चंदबरदाई **(Page No. 110)**

ख) भारतेंदु हरिश्चन्द्र **(Page No. 115)**

ग) मैथिलीशरण गुप्त **(Page No. 116)**

घ) रामधारी सिंह दिनकर **(Page No. 117)**

13. क) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। **(6 × 1 = 6 M)**

क) साहित्य और समाज **(Page No. 119, निबंध - 1)**

ख) जीवन में स्वच्छता का महत्व **(Page No. 128, निबंध - 6)**

ग) विज्ञान वरदान या अभिशाप **(Page No. 123, निबंध - 3)**

ख) निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। **(6 × 1 = 6 M)**

1. I work in a Post Office.

उत्तरः मैं डाकखाने में काम करता हूँ।

2. She is a teacher.

उत्तरः वह अध्यापिका है।

3. The soup is on the table.

उत्तरः साबून मेज पर है।

4. Ravi and Kavi took the bus.

उत्तरः रवी और कवि बस में चढ़े।

5. I did not see them in the theatre.

उत्तरः मैने उनको सिनेमा घर में नही देखा।

6. Ram waited for the train but the train was late.

उत्तरः राम रेल के लिये खडा था, परंतु रेल देरी से रही।

FACULTY OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE

B.A, B.Com, B.B.A, B.Sc & B.S.W II Year, III - Semester Examination, November / December - 2019

HINDI (Second Language)

Paper - III

Time : 3 Hours] [Max. Marks : 80

खण्ड - 'क'

ANSWERS

निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **(5 × 4 = 20 M)**

1. सूरदास के अनुसार बलदाऊ की बेनी कैसी थी ? **(Out of Syllabus)**
2. तुलसीदास के अनुसार दूसरों की सुख - संपत्ति देखकर हमें क्या नहीं करना चाहिए । **(Page No. 15, Q.No. 1)**
3. कबीरदास ने किसका खण्डन किया । **(Page No. 9, Q.No. 7)**
4. सुमित्रानन्दन पंत के अनुसार परिस्थितियों को अपनें अनुकूल कौन बना सकता है ? **(Out of Syllabus)**
5. सुभद्रा कुमारी चौहान ने जीवन को युद्धक्षेत्र क्यों कहा है ? **(Page No. 41, Q.No. 3)**
6. भरत के माता - पिता का क्या नाम था ? **(Page No. 37, Q.No. 6)**
7. कृष्णभक्ति शाखा का परिचय दीजिए । **(Page No. 94, Q.No. 11)**
8. 'विज्ञानः वरदान या अभिशाप' विषय पर विचार कीजिए । **(Page No. 123, निबंध - 3)**

खण्ड - 'ख'

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए । **(5 × 12 = 60 M)**

9. **किन्हीं दो की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए ।**

   क) सरवर तरवर संत जन, चौथा बरसे मेंह । **(Page No. 5, Q.No. 7)**
   परमारथ के कारनें, चारों धारी देह ।।

ख) तुलसी मीठे वचन तें, सुख उपचत चहूँ ओर । **(Page No. 14, Q.No. 8)**
वशीकरण एक मंत्र है, तज दे वचन कठोर ।।

ग) फूल लेकर तितिलियों को गोद में, भँवर को **(Page No. 27, Q.No. 3)**
अपना अनूठा रस पिला ।
निज सुगंदों और निराले ढंग से, है सदा देता कली का जी खिला ।।

घ) दो पथ, असंयम और संयम, हैं तुम्हें अब सब कहीं, **(Page No. 20, Q.No. 3)**
पहला अशुभ है, दूसरा शुभ है, इसे भूलो नहीं ।
पर मन प्रथम की ओर ही तुमको झुकायेगा अभी,
यदि तुम न सँभलोगे अभी तो, फिर न सँभलोगे कभी ।।

10. किसी एक कविता का सारांश लिखिए ।

(1) बाल-लीला **(Out of Syllabus)**

(2) भारत **(Page No. 36, कविता का सारांश)**

(3) मेरा नया बचपन **(Page No. 45, कविता का सारांश)**

11. किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए ।

(1) आदिकाल की परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए । **(Page No. 51, Q.No. 3)**

(अथवा)

(2) भक्तिकालीन काव्य की विशेषताएँ बताइए । **(Page No. 64, Q.No. 2)**

12. किन्हीं दो कवियों पर टिप्पणी लिखिए ।

(क) कबीर **(Out of Syllabus)**

(ख) चंदबराई **(Page No. 110)**

(ग) सुमित्रानंदन पंत **(Page No. 114)**

(घ) सुभद्रा कुंमारी चौहान **(Out of Syllabus)**

13. (क) किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए ।

1. आधुनिक शिक्षा और नारी **(Page No. 124, निबंध - 4)**

2. शिक्षा पर भूमंडलीकरण का प्रभाव **(Page No. 126, निबंध - 5)**

3. समाज में नारी का स्थान **(Out of Syllabus)**

(ख) हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

1. India is the country of festivals.

उत्तरः भारत त्योहारों का देश है ।

2. Divya writes the examination well.

उत्तरः दिव्या परीक्षा को अच्छे से लिखती है ।

3. Bhagya is singing a song.

उत्तरः भाग्य गीत गा रही है ।

4. Ramcharit Manas was written by Tulsidas.

उत्तरः रामचरित मानस को तुलसीदास ने लिखा था ।

5. Chand Bardai was great poet.

उत्तरः चंद बरदाई महान कवि थे ।

6. Hindi is very easy language.

उत्तरः हिंदी बहुत आसान भाषा है ।

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT AND SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. and B.S.W

II Year III Semester (CBCS) Examination

Model Paper - I

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (5 × 4 = 20 M)

ANSWERS

सूचनाः निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. कबीर ने स्वार्थी लोगों के बारे में क्या कहा है? **(Page No. 8, Q.No. 3)**
2. तुलसीदास जी के अनुसार बुरे समय के मित्र कौन-कौन होते हैं? **(Page No. 15, Q.No. 1)**
3. कवि ने नौजवानों के लिए कौन से दो मार्ग बताए हैं? **(Page No. 22, Q.No. 3)**
4. फूल और काँटा एक साथ पनपते हैं। लेकिन उनमें समानता क्यों नहीं होती? **(Page No. 29, Q.No. 3)**
5. आदिकाल की परिस्थितियों के बारे में लिखिए। **(Page No. 51, Q.No. 3)**
6. भक्तिकाल के बारे में लिखिए । **(Page No. 63, Q.No. 1)**
7. जीवन में स्वछता का क्या महत्व है निबंध लिखिए । **(Page No. 128, निबंध)**
8. भरत की वीरता के बारे में लिखिए । **(Page No. 36, Q.No. 1)**

खण्ड - 'ख' (3 × 20 = 60 M)

सूचनाः निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही तीन के उत्तर विस्तार से लिखिए।

9. किन्ही दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

क) सुख के संगी स्वारथी, दुख में रहते दूर। **(Page No. 5, Q.No. 6)**
कहैं कबीर परमारथी, दुख सुख सदा हजुर ।।

ख) एक भरोसो एक बल , एक आस बिस्वास। । **(Page No. 12, Q.No. 3)**
एर राम घन स्याम हित , चातक तुलसीदास ।।

ग) जो कुछ पढ़ो तुम कार्य में भी साथ ही परिणत करो, **(Page No. 20, Q.No. 2)**
सब भक्तवर प्रह्लाद की निम्नोक्ति को मन में धरो --
''कौमार में ही भागवत धर्मचरण कर लो यहाँ''
नर -जन्म दुर्लभ और वह भी अधिक रहता है कहाँ ।।

घ) छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ, **(Page No. 27, Q.No. 2)**
फाड़ देता है किसी का वर वसन
प्यार-डूबी तितलियों का पर कतर,
भँवर का है भेद देता श्याम तन।।

10. किसी एक प्रश्न का उत्तर दिजिए।

क) नवयुवकों से **(Page No. 16, 21, कवित का सारांश)**

ख) भारत **(Page No. 32, 36, कवित का सारांश)**

ग) मेरा नया बचपन **(Page No. 38, 45, कवित का सारांश)**

11. किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए।

क) आदिकाल काव्य की रचनाओं की विवेचना कीजिए। **(Page No. 54, Q.No. 5)**

अथवा

ख) सगुण भक्ति काव्यधारा का सामान्य परिचय लिखिए। **(Page No. 85, Q.No. 8)**

12. किन्हीं दो कवियों पर टिप्पणी लिखिए ।

क) सुरदास **(Page No. 112)**

ख) तुलसीदास **(Page No. 113)**

ग) मैथिलीशरण गुप्त **(Page No. 116)**

घ) चंदबरदाई **(Page No. 110)**

13. क) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए।

क) विद्यार्थी और राजनीति **(Page No. 121, निबंध - 2)**

ख) आधुनिक शिक्षा और नारी **(Page No. 124, निबंध - 4)**

ग) साहित्य और समाज **(Page No. 119, निबंध - 1)**

ख) निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. Coconut water is sweet.

उत्तरः Zm[a¶b H$m nmZr ‘rRm hmVm h&

2. A scholar is respected every where.

उत्तरः {dÛmZ H$m gdì AmXa hmVm h&

3. A tree gives us shade.

उत्तरः dj /nS h‘| Nm¶m XVm h&

4. Discipline is the first step to success.

उत्तरः AZemgZ g’$bVm H$s nhbr grT>r h&

5. Do not pluck flowers.

उत्तरः ’$b ‘V VmS>m&

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT AND SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. and B.S.W

II Year III Semester (CBCS) Examination

Model Paper - II

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (5 × 4 = 20 M)

ANSWERS

सूचनाः निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. कवि ने गुरु और कुम्हार का उदाहरण किस उदेश्य से दिया है? **(Page No. 8, Q.No. 4)**
2. तुलसीदास ने साँप का उदाहरण देकर किस बात का स्पष्टीकरण किया है? **(Page No. 16, Q.No. 3)**
3. कवि नौजवानों को किसके हित में काम करने के लिए कह रहे हैं? **(Page No. 22, Q.No. 3)**
4. कवि ने काँटे और फूल में क्या अंतर बताया है? **(Page No. 29, Q.No. 1)**
5. आदिकाल के बारे में लिखिए। **(Page No. 48, Q.No. 1)**
6. भक्तिकाल कितने प्रकार की शाखाओं में विभक्त है? विवरण दीजिए। **(Page No. 69, Q.No. 4)**
7. साहित्य समाज का दर्पण है इस बात पर अपने विचार लिखिए । **(Page No. 119, निबंध - 1)**
8. विज्ञान का अर्थ व विशेषता लिखिए ? **(Page No. 123, निबंध - 3)**

खण्ड - 'ख' (3 × 20 = 60 M)

सूचनाः निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही तीन के उत्तर विस्तार से लिखिए ।

9. किन्ही दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए ।

क) मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारम्बार । **(Page No. 3, Q.No. 3)**
तरवर थैफल झड़ि पड़्या, बहुरि न लागै डार ।।

ख) राम नाम मनिदीप धरू, जीह देहरीं द्वार । **(Page No. 11, Q.No. 1)**
तुलसी भीतर बाहेरहुँ, जौं चाहसि उजियार ।।

ग) हे नवयुवाओं! देश भर की दृष्टि तुम पर ही लगी, **(Page No. 19, Q.No. 1)**
है मनुज जीवन की तुम्हीं में ज्योति सबसे जगमगी ।
दोगे न तुम तो कौन देगा योग देशोद्धार में?
देखो, कहाँ क्या हो रहा है आजकल संसार में ।।

घ) बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन, तेरी । **(Page No. 39, Q.No. 1)**
गया, ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी ।।
चिंता रहित खेलना-काना वह फिरना निर्भय स्वच्छन्न ।
कैसे भूला जा सकता है बचपन का अतुलित आनन्द ।।

10. किसी एक प्रश्न का उत्तर दिजिए ।

क) फूल और काँटा **(Page No. 24, 30, कवित का सारांश)**

ख) मेरा नया बचपन **(Page No. 38, 45, कवित का सारांश)**

ग) नव युवकों से **(Page No. 18, 21, कवित का सारांश)**

11. किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए ।

क) आदिकाल की परिस्थितियों के बारे में लिखिए । **(Page No. 51, Q.No. 3)**

अथवा

ख) निर्गुण भरत कावय-धारा का सामान्य परिचय दीजिए । **(Page No. 71, Q.No. 5)**

12. किन्हीं दो कवियों पर टिप्पणी लिखिए।

क) तुलसीदास **(Page No. 125)**

ख) कबीरदास **(Page No. 124)**

ग) मैथिलीशरण गुप्त **(Page No. 129)**

घ) रामधारी सिंह दिनकर **(Page No. 132)**

13. क) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए।

क) साहित्य और समाज **(Page No. 199, निबंध - 1)**

ख) विज्ञान वरदान है या अभिशाप **(Page No. 123, निबंध - 3)**

ग) जीवन में स्वच्छता का महत्व **(Page No. 128, निबंध - 6)**

ख) निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. Rama is an intelligent boy.

उत्तरः am‘ à{V^mdmZ bS>H$m h&

2. Milk is complete diet.

उत्तरः XY nU Amhma h&

3. Dog is a faithful animal.

उत्तरः H$Îmm B‘mZXma/d’$mXma OmZda h&

4. A tree gives us shade.

उत्तरः dj /nS> h‘| Nm¶m XVm h&

5. Time is precious.

उत्तरः g‘¶ ‘ë¶dmZ h&

FACULTIES OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT AND SOCIAL SCIENCE

B.A., B.Com., B.B.A., B.Sc. and B.S.W

II Year III Semester (CBCS) Examination

Model Paper - III

HINDI

(SECOND LANGUAGE)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 80**

खण्ड - 'क' (5 × 4 = 20 M)

ANSWERS

सूचनाः निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. मनुष्य जन्म दुर्लभ है, देह ना बारम्बार। इन पंक्तियों से कवि का क्या आशय है? **(Page No. 8, Q.No. 2)**
2. तुलसीदास जी को साहित्याकाश का सम्राट क्यों कहा जाता है? **(Page No. 16, Q.No. 4)**
3. फूल और काँटा कविता के माहथम से कवि क्या संदेश देना चाहते है? **(Page No. 30, Q.No. 4)**
4. कवयित्री ने अपने बचपन को किसके द्वारा अनुभव किया? **(Page No. 45, Q.No. 2)**
5. आदिकाल काव्य की रचनाओं की विवेचना कीजिए। **(Page No. 54, Q.No. 5)**
6. भक्तिकाल कितने प्रकार की शाखाओं में विभक्त है? विवरण दीजिए। **(Page No. 69, Q.No. 4)**
7. विद्यार्थी जीवन का राजनीति का महत्व लिखिए ? **(Page No. 121, निबंध - 2)**
8. जीवन में स्वच्छता का महत्व लिखिए ? **(Page No. 128, निबंध - 6)**

खण्ड - 'ख' (3 × 20 = 60 M)

सूचनाः निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही तीन के उत्तर विस्तार से लिखिए ।

9. किन्ही दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए ।

क) काल करे सो आज कर, आज करे सो अब । **(Page No. 4, Q.No. 5)**
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब ।।

ख) सूधे मन सूधे वचन, सूधी सब करतूति । **(Page No. 11, Q.No. 2)**
तुलसी सूधि सकल बिधि, रघुबर प्रेम प्रसूति ।।

ग) दो पथ, असंयम और संयम, हैं तुम्हें अब सब कहीं, **(Page No. 20, Q.No. 3)**
पहला अशुभ है, दूसरा शुभ है, इसे भूलो नहीं।
पर मन प्रथम की ओर ही तुमको झुकायेगा अभी,
यदि तुम न सँभलोगे अभी तो, फिर न सँभलोगे कभी ।।

घ) अहा, कौन यह वीर बाल निर्भीक है । **(Page No. 34, Q.No. 3)**
कहो भला भारतवासी! हो जानते,
यही 'भरत' वह बालक है, जिस नाम से
'भारत संज्ञा पड़ी इसी वर भूमि की ।।

10. किसी एक प्रश्न का उत्तर दिजिए ।

क) भारत **(Page No. 32, 36, कवित का सारांश)**

ख) नव युवकों स **(Page No. 18, 21, कवित का सारांश)**

ग) फूल और काँटा **(Page No. 24, 28, कवित का सारांश)**

11. किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए ।

क) पृथ्वीराज रासों और चंदबरदाई का परिचय लिखिए? **(Page No. 54, Q.No. 5)**

अथवा

ख) भक्तिकाल की शाखाओं का विवरण सविस्तार लिखिए ? **(Page No. 69, Q.No. 4)**

12. किन्हीं दो कवियों पर टिप्पणी लिखिए।

क) मैथिलीशरण गुप्त **(Page No. 116)**

ख) रामधारी सिंह दिनकर **(Page No. 117)**

ग) सूरदास **(Page No. 112)**

घ) तुलसीदास **(Page No. 113)**

13. क) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए।

क) साहित्य और समाज **(Page No. 119, निबंध - 1)**

ख) विद्यार्थी और राजनीति **(Page No. 121, निबंध - 2)**

ग) विज्ञान वरदान है या अभिशाप। **(Page No. 123, निबंध - 3)**

ख) निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. Peacock is beautiful bird

उत्तरः ‘ma gÝXa n j r h &

2. Good food, good health

उत्तरः AÀNm ^mOZ, AÀNm ñdmñÏ¶ &

3. Rama killed Ravana

उत्तरः am‘ Z amdU H$m ‘mam &

4. India is a democractic country

उत्तरः ^maV àOmVm{ÌH$ Xe h &

5. Shahjahan Built Tajmahal

उत्तरः emhOhm Z VmO‘hb ~Zm¶m &

FACULTY OF ARTS, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT AND SOCIAL SCIENCE

B.A, B.Com, B.B.A, B.Sc & B.S.W II Year, III - Semester Examination,

July - 2021

HINDI (Second Language)

Paper - III

Time : 2 Hours] [Max. Marks : 80

खण्ड - 'क'

ANSWERS

सूचनाः निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **(4 × 5 = 20 M)**

1. कबीर ने मनुष्य जन्म को दुर्लभ क्यों कहा है ? **(Page No. 8, Q.No. 2)**
2. तुलसीदास ने राजा और सूर्य को एक समान क्यों माना है? **(Page No. 12, Q.No. 5,** भावार्थ**)**
3. मैथिलीशरण गुप्त ने नवयुवकों को कौमार्य में क्या धारण करने के लिए कहा है ? **(Page No. 22, Q.No. 3)**
4. बालक के औध्दत्य को देख कर सिंहनी क्यों गरजने लगी? **(Page No. 36, Q.No. 2)**
5. सुभद्रा कुमारी चौहान ने बचपन को स्वर्णिम क्यों कहा है ? **(Page No. 46, Q.No. 4)**
6. आदिकाल की राजनीकिक परिस्थितियों का वर्णन कीजिए । (**Page No. 61, Q.No. 3)**
7. रामभक्ति शाखा की विशेषताएँ बताइए । **(Page No. 89, Q.No. 10)**
8. आधुनिक शिक्षा में नारी का स्थान बताइए । **(Page No. 124)**

खण्ड - 'ख'

सूचनाः निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए । **(3 × 20 = 60 M)**

9. **किन्हीं दो की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए** ।

   क) गुरू कुम्हार शिष कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट । **(Page No. 3, Q.No. 2)**
   अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ।।

   ख) एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास । **(Page No. 12, Q.No. 3)**
   एक राम घन स्याम हित, चातक तुलसीदास ।।

   ग) मेंह उन पर है बरसता एक - सा, **(Page No. 26, Q.No. 1)**
   एक-सी उन पर हवाएँ बही ।
   पर सदा ही यह दिखाता है समय,
   ढंग उनके एक - से होते नहीं ।।

घ) वही वीर यह बालक है दुष्यंत का (Page No. 35, Q.No. 5)
भारत का शिर-रत्न 'भरत' शुभ नाम है ।।

10. किसी **एक** कविता का सारांश लिखिए ।

(1) नवयुवकों से **(Page No. 18, कविता का सारांश)**

(2) फूल और काँटा **(Page No. 24, कविता का सारांश)**

(3) मेरा नया बचपन **(Page No. 38, कविता का सारांश)**

11. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए ।

(1) आदिकाल की प्रवत्तियों पर प्रकाश डालिए । **(Page No. 51, Q.No. 3)**

(अथवा)

(2) भक्तिकाल की विविध शखाओं का वर्णन कीजिए । **(Page No. 64, Q.No. 2)**

12. किन्हीं **दो** कवियों पर टिप्पणी लिखिए ।

(क) चंदबरदाई **(Page No. 110)**

(ख) सुमित्रानंदन पन्त **(Page No. 114)**

(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' **(Page No. 117)**

(घ) सूरदास **(Page No. 112)**

13. (क) किसी **एक** विषय पर निबन्ध लिखिए ।

1. विद्यार्थी और राजनीति **(Page No. 121, निबंध - 2)**
2. शिक्षा पर भूमंडलीकरण का प्रभाव **(Page No. 126, निबंध - 5)**
3. विज्ञान वरदान या अभिशाप **(Page No. 123, निबंध - 3)**

(ख) हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

1. I am studing - నేను చదువుతున్నాను.

उत्तरः मैं अध्ययन कर रहा हूँ ।

2. The train was late - రైలు ఆలస్యమైంది

उत्तरः ट्रेन लेट थी

3. Rohan lives in the village. - రోహన్ ఊరిలో ఉంటాడు

उत्तरः रोहन गांव में रहता है ।

4. Ananya made a video - అనన్య ఒక వీడియో తయారు చేసింది.

उत्तरः भाई ने बनाया वीडियो

5. Hindi is my mothertongue - హిందీ నా మాతృభాష.

उत्तरः हिंदी मेरीमातृभाषा है ।